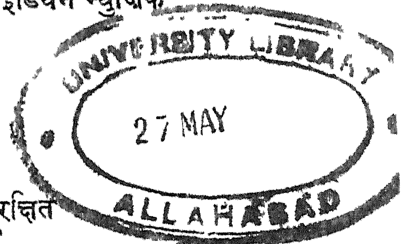
गुलदस्तए-नग़मात

(पहला गुलदस्ता)

जिसमें नई और पुरानी चाल के ख़याल, ठुमरियाँ, दादरे, होलियाँ, चैतियाँ, कजलियाँ, लावनियाँ, ग़ज़लें, सुन्दर कविता और बन्दिश की निहायत आसान और सरल नोटेशन में, हर गाने, पीछे पाँच-पाँच ख़ूबसूरत तानें, आलाप और गाने का तरीक़ा दिया गया है।

लेखक

प्रोफ़ेसर बड़े आग़ा साहब
भातखंडे-युनिवर्सिटी ऑफ़ इंडियन म्युज़िक
लखनऊ



प्रथमावृत्ति १०००] संवत् १९९७ वि० [मूल्य २)

प्रकाशक

प्रोफ़ेसर बड़े आग़ा साहब

भातखंडे-युनिवर्सिटी ऑफ़् इंडियन म्युज़िक

लखनऊ



मुद्रक

श्रीदुलारेलाल

अध्यक्ष गंगा-फ़ाइनआर्ट-प्रेस

लखनऊ

शुद्धि-पत्र

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ नं	पंक्ति
१. तमाम आमदनी का	तमाम आमदनी को	६	७
२. भारा भर्तम्	भारी भकम	१८	१३
३. और रे समवादी	और स समवादी	२६	६
४. छोटी	छोटे	३४	५
५. करका	करकी	३५	७
६. पम	पम	३८	३
७. आरोही पनी	आरोही पनी	४१	६
८. अवरोही सनि	अवरोही संनि	४१	६
९. गं रें स —	गं रें सं —	४३	७
१०. गरे संनि	गंरें संनि	४६	१
११. निस निध	निसं निध	४६	११
१२. रेंगंरें	रेंगंरें	५६	८
१३. रसं निध	रें सं निध	६३	६
१४. सनि धप	संनि धप	७४	२
१५. रें गं	रें गं	७४	७

× ×

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ नं	पंक्ति
१६. र न ऽ	र ऽ नि	७७	५
१७. अति	अत	८३	६
१८. निस रेस	निसं रेसं	९८	४
१९. सं सं नि | ध	स नि | ध	९३	८
२०. रेग सरे रेस	रेग रेस रेस	९६	५
२१. सरे गरे ... नि ध प रे	स रे ग रे ... धप मग रे	९६	१२
२२. म प ध म ग रे	प ध नी म ग	१००	६
२३. म---	ध---	११२	२
२४. धम मग	धम गम	११६	४
२५. धनी संरें	धनी सरे	१२०	२
२६. पध निध	पध निध	१३१	१
२७. स नि	सं नि	१३२	७
२८. 'विषय'	'विषम'	१३७	५
२९. | स रे स नि |	| स रे स नि |	१४४	१

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ नं	पंक्ति
३०. रेनि	रेनि	१५२	१
३१. गरे तान	ग रे की तान	१५४	६
३२. धनी संरं ·· मम मग	धनी संरं ··· मम मग	१५७	५
३३. संनि	सनि	१६१	३
३४. पतर	परत	१६३	३
३५. प	प	१६४	४
३६. निप	निप	१६४	६
३७. मो रा	मु र	१६६	२
३८. गाधार	गंधार	१७०	२
३६. धनी धप	धनी धपं	१७२	५
४०. निध	निध	१७३	१
४१. रे समवादी	स समवादी	१७६	६
४२. निसं	निस	२१५	१
४३. मि न	मन	२२३	६
४४. पमन वाद है।	यमन के बाद है।	२३७	७
४५. पऽ अन् खा	पऽ न ख़	२३८	६

अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ नं	पंक्ति
४६. अप	आप	२३५	३
४७. पर	पा	२५५	३
४८. एरी बंगरी मोही	एरी बंगरी मोरी	२५१	१
४९. धनी धप	धनी धप	२५२	१०
५०. निसरे	निसरे	२५४	६
५१. सनि	सनि	२५४	११

सूची

अ पृष्ठ



१. स्वर्गीय प्रिन्स सआदतअलीख़ाँ (नवाब छम्मन साहब)
२. ,, पं० वी० एन्० भातखंडे बी० ए०, एल्-एल्० बी० वकील
३. ,, उस्ताद मुहम्मदअलीख़ाँ औलाद मियाँ तानसेन
४. 'बड़े आग़ा' साहब प्रोफ़ेसर भातखंडे युनिवर्सिटी
५. स्वर्गीय ऑनरेबुल राजा मु० नवाबअलीख़ाँ, अकबरपुर-स्टेट

गुज़रे हुओं की याद

ज़माने-चमन गुल खिलाती है क्या-क्या,
बदलता है रंग आसमाँ कैसे-कैसे।

आनरेबुल राजा मुहम्मद नवाबअलीख़ाँ साहब मरहूम

राजा साहब मौसूफ़ से मुझे उस वक़्त नेयाज़ हासिल हुआ, जब कि मेरा सिन तक़रीबन १५ बरस का था; उस वक़्त राजा साहब का सिन मेरे ख़याल में ३० या ३५ बरस से ज़ायद न था। राजा साहब का इंतक़ाल ६० या ६५ की उमर में हुआ, इस वक़्त मेरी उमर ५० और ५५ के दरमियान है। अन्दाज़न मेरा और राजा साहब का साथ ३० या ३५ बरस तक रहा। इस अरसे में ३½ बरस जब कि मैं रामपुर में था और नवाब छम्मन साहब से इल्मे-मौसीक़ी हासिल कर रहा था, और ३½ बरस का मेरा वह ज़माना, जो योरप की सैर वो सियाहत में गुज़रा, निकालकर माबक़ी तमाम वक़्त मेरा राजा साहब मौसूफ़ ही की सोहबत में गुज़रा। राजा साहब ने न सिर्फ़ दिन में दो-दो और तीन-तीन मरतबे घन्टे-दो घंटे सुबह और घन्टा-दो घन्टा शाम या रात ही के वक़्त मुझको बताने में सर्फ़ किये, बल्कि अपने पास से रुपया ख़र्च करके और उस्तादाने-फ़न से भी मुझको गाना बतलवाया। उस्ताद

छोटे मुन्नेख़ाँ मरहूम के नाम तो उन्होंने एक ख़ास रक़म मुक़र्रर कर दी थी, जो उनकी ज़िन्दगी तक उनको मिलती रही। अलग़रज़ राजा साहब की हस्ती दुनियाए-मौसीक़ी में एक बेनज़ीर हस्ती थी। मुझको इस क़िस्म के दिल वो दिमाग़ के लोग जैसा कि राजा साहब का दिल था जो कि बवजह नेरमिये इस्तेमाल नग़माहाय मौसीक़ी एक ख़ास सिदाक़ताना और मुख़लिसाना रंग में रँग गया था, अब नहीं दिखाई पड़ता। यों तो फ़ने-मौसीक़ी पर बहुत लोग मेहनत वो मशक़्क़त करते हैं और कुछ अरसे में एक हद तक इसमें महारत भी हासिल कर लेते हैं; मगर राजा साहब की तरक़्क़ी की वजह इनकी पाकीज़गीए-तबियत और तेज जहानत थी। उनका दिमाग़ फ़ने मुसीक़ी की मुश्किल से मुश्किल गुत्थियों तक को बहुत जल्द सुलझा लेता था। यह बात मैंने बहुत कम लोगों में देखी है। वह मिस्ल और बहुत से शौक़ीनों के आम जलसाहाए-मुसीक़ी में गाते न थे मगर ख़ुद अपने मकान पर सुबह से लेकर रात के एक-दो बजे तक शुरफ़ाए-शहर और कामिलीने फ़न का अच्छा-ख़ासा मजमा रहता। गवैये और साज़िन्दे दूर-दूर से सोहबत में आकर शरीक होते यह कहके कि राजा साहब का बड़ा नाम सुना है और हमको इश्तियाक़ यहाँ तक खींच लाया। इन लोगों से राजा साहब बहुत अच्छी तरह पेशआते और हस्बे-हैसियत सुलूक भी करते। राजा साहब बेहतरीन हारमोनियम बजाते थे। राजा साहब मौसूफ़ ने

सबसे पेश्तर उस्ताद कालेखाँ, लाहौरवाले से गाना सीखा। उस्ताद कालेख़ाँ एक लहीम वो शहीम पंजाबी गवैए थे। यह जब गा चुकने, तो अक्सर जाननेवाले पूछते कि उस्ताद, यह क्या आपने मलार गाई थी? उस्ताद जवाब देते—हाँ, मलार और बहुत सही मलार। इससे यह गुमान होता था कि उस्ताद ने बहुत-से लोगों को मलार गाते सुना होगा और उन लोगों से ग़ल्तियाँ भी हुई होंगी। इसके बाद राजा साहब ने उस्ताद नज़ीरख़ाँ मुरादाबादवाले से भी गाना सीखा। उस्ताद-नज़ीरख़ाँ बड़े ऊँचे गवैयों में से थे। राजा साहब की सोहबत में बैठनेवालों के नाम यह हैं—उस्ताद बड़े मुन्नेख़ाँ मरहूम, उस्ताद छोटे मुन्नेख़ाँ मरहूम, महाराज कालका बिन्दादीन मरहूम, उस्ताद सादिक़अलीख़ाँ मरहूम, उस्ताद दूल्हेख़ाँ मरहूम, बाक़रहुसैन मरहूम, बच्छनख़ाँ मरहूम, नसीरख़ाँ, नसीरख़ाँ हैदराबादवाले वग़ैरा राजा साहब की सोहबत में मीर मेंहदीहुसैन मरहूम, सोज़ख़ान मीर सज्जादहुसैन सोज़ख़ान मरहूम, मीर अच्छेसाहब, नादिर साहब हाल मुलाज़िम हुगली इमामबाड़ा, मीर मनभूसाहब सोज़ख़ान हाल मुलाज़िम दरबार रामपुर। हमने मीर मनभूसाहब से एक अरसे तक सोज़ख़ानी सीखी है। मीर ज़िन्दे रज़ा वग़ैरा और शुरफ़ाए-शहर राजा साहब गोकि नीची आवाज़ में गाते थे, मगर किसी गवैयेकी तान मुरकी या कैसी ही मुश्किल तरकीब हो, उसको निहायत ही आसानी से कापी कर लेते थे। उस्ताद छोटे मुन्नेख़ाँ मरहूम

की तानें ऐसी पेंचदार हुआ करती थीं कि उनको सुनकर निकाल लेना ज़रा दिल्लगीबाज़ी न था। मगर राजा साहब शायद ही किसी तान की बाबत कहते हों कि उस्ताद फिर से कहिएगा। अफ़सोस है कि इस मुख़्तसर बयान में हम पूरे तौर पर राजा साहब के रंगे-तबियत को नहीं दिखा सकते और इस कहने पर इकतिफ़ा करते हैं कि कोई मौक़ा हमारी नज़र से ऐसा नहीं गुज़रा कि जहाँ किसी बेहतरीन से बेह-तरीन गानेवाले ने अपने गाने में ऐसी कोई बात दिखाई हो, जिसके समझने और बाजे में निकाल लेने से राजा साहब क़ासिर रह गये हों। दिल्लगीबाज़ी नहीं थी कि कोई इनके सामने ऐसी कोई बात कर जाय कि जो मुसीक़ी के मैदान के बाहर हो और राजा साहब मुँह न बनाएँ। भैया साहब गनपतराव बेहतरीन बाजा बजाते थे, मगर जब राजा साहब का सामना होता, ज्यादातर बीमारी का उज़्र पेश किया करते और राजा साहब के सामने बाजा खिसका दिया करते। राजा साहब ने ८ बरस तक सितार बजाया और बहुत अच्छा बजाया, मगर उस्ताद इमदादख़ाँ और बरकत-उल्ला का सितार सुनकर बजाना छोड़ दिया। राजा साहब ने कलाई पर छाले तक ले लिये थे ताकि हाथ वैसे ही टेढ़ा हो जावे, जैसा कि इन दोनो सितार बजानेवालों का था। आख़िर में यह कहकर छोड़ दिया कि जो बरकतउल्ला और इमदाद-ख़ाँ की तरह सितार न बजा, तो बेकार है। राजा साहब ..

अलावा ध्रुवपद, धमार और सादरे के ख़याल, ठुमरी, दादरा, टप्पा, लावनी, चैती, ग़ज़ल ग़रज़ के गाने के हरएक रंग से वाक़िफ़ थे, और बरता करते थे। जिस क़िस्म के गाने हमने इस किताब में दिए हैं, वह इनको बाजे पर बड़े मजे में बजाते थे। तीन किताबें मारिफ़ुन्नग़मात के नाम से छपी हुई हैं, बाक़ी तसनिफ़ात नामुकम्मल रह गए बवजह राजा साहब के इंतक़ाल के। "मिटे नामियों के निशा कैसे-कैसे"

साहबज़ादा प्रिन्स नवाब सआदतअलीख़ाँ नवाब छम्मन साहब मरहूम रईस बिलसी।

मेरे इसरार पर कि राजा साहब, आप गर्मी के ज़माने में पहाड़ पर चले जाते हैं या तो मुझको भी अपनी हमराही में ले चलिये या मुझको रामपुर ले चलकर नवाब छम्मन साहब का शागिर्द करा दीजिये। राजा नवाबअलीख़ाँ साहब मरहूम ने इस बात पर रज़ामंदी ज़ाहिर की। ग़ालिबन इसकी यह वजह थी कि उनको नवाब छम्मन साहब की होरी, ध्रुपदों की ज़रूरत थी और चूँकि रौशनबाग़ में उस्ताद मोहम्मदअलीख़ाँ साहब मियाँ तानसेन के ख़ानदान के दधियाली रिश्ते की तरफ़ से अख़ीरी मेम्बर रहते थे। राजा साहब का यह ख़याल हुआ कि मैं उस्ताद से भी सीखूँगा। पस, अपने हमराह ले जाकर मुझको नवाब छम्मन साहब का शागिर्द करा दिया। मैंने नवाब छम्मन साहब मरहूम से साढ़े तीन बरस गाना सीखा और इस असना में उस्ताद मुहम्मदअलीख़ाँ से भी ख़ूब-

ख़ूब सीखा। चुनाँचे नवाब छम्मन साहब के इन्तक़ाल के बाद जब उस्ताद मुहम्मदअलीख़ाँ का लखनऊ में क़याम हुआ और राजा साहब के वहाँ आए, तो राजा साहब ने मारिफ़ुन्नग़मात हिस्सा २ को शुरू किया। उस्ताद से जब चीज़ें लिखाने को कहा, तो उस्ताद ने कहा कि मैंने बहुत-सी चीज़ें आग़ा साहब को बता दी हैं और मेरी याददाश्त अब बवजह ज़ईफ़ी काम नहीं करती। चुनाँचे हम मैरिस कालेज से बुलाये गये और गवाये गये। मारिफ़ुन्नग़मात हिस्सा २ में जो-जो ध्रुवपदें और धमारें दी हुई हैं, उस्ताद मुहम्मद-अलीख़ाँ के नाम से वह सब हमारी ही लिखाई हुई हैं। ब-तसदीक़ उस्ताद मुहम्मदअलीख़ाँ मरहूम। नवाब छम्मन साहब मरहूम-सा आलो दिमाग़ इन्सान न उन्हीं के ज़माने में था और न अब मुमकिन है। उनको एक हज़ार ध्रुवपद और धमार नौके-ज़बान थे। अगर किसी ने उनके सामने किसी मुश्किल राग का नाम ले लिया, तो १५ या २० ध्रुपद-धमारें उस राग की सुना दीं, जो मुख़्तलिफ़ तरीक़ों पर बँधी हुई होतीं और अगर किसी आसान राग का नाम ले लिया, तो ५० और ५५। ग़रज़ कि एक ही राग का बयान ६ बजे रात से लेकर २ बजे रात तक ख़तम न होता। यही वजह थी कि नवाब छम्मन साहब ने उस्ताद वज़ीरख़ाँ को, जोकि नवाब साहब मरहूम रामपुर के उस्ताद थे, न माना। वह कहते थे कि इनको तो मेरे बाप ने छुटपने से बताया है। इस क़िस्म की झंझटें

दरबारे-रामपुर में बराबर रहते। उस्ताद वज़ीरख़ाँ मरहूम बेहतरीन बीनकार थे और कहकर रुलाते थे। नवाब छम्मन साहब अलावा इस याददाश्त के, जो ऊपर बयान हुई, सुर-सिंगार भी बेहतरीन बजाते थे। हाथ निहायत सुर में था, और राग की आलाप नपी-तुली हुई साथ उन क़वायद के, जो कि ख़ानदानी तरीक़े पर नायकों में नस्लन-बादे-नस्लन चले आ रहे हैं। आजकल इस साज़ का नाम ही नाम है, क़वायद का क्या ज़िक्र। नवाब छम्मन साहब के ज़माने में कामिलीन का गुट्ट, जिसमें बैठकर नवाब छम्मन साहब सुर-सिंगार बजाते थे, वह यह है—

भैया गनपतराव मरहूम, राजा नवाबअलीख़ाँ साहब मरहूम, बड़ी गौहर कलकत्तेवाली मरहूम, उस्ताद मुईज़ुद्दीन ख़ान मरहूम, ज़ोहराबाई मरहूम, उस्ताद मुहम्मदअलीख़ाँ मरहूम, दूल्हेख़ाँ मरहूम और दरबारे-रामपुर के बड़े-बड़े उस्तादाने-फ़न वग़ैरा। हमारे ज़माने में डाक्टर नातु और उस्ताद नज़ीरख़ाँ के दोनों साहबज़ादे हमारे साथ नवाब छम्मन साहब से गाना सीखते थे। नवाब छम्मन साहब मरहूम, राजा नवाबअली ख़ान मरहूम और पंडित भातखंडे मरहूम, नवाब साहब बहादुर मरहूम वालीए-रियासत रामपुर के शागिर्द थे। हम इन तीनों आदमियों के शागिर्द हैं और नवाब छम्मन साहब के गन्डाबन्द शागिर्द हैं। इन्हीं चार आदमियों का गुट्ट था, जिसने सन १६ से हिन्दोस्तान के दुनियाए-मुसीक़ी में एक बिजली-सी

दौड़ा दी। जिसका नतीजा हिन्दोस्तान की म्युज़िक कान्फ्रेंसें और मुख़्तलिफ़ गाने की दर्सगाहें हम आजकल देखते हैं। मैरिस कालेज का तख़य्युल भी यहीं से शुरू होता है। नवाब छम्मन साहब मरहूम ने अपने साहबज़ादे नवाब नन्धा साहब को भी गाना बताया था और वह ख़ूब गाते थे। अफ़सोस कि इनका भी इन्तक़ाल नवाब छम्मन साहब की ज़िन्दगी ही में विलायत में हुआ। नवाब छम्मन साहब के मरने के दिन नहीं थे और वह राजा नवाबअलीख़ाँ मरहूम की तरह ख़ूब टाँठे थे और राजा साहब से ज़्यादा सुर्ख़ व सफ़ेद थे। अब ऐसी हस्तियाँ कहाँ? आप एक निहायत जामे-किताब इल्मे-मुसीक़ी पर लिख रहे थे। मगर अफ़सोस कि यह तकमील को न पहुँच सकी। ज़िन्दगी ने वफ़ा न की। ख़ुदा बख़्शे बहुत सी ख़ूबियाँ थीं मरनेवालों में। अब आपके बिरादर नवाब जानी साहब रामपुर में सरकार के साथ हैं। गाने में निहायत क़ाबिल हैं और आपकी एक तसनीफ़ भी नग़मातुलहिन्द के नाम से है। गाना-बजाना बवजह सिक़ल समाआत छोड़ दिया है।

उस्ताद मुहम्मदअलीख़ाँ साहब मरहूम

जैसे कि मैं पेश्तर कह चुका हूँ उस्ताद से मैंने रौशनबाग़ में डाक्टर नाटु मरहूम के साथ ३½ बरस तक गाना सीखा। उस्ताद मुहम्मदअलीख़ाँ की तबीयत और तर्ज़े-रहाईश बिलकुल फ़क़ीराना था। मैंने देखा है कि अक्सर भैया गनपतराव अपने ज़मानाए-क़यामे रौशनबाग़ में कुछ अपने साथियों को लेकर उस्ताद

मुहम्मदअलीखाँ की क़यामगाह, जो थोड़े फ़ासिले पर रोशन-बाग़ ही में थी, खाना खाने के बाद चले जाते। वहाँ आपस में खूब गाने-बजाने होते और सब मिलके अपने ज़िन्दगी के गुज़रे हुए वाक़यात को याद करके खूब-खूब रोते। यह अजीब जलसा होता। उस्ताद मुहम्मदअलीखाँ को गो दरबारे-रामपुर से और नवाब छम्मन साहब से माक़ूल आमदनी थी, मगर वह इस तमाम आमदनी का या तो दोस्तों में उड़ा देते या फ़क़ीरों के हवाले कर देते। उनके पीछे बहुत से हक़दार और खुफ़िया उम्मेदवार लगे हुए थे। उस्ताद ने एक लड़की को पाला था, जिसकी शादी कर दी थी और उसके एक लड़की भी थी याने शोकतअली उर्फ़ मन्नू साकिन कलकत्ता की हमशीरा। उस्ताद को उसकी शादी की तलाश थी। लोगों ने मज़ाक़न् यह उड़ाई कि अगर किसी शरीफ़ के साथ शादी हो जाय तो अच्छा है। उस्ताद का दिल ज़रूरत से ज़्यादा नरम था और इनका रुपया लोग बातें बनाकर ले लिया करते थे। उस्ताद में जो खास सिफ़त थी वह सिर्फ़ यही नहीं थी कि उनको सैकड़ों ध्रुपद और धमार याद थे, बल्कि जब कभी उनको नौकरी की ज़रूरत पड़ती और मुसीबत का सामना होता, तो किसी रजवाड़े में चले जाते और वहाँ के राजा को अपना रबाब सुनाते थे। राजा फ़ौरन से पेश्तर इनके खानदानी हालात सुनकर कि वह मियाँ तानसेन के दधियाली रिश्ते से आख़िरी मेम्बर हैं और उनकी वसीय मालूमात और सब पर

तुर्रा यह कि रबाब जिसका बजाना हिंदोस्तान में किसी को आता ही नहीं। बजाना तो दरकिनार, लोगों को यह तक नहीं मालूम कि आया रबाब पर तार चढ़ाये जाते हैं या रोदा; रबाब पर न तार चढ़ाए जाते हैं, न रोदा, बल्कि हाथ से बटकर रेशम के तार चढ़ाये जाते हैं। उस्ताद अक्सर सूत की रस्सी बटा करते थे और उसके बटने का उनको एक ख़ास तरीक़ा मालूम था, जिसकी अक्सर वह मश्क़ किया करते थे। रबाब का बाज यों समझिये कि जैसे पखावजें सा रे ग म प ध नि स में मिली हुई हों और इनमें राग का आलाप बज रहा हो। अफ़सोस है कि आजकल न तो यह बाजा दिखाई देता है और न कोई उसको बजाना जानता है और अगर किसी ने इस पर लोहे या पीतल के तार चढ़ाकर जवे से बजाया भी, तो रबाब के बाज की वह छाईं तक न होगी। उस्ताद का यह क़ायदा था कि एक-आध मरतबा रईस के सामने रबाब बजाया और मकान आकर फ़ौरन् दूसरे ही दिन चमड़ा और तार अलग किया हुआ कोने में रक्खा है। अगर किसी ने इसरार भी किया कि मैं बग़ैर रबाब सुने हुए न जाऊंगा, तो उस्ताद यह कह देते—अच्छा, दो-चार दिन में खाल चढ़ाकर सुना दूँगा और इसी तौर पर टालते रहते। अगर इस पर भी किसी ने न माना और उस्ताद के पीछे ही पड़ गया, तो उस्ताद एक दिन नीले-पीले दीदे दिखाकर यह कहते कि रबाब भी क्या कोई सारंगी

या सरोद है कि उसको जब जी चाहे सुन लो। यह बाजा सिर्फ़ उसी को सुनाया जा सकता है, जिसने अगले ज़माने की सोहबतें उठाई हैं, उन लोगों को सुना है, और गाने-बजाने के मुक़ाबले में रुपये को ज़रा भी परवाह नहीं की। क्या तुम इतने क़द्र-दान हो कि मुझको ५०० रुपये महीना साल-भर तक देते रहो। ५०० रुपये महीना तो ख़ाली नामचार को आज़माइश है, वरना अगर ख़ुदा ने तुमको रुपया दिया भी है, तो इतनी बड़ी दुनिया पड़ी हुई है। सैर करो, तमाशा देखो और मेरा पीछा छोड़ दो। तुम्हें रबाब सुनाने में मेरा दिल नहीं लगेगा। लोग इन बातों को सुनकर ख़ामोश हो जाते। उस्ताद के मुताल्लिक़ यह मशहूर है कि एक मरतबे आपका गयाजी में गुज़र हुआ। आपका नाम सुनकर वहाँ के लोग उस्ताद के पास आते और उस्ताद के मालूमात से फ़ायदा उठाते थे। इस दुनिया में मुख्तलिफ़ क़िस्म की तबाये के लोग हैं। कुछ लोगों ने कहा कि अगर वाक़ई जैसे कि आप कहा करते हैं कि आप मियाँ तानसेन के ख़ानदान से हैं, तो हमको यक़ीन है कि आपको दीपक-राग भी आता होगा। क्योंकि मशहूर है कि अकबर बादशाह के ज़माने में मियाँ तानसेन ने दीपक राग गाया और इसके ज़रिये से आग लग गई। उस्ताद मुहम्मदअली ख़ान यह बात सुनकर अपने फ़क़ीराना अन्दाज़ में इन लोगों को समझाया कि बाबा, अब वो लोग कहाँ और लोगों में अगली सी सचाई कहाँ वग़ैरा-वग़ैरा जैसा कि ऐसे मौक़े पर बहुत से

और भी उस्ताद कहा करते हैं। मगर लोगों ने कुछ ऐसी आड़ी-तिरछी बातें कीं कि उस्ताद को गुस्सा आ गया। वादा किया कि शाम को मन्दिर में मिलना। यह कहकर लोगों को टाल दिया। कुछ लोग शाम के वक्त मन्दिर में पहुँचे। देखा तो उस्ताद मूर्ति के सामने बैठे हुए रबाब मिला रहे हैं। लोग एक तरफ़ को बैठ गये। कुछ देर उस्ताद ने बजाया होगा कि लोगों को मन्दिर में बहुत ज्यादा गरमी महसूस होने लगी। उस्ताद के रबाब की तरफ़ जब नज़र गई, तो डाँड जल रही थी और उस्ताद पसीने-पसीने हो गये थे। मन्दिरवालों ने बहुत मिन्नत-समाजत के बाद रबाब को उस्ताद से ले लिया और यह अभी तक उसी मन्दिर में रक्खा हुआ है और इसकी डाँड जली हुई है। हमारा ऐनी मुशाहिदा है कि दीवाली की रात को उस्ताद ज़मीन लीपते। कुछ लोबान वग़ैरा सुलगाते। रबाब तो एक कोने में खुला पड़ा हुआ था, मगर सुरसिंगार लेकर चौके में बैठ जाते और यह ध्रुपद बजाते। रसान-रसान गले से भी कहते जाते—ध्रुपद—"सरस्वती से माँगत हूँ विद्या अधिक सिरस निरतन कीजे, सब जगत के गुनियन तें दीजे बर। अंतरा—साँचे सुरन और राग सिहत बकस दीजे हे देवी दया-दयानी अपनी कर।" इसकी आरोही-अवरोही यह है—सा ग म ध़ नि सं—सं नि ध प मं ग रे़ स। यह ध्रुपद हमको बाबा ने गुजरी तोड़ी में बताया है, जो राजा साहब की किताब में दर्ज है। बाबा सबको बाबा कहकर पुकारा करते थे और सब लोग

भी उनको बाबा ही कहते थे –आख़िरी वक्त में उस्ताद का इन्तक़ाल रियासत गिधौर में हुआ और यह मुअम्मा यों ही राज़-सरबस्ता रहा—बक़ौल किसी अँगरेज़ी शायर के—"समन्दर की तारीक तहों में लखूखा क़िस्म के क़ीमती जवाहिरात के ख़ज़ाने हैं और आबादी से दूर जंगलों में सैकड़ों क़िस्म के फूल खिलते हैं। मगर यह सब अपनी हस्ती को हवा में फ़ना कर देते हैं और किसी को कानोंकान ख़बर तक नहीं होती।"

पंडित विष्णुनारायण भातखंडे मरहूम

आप बम्बई के वकला में से एक निहायत क़ाबिल वकील थे और साथ ही साथ इल्मे-मुसीकी का भी आपको इश्क़ था बड़े यारबाश और नेक तबीयत। आपने अपना ज़्यादातर ज़माना वकालत के कामों से फ़ुरसत पाने के बाद इल्मे-मुसीकी की किताबों की वर्क़ गरदानी और इस इल्म की छान-बीन में सर्फ़ किया। अच्छे-अच्छे उस्तादों से सीखा और कामिलीने-फ़न को ख़ूब-ख़ूब सुना। आप महाराष्ट्र क़ौम के थे और विष्णु दिगम्बरजी भी इसी क़ौम के थे। विष्णु दिगम्बरजी ने भी गाने को बहुत तरक्की दी, मगर ज़्यादातर अमली उसूलों पर पंडितजी के कारनामों में इनका इल्मी और अमली उसूल जिसके ज़रिए से इन्होंने इस फ़न को तरक़्क़ी दी, यह ज़्यादा है। लिहाज़ा बहुत दिनों तक क़ायम रहेगा। आप जबकि एक साल मथुरा के तीर्थ को गए हुए थे, तो वहाँ आपको कुछ संस्कृत की किताबें दस्तयाब हुईं। इनका भी पंडितजी ने ख़ूब मुताला किया और

बाद को शाया भी करा दीं। पंडितजी ने कुछ ज़माने तक सितार भी बजाया। आपने राजाओं और नवाबों से दोस्ती की, जिनके कुतुबख़ानों में मुसीकी की किताबों का अच्छा-ख़ासा ज़ख़ीरा था। जहाँ तक मुमकिन हो सका, वहाँ तक पंडितजी ने इस क़िस्म की बहुत-सी किताबें हासिल भी कीं और उनको शाया भी कराया। आपकी रसाई दरबारे-रामपुर में जो कि अपनी पिछली रिवायात की बिना पर बहुत ज़्यादा मशहूर रहा है, राजा नवाबअलीख़ाँ साहब मरहूम और नवाब छम्मन साहब मरहूम की दोस्ती की विसातत से हुई। हमसे और पंडितजी से बाक़ायदा मुलाक़ात और सिलसिलावार बैठने-उठने की राहोरस्म सन् १९२६ ई० से शुरू होती है। यह वह ज़माना था, जब कि चौथी ऑल इंडिया म्युज़िक कानफ़रेन्स हो चुकी थी और मैरिस कालेज ऑफ़ हिंदुस्तानी म्युज़िक तोपवाली कोठी में खुल चुका था। हिन्दोस्तान की दुनियाए-मुसीकी में हमाहमी और जोश-ख़रोश सन् १९१६ ई० से शुरू हुआ। इसी सन् में पहली आल इंडिया म्युज़िक कानफ़रेन्स बड़ौदा में हिज़ हाइनेस नवाब साहब बहादुर मरहूम रियासत रामपुर, उस्ताद मुअज़्ज़म राजा नवाबअलीख़ाँ मरहूम, उस्ताद मुअज़्ज़म नवाब छम्मन साहब मरहूम और महाराजा बड़ौदा मरहूम बताईद पंडित वी० एन० भातखंडे मरहूम हुई। इन्हीं हज़रात की कोशिश थी, जिसका नतीजा आज यह है कि इल्मे-मुसीकी रफ़्ता-रफ़्ता तालीमयाफ़्ता तबक़े में फैलता जा

रहा है। कॉलेज के खोलने में ज़्यादातर आसानी इस वजह से और हुई कि सन् १९२६ में राय राजेश्वरबली साहब ताल्लुक़दार दरियाबाद एजूकेशन मिनिस्टर थे और उस ज़माने के गवर्नर सर लार्ड मैरिस मेहरबान थे। हिन्दू-मुसलमानों ने ख़ूब चन्दा दिया। पहले हिज़ हाइनेस मरहूम नवाब साहब रामपुर ने प्रेसिडेंटशिप का वादा किया। बाद को अलालत का उज़्र किया। सर लार्ड मैरिस गवर्नर यू० पी० सदर मुक़र्रर किये गये। कॉलेज खोला गया और हमको सिलसिलेवार पंडितजी की सोहबत में शरीक होने का मौक़ा मिला। पंडितजी हर साल कॉलेज आते और बहुत अच्छे-ख़ासे ज़माने तक कॉलेज में क़याम करते। इनका जोश यहाँ तक बढ़ा हुआ था कि कुछ ज़माने के वास्ते क्लासों तक को तालीम दी। मगर ज़ईफ़ुल-उमरी और लखनऊ की ज़्यादा गर्मी और ज़्यादा सर्दी का तहम्मुल पंडितजी से न हो सकता था और कुछ अरसा यहाँ क़याम करने के बाद बम्बई चले जाया करते थे। इसी अरसे में हमने पंडितजी से गाना भी सीखा और सिलसिलेवार इनकी बातें इल्मे-मुसीकी के बाबत भी सुनते रहे। पंडितजी बड़ी अच्छी तबियत के आदमी थे। इनकी आवाज़ ध्रुवपद और धमार गाने के क़ाबिल थी। रंगीन गाने का असर भी पंडितजी की तबियत पर पड़ता था। अच्छे गलों की तारीफ़ इन्होंने अक्सर अपनी तसनीफ़ात में की है। राय उमानाथबली साहब की हस्ती पंडितजी के

बाद एक वाहिद हस्ती है, जो मैरिस कॉलेज को सँभाले हुए है। अब यह युनिवर्सिटी हो गया है। पंडितजी से हमने ठुमरी और दादरा भी सीखे; बल्कि हमारी चीज़ों को सुनकर खुद पंडितजी कहा करते थे कि ये चीज़ें तो बड़े मज़े की हैं। आप इन सबका नोटेशन करके छपवा दीजिये। पंडितजी ने कुछ ज़माने तक बम्बई के स्कूल में अक्सर लोगों को गाने की तालीम भी दी। उनकी संस्कृत की आला लियाक़त और पुराने ग्रन्थों की छान-बीन और उसको देशी ज़बान में लाकर इस उनवान से पेश करना कि आम लोगों की समझ में आ जाय। इन सब बातों के अलावा पंडितजी में एक ख़ास बात थी, जिसको बहुत कम लोग समझेंगे। पंडितजी की तबियत क़ुदरती तौर पर शायराना थी। यह बात हासिल करने से इन्सानों में नहीं पैदा होती। पंडितजी में यह बात क़ुदरती थी, जो-जो लक्षणगीत उन्होंने बाँधे हैं, अगर इनको बाक़ायदा गाया जाय, तो पंडितजी की क़ुदरती तबियत का ठीक ठीक पता चल सकता है। पंडितजी अपने बाद इतने शागिर्द तो न छोड़ जा सके कि जितने शागिर्दों को विष्णु दिगम्बरजी छोड़कर गुज़र गए; मगर वह गाने का इतना मसाला छोड़ गए हैं कि अगर गानेवाले लोग इस मसाले पर ग़ौर और फ़िक्र करें, तो बहुत ज़माने के वास्ते यह काफ़ी है। इबारत के ज़रिए से तो पंडितजी ने जहाँ तक मुमकिन हुआ, वहाँ तक गाने की एक-एक बात की ख़ूब ही छान-बीन की है। मगर

हमारा ख़याल है कि इस क़िस्म के गाने, जो रोज़मर्रा आपस में गाए जाते हैं, इनकी तरफ़ पंडितजी की तवज्जुह बहुत ही कम रही। क्योंकि उनको मुल्क की वह विद्या सँभालना थी, जिसको समझे बग़ैर इस किताब के गाने अच्छी तरह समझ में नहीं आ सकते। इन गानों से गानेवाले का गाने से पक्का लगाव साबित होता है। वह गाने, जिनके क़ायदे किताबों में दर्ज हैं, इतने मुश्किल नहीं हैं, जिस क़दर कि ये रोज़मर्रह के गाने; क्योंकि इनके क़ायदे अभी तक बहुत से लोगों को मालूम नहीं हैं। मगर यह भी हम बग़ैर कहे नहीं रह सकते कि जो आदमी पंडितजी के क़वायद से नावाक़िफ़ है, वह इन गानों को अच्छी तरह से गा सकेगा। अलग़रज़ पंडितजी के तमाम गाने और इनके ख़यालात उसी रंग में रँगे हुए हैं कि जिस रंग का दिमाग़ एक क़ाबिल पंडित का होता है। गानेवाले में और पंडित में फ़र्क़ है। गानेवाला तो उसी को कहते हैं, जो हरएक रंग से वाक़िफ़ हो और पंडित उसको कहते हैं, जो बिगड़ते हुए गाने को सुधार दे। बेशक पंडितजी के कारनामों की दुनियाए-मुसीक़ीए-हिंद एक ज़माने तक एहसानमंद रहेगी। आपके बेहतरीन शागिर्दों में मि० एस्० एन० रात्तनजनकर साहब प्रिन्सिपल मैरिस कालेज आफ़ हिंदुस्तानी म्युजिक हैं, और हमने अक्सर आपको ठुमरी गाते सुना है, और मि० वाडीलाल भी बड़े विद्वान् हैं।

—बड़े आग़ा

हमको ज़रूर पढ़िए !

'उड़ाया बुलबुलों ने बाग़ में तर्ज़े-सख़ुन मेरा ।'

किताब के गानों की कहानी, ख़ुद उन्हीं की ज़बानी । जब पहलेपहल हमारे इस भारतवर्ष में गाने-बजाने का हुल्लड़-हंगामा शुरू हुआ और हर तरफ़ म्यूज़िक-कान्फ़रेन्सें होने लगीं, मुख्तलिफ़ शहरों में गाने के स्कूल खुलने लगे और हमारे मुल्क के तालीमयाफ़्ता तबक़े ने गाना-बजाना सीखने की ठान ली, तो उस वक़्त हमारा नाम फोक़-म्यूज़िक रक्खा गया, जिसके यह माने हुए कि हम आम और मामूली लोगों के गाने के गाने हैं । मगर हम हरएक हिन्दोस्तानी के हृदय के इस क़दर क़रीब थे कि हमारा नाम बदलकर और ज़रा ज़्यादा इज़्ज़त देकर, लाइट-म्यूज़िक रक्खा गया, याने कि हम बहुत हल्के फुल्के हैं और इतने भारी-भरतम नहीं, जितने कि और हमारे भाई-बन्द हैं । मगर हम शौक़ीनों और गानेवाले और सुननेवाले दोनों ही के दिल के टुकड़े थे, फिर हमारा नाम बदला गया और ज़रा-सी इज़्ज़त बढ़ाकर सब हमको सेमी-क्लासिकल म्यूज़िक के नाम से पुकारने लगे । जब चैन न पड़ा, तो कुछ हमारे दूर के जान-पहचान के दोस्तों ने मजबूरन् हमारी सच्चाई और सादगी को देखते हुए

ख़ुद और बाक़ी हमारे जान-पहचान के लोगों की शराफ़त से अब हमारा नाम पापुलर म्यूज़िक रक्खा है, याने वह गाना, जो दिल को पसन्द आये। बड़े-बड़े गवैयों का यह क़ौल है कि हम गाना ही नहीं हैं, बल्कि हम गानों के इत्र हैं। हाँ, हम आसान भी बहुत हैं और मुश्किल भी बहुत हैं। हमीं को सुन-सुनकर कुछ लोगों ने उलटी-सीधी गंगाएँ और जमनाएँ हिन्दोस्तान में भी बहा दी हैं। हम किसी का भेद क्यों खोलें। हम इतना कहकर चुप हुये जाते हैं कि हम सच्चे प्रेम की जड़ हैं और हमको बिगाड़कर कोई इस जग में न पनपेगा। जैसा कि हम इस किताब में लिखे हुए हैं, इससे अच्छे कपड़े हमको पिन्हाये जा सकते हैं, मगर कपड़े पिन्हानेवाला समझदार ज़रूर होना चाहिये कि हमारा ढाँचा न बदलने पाए और न रूप ख़राब होने पाये। हमको गाने के वास्ते आपमें ये बातें होनी चाहिये—आप आजकल के क्लासिकल म्यूज़िक से एक हद तक वाक़िफ़ हों, मुल्क की भाषा अच्छी तरह बोल सकते हों। आपका तलफ़्फ़ुज़ हमारी जान है, हमारी एक लाइन को पहले ख़ूब-सा-याद कर लीजिये, फिर दूसरी लाइन को ख़ूब याद कर लीजिये, फिर पहली और दूसरी को मिलाकर ख़ूब-सा याद कर लीजिये और इसी तरह सिलसिलेवार चले चलिये। आपमें सुर ज्ञान और ताल ज्ञान बहुत अच्छा होना चाहिये, तब आपकी कामयाबी ज़रूरी है, हम बहुत जल्द सध जा सकते हैं और हर वक़्त

आपके साथ रह सकते हैं, ख्वाह आप खुशी में हों या रंज में। हम-सा दोस्त आपको मिल ही नहीं सकता। हृदय को बुरे ख़यालात से साफ़ करके अगर आप हमारी किसी लफ़्ज़ पर ध्यान दौड़ाएंगे, तो इससे अच्छी इसके मुक़ाबिल में लफ़्ज़ बहुत मुश्किल से मिलेगी। हम अपने गानेवालों को समझाते हैं कि "पिया बिन नहीं आवत चैन" से यही मतलब नहीं कि कोई स्त्री अपने पुरुष को याद कर रही है; बल्कि हमारा मतलब यह है कि वह पुरुष, जिसकी स्त्री सारा जग है, हमको बग़ैर उसके चैन नहीं। हम दिल की पुकार हैं, और क्लासिकल म्यूज़िक की जान हैं। हमको तमाम दुनिया प्यार करती है।

× × ×

हमारे गानों में बोल बनाना बहुत ही आसान और सरल है। वह यों कि जिस गाने में बोल बनाना चाहें, उसमें आरोही और अवरोही और न्यास के सुर का ध्यान करते हुए गाने की पहली लफ़्ज़ को थोड़े-थोड़े सुरों पर लय का ध्यान करते हुए यों घुमाया जावे कि लफ़्ज़ का पहला हर्फ़ सुरों पर घूमे और आख़िरी हर्फ़ पर ख़ातमा हो जावे। शर्त यह कि बार-बार घुमाने में एक ही तरह के तरतीबवार सुर न आवें, बल्कि लय का ध्यान करते हुए ज़्यादा सुर बढ़ जावें। वह यों कि जैसे हमारे गाने का पहला लफ़्ज़ 'आन' है। अब इस लफ़्ज़ के पहले हर्फ़ को हम घुमाते हैं—

मं	प	ध	मं	प	—	सां	नि	ध	<u>नि</u>
आ	आ	आ	आ	आ	आन	आ	आ	आ	आ

ध	प	मं	प	ध	ध	प	प	ध-
आ	न,	आ	आ	आ	आ	आ	आ,	आन।

इसके यह माने हुए कि पहली आलाप छः मात्रे की हुई और दूसरी आलाप भी छः मात्रे की हुई और तीसरी आलाप फिर छः मात्रे की हुई। यह सब मिलाकर १८ मात्रे हुए और उन्नीसवें मात्रे पर, जो कि ठेके का पहला मात्रा कहलाता है, और यही सम का भी मात्रा कहलाता है, इस पर 'आन' का हर्फ़ आया और पहली आलाप ख़त्म हो गई। इसी तरह से लय का ख़याल करते हुए और हर मात्रे पर दो-दो सुर लगाते हुए आप दुगन भी कर सकते हैं। आरोही और अवरोही का अच्छी तरह से ख़याल रहे।

ताल के बारे में दो-चार बातें

कुछ लोगों का यह ख़याल है कि जैसे गाने में सा री ग म है, वैसे ही तबले में १-२-३-४। असल में तो सा री ग म सिर्फ़ स्वरों के नाम हैं। मगर यह स्वर गले से कैसे लगावे जायँ और इन पर शब्द कैसे रक्खे जावें कि वह कानों को भले मालूम होवें, यह एक बड़ी कठिन बात है। वैसे ही तबले में १-२-३-४ सिर्फ़ एक हिसाबी बात है। असल में जो बात

समझने की है, वह उन बोलों की बाबत है, जो पुराने ज़माने के लोगों ने १-२-३-४ के वास्ते तजवीज किये हैं, जैसे 'तेट कत गदि गिन' या 'ता धिं धिं ता'। जैसे कि अच्छे गानेवाले के सा री ग म तक में रंजकता और रसीलापन होता है, वैसे ही तबला बजानेवाले के 'तेट कत गदि गन' या 'ता धिं धिं ता' में भी लचाव होना ज़रूरी है। तबला बजानेवाला वही है, जो अपने बाज के मिज़ाज को गानेवाले के गाने के मिज़ाज में मिला दे। बीस ठेकों में से जो आजकल काम में आ रहे हैं, दस ठेके अगले ज़मानेवालों ने विलम्बित लय के वास्ते तजवीज़ किये हैं, और उनके नाम ये हैं—चौताला, आड़ा चौताला, तिलवाड़ा, झूमरा, सवारी, पंजाबी, धीमा तेताला, फ़रोदस्त, तेवरा, शूल। ये ठेके अगर मध्य लय में बजाये जायेंगे, तो बजानेवाले की तबियतदारी समझी जायगी। बाक़ी दस ठेके धमार, एकताला, झपताला, चाचर, रूपक, पश्तो, तेताला, एकवाई, दादरा और कहरवा, ये ठेके मध्य लय में बजना चाहिये। मध्य लय का अंदाजा अपनी नब्ज़ पर हाथ रखकर मामूली तौर पर क़ायम कर लेना चाहिये। यह आपकी घड़ी हर वक़्त आपके पास रहती है। और यही पहला दरजा है, जिसके हिसाब से आपको विलम्बित और द्रुत लय क़ायम करना चाहिये। अगर आप गाने में खूब पक्के हैं और लय के काम में कच्चे हैं, तो गाने में आपका पनपना बहुत मुश्किल है। लय के काम में अगर आप पक्के हैं, तो गाने में आपका

थोड़ा कच्चापन ज़्यादा नुक़सानदेह न होगा। अच्छे गाने का भेद लयकारी में छिपा हुआ है।

अगर गानेवाले के साथ तबला बजानेवाला टुकड़ों, मुहरों और दोहरों का ढेर कर दे, तो गानेवाले के गाने में मज़ा नहीं आ सकता। क्योंकि गाना बड़े ज्ञान-ध्यान का काम है। गानेवाले का गाना तो उसी वक़्त तक अच्छा रह सकता है, जब तक कि उसको लय देखने की ज़हमत न गवारा करना पड़े। कोई भी आदमी एक वक़्त में दो बातें नहीं सोच सकता। इसी वजह से अक्सर गानेवालों में और तबले बजानेवालों में लड़ाइयाँ हो जाती हैं। क्योंकि दोनों अपना-अपना बयान एक साथ पेश करते हैं। यह बात अच्छी नहीं, क्योंकि धर-पटक में मज़ा नहीं आता। चाहिए कि एक दूसरे का ख़याल रक्खे, और ऐसी तदबीर होनी चाहिये कि गानेवाले का ध्यान न बँटे।

अलामात् किताब

जिस सुर के नीचे यह—छोटी आड़ी लकीर हो, वह सुर उतरा हुआ समझा जायगा, मसलन स रे ग म प ध नि सं। यह सब स प छोड़कर उतरे हुए सुर हुए और जिन सुरों के नीचे यह लकीर न हो, वह स म प छोड़कर सब चढ़े हुए सुर समझे जायँगे।

यह (•) अलामत् सप्तक ज़ाहिर करने के वास्ते है। जिस सुर के नीचे होवे, वह नीचे की सप्तक का सुर समझा जायगा और जिस सुर के ऊपर हो, वह सुर ऊपर की सप्तक का समझा जायगा। और जिन सुरों पर कोई बिन्दी ही न हो वह बीच के सप्तक के माने जायँगे।

यह (।) छोटी सीधी लकीर सिर्फ़ मध्यम के वास्ते इस्तेमाल में लाई जायगी, जब कि उसको कड़ा-मध्यम बनाना हो और अगर मध्यम पर यह लकीर न हो, तो मध्यम शुद्ध मानी जायगी याने उतरी हुई। ( ) इस ब्रैकेट के अन्दर जो सुर होगा, वह चार सुरों से मुरक्कब माना जायगा, जैसे (स)=स रे नि़ स, (म)=म प ग म, (नि)=नि सं ध नि वग़ैरा।

यह ◡ उल्टी क़ौस का सा निशान यह ज़ाहिर करता है कि इसमें जितने सुर दिये हुए हैं, वह सब एक मात्रे में बोलेंगे याने एक मात्रे के ज़माने के अन्दर इनको लगना चाहिये।

यह ⌒ क़ौस का ऐसा सीधा निशान एक सुर से लेकर दूसरे सुर तक वहाँ पर दिया जायगा, जहाँ एक सुर से लेकर दूसरे सुर तक की मींड लगाना मंज़ूर हो।

इस × अलामत् से मुराद सम है।

इस ० अलामत् से मुराद ख़ाली है।

यह — आड़ी लकीर या यह ऽ अलामत जिससुर या लफ़्ज़ के सामने हो, उससे यह समझना चाहिए कि उस सुर को लंबाना है या उस लफ़्ज़ का आकार लंबाना है।

---

(१) ताल दादरा

मात्रे	१	२	३	४	५	६
बोल	धी	धी	ना	धा	तू	ना
	×			०		

(२) ताल रूपक

मात्रे	१	२	३	४	५	६	७
बोल	ती	ती	ना	धी	ना	धी	ना
	(×)			२		३	

(३) ताल कहरवा

मात्रे	१	२	३	४	५	६	७	८
बोल	धि	न	धा	गे	न	ति	न	क
	×				०			

(४) एक ताला

मात्रे	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
बोल	धिन	धिन	धागे	त्रक	तू	ना	कत्	ता	धिन	त्रक	धी	ना
	×		०		२		०		३		४	

(५) ताल चाचर

मात्रे	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
बोल	धा	धिं	ऽ	धा	गे	धिं	ऽ	ता	तिं	ऽ	धा	गे	धिं	ऽ
	×			२				०			३			

(६) तेताला

मात्रे	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६
बोल	ना	धिं	धिं	ना	ना	धिं	धिं	ना	ना	तिं	तिं	ना	ना	धिं	धिं	ना
	×				२				०				३			

ख़्याल चन्द्रकौंश तीन ताल

स्थायी—अँसुवन के हरवा गूँध रहीं मोरि अँखियाँ पियरवा।

अंतरा— घड़ी पल छिन मोहे कल न परत है बेग लिआवो पिया को सँदेसवा।

स्थायी

रे स ध नि	सा — स म	म — ग —	म ग स —
अँ सु व न	के ऽ ह र	वा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
ग म ध नि	सं — सं सं	प प प नि	ध प म —
गूँ ऽ ध र	हीं ऽ मो रि	अँ खि याँ पि	य र वा ऽ
०	३	×	२

अंतरा

ग म ध नि	सं सं सं सं	सं नि ध नि	ध प म —
घ ड़ी प ल	छि न मो हे	क ल न प	र त है ऽ
०	३	×	२

ग म ध नि	सं मं गं सं	प प प नि	ध प म —
बे ऽ ग लि	आ ऽ वो ऽ	पि या को सँ	दे स वा ऽ
०	३	×	२

तानें

(१)

रे स ध नि	स — स म	गम गस रेस गम	धनि संप -म गस
आँ सु व नं	के ऽ ह र		
०	३	×	२

(२)

सग मध निसं धनि	संप -म गम रेसा
०	३
गम पग मध निसं	प- मग -स रेस
×	२

(३)

मप मप गम गम	निसं निसं धनि धनि
०	३
सग मध निसं प-	-- मग -स रेस
×	२

(४)

निस	गम	पम	पम	धनि	संप	मग	सरे
०				३			
सनि	सग	मध	निसं	गस	पम	गस	रेस
×				२			

सनि	रेस	गस	मग	पम	धम	निध	सं-
०				३			
निसं	गंगं	गंस	पम	गस	निस	मग	स-
×				२			

(५)

धनि	सग	मध	निसं	गंमं	गं-	संरें	संध
०				३			
निसं	पम	गम	रेस	निस	मग	-स	निस
×				२			

नोट—यह भैरवी थाट का औडव सम्पूर्ण राग है। इसकी आरोही स ग म ध नि सं और अवरोही सं नि ध म प म ग स रे स है। प वादी और रे समवादी है। यह राग कम गाया जाता है। जिस तरह से कि मालकौश रात के दूसरे पहर गाया जाता है, उसी तरह से चन्द्रकौश दिन के

पहले पहर गाया जाता है, गोया कि यह मालकौश का जवाब है। इस राग में इस तरह से रे और प नहीं लगता, जैसे कि अक्सर लोग मालकौश में लगाते हैं। मालकौश में रे औ प विवादी (जिसके लगाने से राग का रूप बदल जाता है।) करके लगाया जाता है। चन्द्रकौश में रे और प इस तरह लगाना चाहिए कि वह रे और प लगा हुआ मालकौश न सुनाई दे। ध नि सं प की तान इसमें ज्यादा आती है और यही बात इसको मालकौश से अलग करती है। प पर जोर है। इसको ऐसे गाना चाहिये कि भैरवी और मालकौश का रंग मिला-जुला मालूम हो।

दादरा—राग ग़ारा

स्थायी—आन बान जिया में लागी हाँ प्यारी चित ओर जिया में बसी कैसी फँसी।

अन्तरा—परन लागि झुकके पैयाँ, हुए ना मेहरबान सैयाँ, तुम बिन मोहे कल न परे, तुमरे कारण जागी।

स्थायी

ध	—	ध	निध	नि	ध	म	प	ध	पम	ग	म
आ	ऽ	न	बाऽ	ऽ	न	जि	या	में	लाऽ	ऽ	गी
×			०			×			०		

स	—	स	ग	ग	म	प	—	—	—	—	प
हाँ	ऽ	प्या	री	चि	त	ओ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	र
×			०			×			०		

प	ध	प	म	ग	म	नि	ध	प	म	ग	म
जि	या	में	ब	सी	ऽ	कै	ऽ	सी	फँ	सी	ऽ
×			०			×			०		

अन्तरा

प	प	प	धनि	ध-	नि	सं	सं	सं	सं	सं	सं
प	र	न	लाऽ	ऽऽ	गी	झु	क	के	पै	याँ	ऽ
×			०			×			०		

नि	नि	नि	सं	सं	सं	निसं	रें	नि	ध	प	प
हु	ए	ना	मे	ह	र	बाऽ	ऽ	न	सै	याँ	ऽ
×			०			×			०		

प	रें	सं	रें	नि	सं	ध	नि॒	प	ध	म॑	प
तु	म	बि	न	मो	हे	क	ल	न	प	र	त
×			०			×			०		

नि॒	ध	प	म	ग	म	ध	—	—	नि॒	ध	नि॒
तु	म	रे	का	र	ण	जा	ऽ	ऽ	गी	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	ध	प	म	ग	म		
जि	या	में	ला	ऽ	गी		
×			०				

तानें ।

(१)

म॑प	धनि॒	धप	म॑प	धनि	संनि	धनि॒	धप	म॑प	धनि॒	धप	मग
×			०			×			०		

(२)

रेग मप धनि	मप धनि संरें	गंमं गंरें संनि	धनि धप मग
×	०	×	०

(३)

रेस गरे मग	पम धप निध	संनि रेंसं गंरें	मंगं रेंसं निध
मप धनि संरें	गंमं गंमं रेंगं	सरें निसं धनी	पध मप गम
×	०	×	०

(४)

मग रेस निस	धप मग रेग	संनि धप मप	मंगं रेंसं निसं
मंगं रेंसं निध	पम पध निसं	रेंगं रेंसं निध	निध पम ग-
×	०	×	०

(५)

निसं निसं धनि	धनि पध पध	पध पनि धप	मग रेग रेग
गम पध निसं	रेंगं मंपं मंगं	रेंस निध निध	पम गरे गम
×	०	×	०

नोट—यह दादरा पंचम को सुर मानकर गाया जायगा। इस हिसाब से इसकी आरोही स रे ग म प, म प ध नि सं। अवरोही सं नि ध निध प मप ध प म ग रे स। ध वादी है और ग समवादी है। पकड़—म प धनि धप मग। आमतौर पर गारे राग के छोटी ख़ूबसूरत गाने पंचम को सुर मानकर ही गाये जाते हैं, वह यों कि तम्बूरे में सुर पंचम का मेल मिलाइये, जैसे कि क़रीब-क़रीब सब लोग मिलाते हैं। और इसको मध्य स्थान की धैवत से शुरू कीजिये। इससे यह फ़ायदा है कि दूर बैठे हुए लोग बहुत आसानी से सुन सकते हैं। गारा खमाच थाट का सम्पूर्ण राग है। इसमें दोनों गान्धारें और दोनों निषादें लगायी जाती हैं। यह दादरा ख़ास वक़्त के रागों को छोड़कर हर वक़्त गा सकते हैं। ख़ास रागों के वक़्त से मुराद संधि प्रकाश याने दोनों वक़्त मिलते हुए जो राग गाये जाते हैं और सुबह भैरवी का वक़्त छोड़कर इस दादरे को हर वक़्त गा सकते हैं। इसमें यों बढ़िये—ध प म ग, म प ध म प, संनि धनि धप, गंरें सं निध निध प, ग म प ध म प, ध प म ग वग़ैरा। हम यहाँ के ऊपर एक तान देते हैं, जिसमें इस गाने के तमाम सुर लगेंगे प़ ध़ नि़ स रे ग म प ध नि सं रें गं मं पं धं मं पं धं पं मं गं रें सं निध निध प म प ध प म ग रे स।

आप की ज्यादा आसानी के वास्ते हमने पाँच तानें दी हैं। बोल बनाते वक़्त इस दादरे का पहला लफ़्ज़ याने 'आन' इसको इस दादरे की आलाप के मुआफ़िक़ रसान-रसान गाइये, और आख़िर में 'आन' कहकर सम पर आ जाइये।

ख़याल यमन एक ताल

स्थायी—एरी बँगरी मोरि मुरक गईं जिन छुवो ऐसो ढीट लंगरवा करकी कलाई डोलन लागी निडर डर ढिठाई डर एरी।

अन्तरा—निपट चतुर बन आयें सदा रंगीले मुहम्मद साह विनती करत पैयाँ परत तोरी ए री।

स्थायी

नि़ रे
ए री

		। ।		ग ग	
ग नि	ध प	म म	ग- ग	रे रे	नि़ रे
बं ग	री मो	रि मु	रक ग	ई जी	न छु
×	०	२	०	३	४

स	—	नि़ ध़	नि़ ध़	स	—	स	रे	ग	रे	स	—
वो	ऽ	ऐ	सो	ढी	ऽ	ट	लं	ग	र	वा	ऽ
×		०		२		०		३		४	

नि़	ध़	प़	प़	स	स	स	स	रे	ग	ग	ग
क	र	की	क	ला	ई	डो	ल	न	ला	ऽ	गी
×		०		२		०		३		४	

ग	नि	ध	प	म॑	ग	रे	स	रे	स	नि़	रे
नि	ड	र	ड	र	ढि	ठा	ई	ड	र	ए	री
×		०		२		०		३		४	

अन्तरा

		ग	ग	प	प	ध	प	सां	ध
		नि	प	ट	च	तु	र	ब	न
		२		०		३		४	

सां	—	सां	—	सां	ध	—	ध	सां	—	सां	सां
आ	ऽ	ई	ऽ	स	दा	ऽ	रं	गी	ऽ	ले	ऽ
×		०		२		०		३		४	

सां	रें	गं	रें	सां	नि	ध	प	ग	गं	रें	सां
म	ह	म	द	सा	ऽ	ऽ	ऽ	बि	न	ती	क
×		०		२		०		३		४	

नि	ध	प	मे	ग	रे	सा	सा	स	स	ऩि	रे
र	त	पैं	ऽ	या	प	र	त	तो	री	ए	री
×		०		२		०		३		४	

तानें

(१)

ऩिरे गमे	पध निसं	रेंगं रेंसं	निध पमे	गरे सऽ	ए री
×	०	२	०	३	४

(२)

ऩिरे ऩिध	ऩिमे —ध़	ऩिरे गरे	ऩिरे स—	ऩिध़ ऩिरे	स— एरी
×	०	२	०	३	४

(३)

नि़रे गनि़	रेग नि़रे	गम पम	गनि़ रेस	नि़ध़ पम	गरे गरे
गम धम	गरे गरे	स- मुध़	नि़रे स-	पम गरे	नि़रे एरी
×	०	२	०	३	४

(४)

नि़रे गम	पम गरे	गम पध	पम गरे	गम पध	निध पम
गरे गम	पध निसं	निध पम	गरे गम	पध निसं	ए री
×	०	२	०	३	४

(५)

निध निम	धरें निध	निम धप	मग रेंग	निरें निम	धनि रेंसं
निध पम	गनि रेंनि	धम गरे	नि़रे स,ग	ईऽ जीऽ	नऽ छुऽ
×	०	२	०	३	४

नोट—आरोही नि़ रे ग म प ध नि सं अवरोही सं नि ध प म ग रे स। वादी गान्धार समवादी निखाद पकड़ नि़ रे ग। अच्छे गानेवाले मंद्र सप्तक की नि पर ज़ोर देकर और ग म

रे ग की तान लगाकर इसमें भैरवी का रंग पैदा करते हैं। स और प इसमें टेढ़ा करने का रेवाज़ है। यों कि बजाय नि़ स के नि़ रे स और बजाय म॑ प के म॑ ध प। गाने का वक़्त शाम के संधि प्रकाश (मानें दोनों वक़्त मिलते हुए) राग गाने के बाद।

लावनी तीन ताल

अस्थायी—अब के गए कब अई हैं सो यही मग।

अंतरा—शिरी अग राजा गुन मानो अपनो कब अपनो सुख पई हें सो यही मग।

स्थायी

नि़ प़ नि़ स	रेग सरे ग म	ग – स म	गरे रेग स नि़
अ ब के ग	येऽ ऽऽ क ब	अई ऽ हैं सो	यऽ हीऽ म ग
	३	×	२

अंतरा

रेग सरे म प	प – प –	निसं निसं पं प	पध पध म गरे
शिऽ रीऽ अ ग	रा ऽ जा ऽ	गु नऽ मा नो	अऽ पऽ नो ऽऽ
	३	×	२

नि़	प़	नि़	स	रेग	मरे	ग	म	ग	–	स	म	गरे	रेग	स	नि़
क	ब	अ	प	नोऽ	ऽऽ	सु	ख	पई	ऽ	हं	सो	यऽ	हीऽ	म	ग
०				३				×				२			

तानें

(१)

नि़	प़	नि़	स	रेग	सरे	ग	म
अ	ब	के	ग	येऽ	ऽऽ	क	ब
०				३			
पनि	सरे	गस	रेम	गरे	गस	रेग	सऽ
×				२			

(२)

गरे	गरे	पग	धप	मग	रेग	सरे	गस
०				३			
रेम	पनि	संप	धम	गरे	रेग	सरे	गस
×				२			

(३)	निस	रेम	पनि	संरें	रेंप	निसं	रेंगं	सं-
	०				३			
	संप	धम	गरे	गस	रेप	मग	रेग	स-
	×				२			
(४)	निस	रेम	पध	पसं	पध	पम	गरे	गस
	०				३			
	रेम	पनि	संरें	गंसं	पध	पम	गरे	गस
	×				२			
(५)	सरे	गस	संरें	गंसं	गंरें	पंमं	गंरें	गंसं
	०				३			
	रेम	पनि	सं-	प-	पध	पम	गरे	गस
	×				२			

नोट—ग रे ग म की तान की वजह से हम इसको तिलक कामोद की मांझ कहें तो बेजा न होगा। तिलक कामोद की आरोही पनि सरे मप निसं अवरोही स प ध म ग रे ग स। पकड़ स रे ग स। इसके गाने का वक़्त सेह पहर का है। इस

चीज़ को भी आप मौक़ा महल देखकर गा सकते हैं, जैसे कि अक्सर लोग वक़्त का बहुत ज्यादा लिहाज़ नहीं करते बशर्ते कि चीज़ ख़ूबसूरत हो और सुनाने के क़ाबिल हो। इसमें ग रे ग म की तान छोड़कर बाकी सब तिलक कामोद की-सी बातें हैं और ग रे ग म ग ऽ स की तान की वजह से कुछ ख़ूबसूरती ज्यादा ही बढ़ गयी है। ध प म ग रे ग स की भी तान आती है। यह दतिया और राजपूताने की तरफ बहुत गायी जाती है। तिलक कामोद में स रे नि़ स की तान भी आती है और इसमें भी आती है। जहाँ तक मुमकिन हो इसमें उतरी निखाद न लगाइये। हमने पाँच छोटी-छोटी तानें आपकी आसानी के वास्ते दे दी हैं। अगर आप इन तानों को ख़ूब विलंबित कर लेवें तो यह आलाप का काम देंगी। उपजयित अंग स्वभाव, माने जैसी चीज़ और उसकी बन्दिश वैसी ही उसकी तान और आलाप इस बात पर ग़ौर करते हुए आप इस चीज़ को थोड़ी सी मेहनत से ख़ूब ही गा-बजा सकते हैं और इन गानों से है भी यही मक़सद। इस गाने का मतलब गोया गुज़रे हुओं की याद है।

खयाल पुरया—तीन ताल

स्थायी—अरज सुनो दस्तगीर पीर मोरि आन परी है मोपे
धीर पीर मोरि।

अन्तरा—सब पीरन के पीर तुम्ही हो आवो बँधावो हमरी
धीर, मोरि।

स्थायी

नि़ रे ग ग	म ध निरें नि	म — ग म	ग रे सा सा
अ र ज सु	नो ऽ दृऽ स्त	गी ऽ र पी	ऽ र मो रि
०	३	×	२
— नि़ ग ग	म ध निरें धनि	म — ग म	ग रे सा सा
— अ न प	री है मोऽ पेऽ	धी ऽ र पी	ऽ र मो रि
०	३	×	२

अन्तरा

ग ग ग ग	म म ध ध	सां — सां सां	सां रें सां —
स ब पी ऽ	र न के ऽ	पी ऽ र तु	मि ऽ हो ऽ
०	३	×	२
नि रें गं गं	गं रें स —	नि ध म ग	रे सा सा सा
आ ऽ वो वँ	धा ऽ वो ऽ	ह म री धी	ऽ र मो रि
०	३	×	२

तानें

नि़ रे ग ग	म ध निरें नि		
अ र ज सु	नो ऽ दऽ स्त	निरेगमधनिरेंनि	मग-म ग रे स-
		×	२

(२)

०	३
नि़ रे ग ग	म ध रें नि
अ र ज सु	तो ऽ दऽ स्त
×	२
निरे निध़ निम़ -ध़	निरे गरे निरे स-

(३)

निरे गम गरे निरे	गम धरें निध म-
निरे गम धनि रेंगं	रेंनि धम गरे स-

(४)

रेस गरे मग धम	निध संनि रेंसं --
संरें निसं धनि मध	गम रेग सरे निस

(५) | मग -म गरे स- | निरे गम धनि धम
| रेंगं निरें धनि मध | गम रे ग स रे निस

नोट—यह राग मारवा थाट का है। आरोही और अवरोही यह है—नि रे ग म ध नि सं, सं नि ध म ग रे स।

पकड़—ग; नि रे स नि ध नि, म ध, रे, स।

अच्छे गानेवाले इस राग में एक तो ध म ध म नहीं करते दूसरे इसकी रे पर मारवे की तरह ज्यादा ज़ोर नहीं देते। म ध नि रे नि म ग की तान इसमें बहुत अच्छी मालूम होती है। ग वादी है और नि समवादी है। इसमें म ध नि सं रें सं की तान नहीं लगाना चाहिए, नहीं तो सोहनी सुनाई पड़ेगा। गाने का वक़्त रात है।

ठुमरी काफ़ी राग—तीन ताल

स्थायी—ऐसी चंचल चटकीली नार नवेली डोलत फिरत
ईतराई बलखाई घो लुगाई हरजाई निपट निलज
जाने कहाँ हित की सार अत ही गँवारी।

अन्तरा—चाँद कहत मोरे मनहू न भावे नाहक होत गोरी
मोरे गले को हार।

स्थायी

			— — सा नि
			— — ऐ सी
०	३	×	२
सा रे रे रे	ग – म म	प — ध प	ग — रे —
चं च ल च	ट ऽ की ली	ना ऽ र न	बे ऽ ली ऽ
०	३	×	२
रे नि ध नि	ध नि प ध	नि सां नि ध	प प ध प
डो ल त फि	र त इ त	रा ई ब ल	ग्वा ई बो लु
०	३	×	२
ग म प ध	ग — रे —	रे नि ध नि	ध नि प ध
गा ई ह र	जा ऽ ई ऽ	नि प ट नि	ल ज जा ने
०	३	×	२
नि सां सां नि	ध प — प	ग म पध प	ग रे सा नि
क हाँ हि त	की सा ऽ र	अ त हीऽ ग	वां री ऐ सी
०	३	×	२

अन्तरा

म प नि नि	सां सां सां सां	नि सां रें नि	सां — सां —
चां ऽ द क	ह त मो रे	म न हु न	भा ऽ वे ऽ
०	३	×	२

नि ध नि ध	नि ध नि प	ग म ध प	ग रे सा नि
ना ह क हो	ऽ त गो री	मो रे ग ले	को हार ऐ सी
०	३	×	२

तानें

(१)

स रे रे रे	ग — म म
चं च ल च	ट ऽ की ली
निध पम गम पध	निध पम गरे स-
×	२

(२)

निध पम गम पध	निध पम गरे सरे
०	३

गम	पध	निसं	रेंमं	निध	पम	गरे	सनि
×				२			

(३)

स	रे	रे	रे	ग	—	म	म
चं	च	ल	च	ट	ऽ	की	ली
धनि	धनि	पध	पध	मप	मध	प-	--

पध	पम	गरे	स-	मप	धनि	संरें	गंरें
०				३			
संनि	धप	मग	मप	धनि	धप	मग	रेस
×				२			

(४)

सां-	संनि	धप	मप	धनि	धप	मग	रेस
×				२			

(५)	गरे	संनि	धप	धनि	मरें	संनि	धप	मप
	०				३			
	धनि	संनि	धप	मप	धनि	धप	मग	रेम
	×				२			

नोट—काफी राग में दोनों गान्धारें दोनों धैवतें और दोनों निषादें देने का रेवाज है। चढ़ी गान्धार और उतरी धैवत का यह तरीक़ा है—ग म ध प ग रे इस राग में अच्छे गानेवाले रे पर ज़ोर देते हैं तो यह भैरवी सुनाई पड़ता है। म प निसं लगाने से भैरवी से अलग हो जाता है। इसका शुमार धुनों में है जैसे खमाज, पीलू और बागेश्री, मगर बागेश्री में कुछ ज़्यादा भाव नहीं लाते हैं, कभी-कभी देश और खमाज का भाव लाते हैं, जैसे मं पं मं गं रें सं नि ध गोया यह ऐसा सुनाई पड़ता है जैसे खमाज का नि म नि ध प म ग रे बागेश्री में म प ध म ग रे स की तान भी आती है। इस गाने की आरोही अवरोही स रे ग म प ध नि सं, संनि ध प म ग रे स। प वादी और रे समवादी। गाने का वक़्त भैरवी और संधी-प्रकाश रागों को छोड़कर हर वक़्त गा सकते हैं।

बनारसी चैती—ताल कहरवा

स्थायी—आज मन ले गई झाँक झरोके झुलनियाँवाली रे देया।

अन्तरा—चञ्चल चपल चपला सी चमकत, नैन मिलाय गई रे देया।

स्थायी

			स स स रे आ ज म न ०
सरे गम म म लेऽ ऽऽ ग ई ×	— म म प ऽ झाँ क झ ०	ग ग — ऽम रो के ऽ ऽझु ×	गरे रे — — लन याँ ऽ ऽ ०
गरे – स म ऽऽ ऽ ऽ वा ×	गरे ग नि़ नि़ लीऽ रे दै ऽ ०	स — — ग या ऽ ऽ झु ×	रे ग रे ग ल न याँ — ×

ग म ग म	रे ग नि़ नि़		
वा ऽ ली ऽ	रे ऽ है ऽ		
×	०		

अन्तरा ।

स रे स म	ग ग ग ग	म म म म	म म मगरे ग
चं च ल च	प ल च प	ला ऽ सी ऽ	चम क तऽऽ ऽ
०	×	०	×

– ग ग म	प — प प	धप ध ग म	म म म म
ऽ नै न मि	ला ये ग ई	रेऽ ऽ है ऽ	या ऽ ऽ झु
०	×	०	×

गरे रे — —	गरे — स म	गरे ग नि़ नि़	स — — म
लन याँ ऽ ऽ	ऽऽ ऽ ऽ वा	लीऽ रे है ऽ	या ऽ ऽ झु
०	×	०	×

तानें ।

(१)

गम	गम	रेग	रेस	गम	पध	मप	गम
रेग	रेस	नि़स	ग भु	ग रे ल	ग न	रे याँ	ग —
×				०			

ग	म	ग	म	रे	ग	नि़	नि़
वा	ऽ	ली	ऽ	रे	ऽ	दै	ऽ
×				०			

(२)

गम	पध	निध	पम	गरे	स-	गम	पध
निसं	निध	पम	गरे	स-	गम	पध	निसं
×				०			

रेंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	सऽ	नि़ दै	नि़ ऽ
×				०			

(३)

गम	प-	गम	पध	निध	प-	गम	पध
निसं	निध	प-	गम	पध	निसं	रेंगं	मंगं
०				×			

					ग	नि	नि
रेंसं	निध	पम	गरे	सऽ	रे	दै	ऽ
×				०			

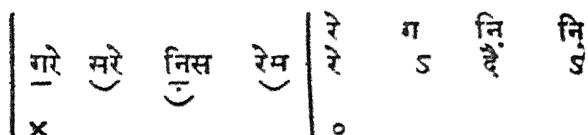
(४)

निसं	रेंसं	निध	प-	संनि	धप	निध	पध
पम	गरे	सनि	सग	मप	निसं	गंरें	संनि
×				०			

धप	मग	रेस	निस	रे	ग	नि	नि
				रे	ऽ	दै	ऽ
×				×			

(५)

निस	रेस	निध	पध	निस	रेग	मग	रेस
गरे	गम	पध	निसं	रेंगं	मंगं	रेंसं	गंरें
×				०			



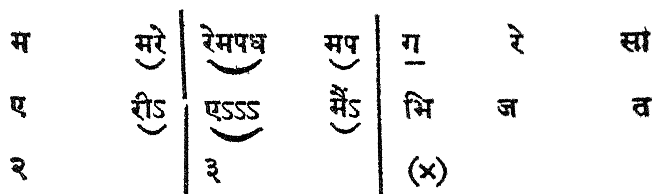
नोट—यह कजरी बनारस की तरफ़ बहुत गाई जाती है। यह गोया असली खमाच थाट है याने आरोही स रे ग म प ध नि सं अवरोही सं नि ध प म ग रे स। इन्हीं सुरों को उलटने-पलटने से और रे ग रे ग बार-बार लगाने से कानों को अच्छा मालूम होता है। इनमें नि सं भी जा सकते हैं। स वादी है और म समवादी है। कजरी के मौसम में गाई जाती है। ख़ूबसूरत होने की वजह से लोग मौक़ा-महल देखकर इसको हर वक़्त गाते हैं। मगर संधी-प्रकाश और भैरवी का वक़्त छोड़कर।

धुन सिंधी—ताल रूपक

स्थायी—एरी ए मैं भीजत सैयाँ बिन कम की खरी,

अन्तरा—सपने में आये, मोरा मन ले गये, दे गये अँसुवन की झरी।

स्थायी



सा	सा	गरे गरे	गरे	म	म	म
से	ऽ	थाँऽऽऽ	ऽऽ	ऽ	त्रि	न
२		३		(×)		

ग	ग	रे	सा	सा	—	रे
रू	ब	की	ख	री	ऽ	ऽ
२		३		(×)		

अन्तरा

म	प	नि	नि	सां	—	सां
स	प	ने	में	आ	ऽ	ये
२		३		(×)		

नि	नि	सां	सां	नि	ध	प
मो	रा	म	न	ले	ग	ये
२		३		(×)		

नि	—	ध	प	प	प	—
दे	ऽ	ग	ये	आं	सु	ऽ
२		३		(×)		

ध	प	|	प	ध	|	ग	म	—
व	न	|	की	ऽ	|	झ	री	ऽ
२		|	३		|	(×)		

तानें

(१)	|	सरे	मप	|	धप	धम	|	धप	मग	रेस
	|	२		|	३		|	(×)		

(२)	|	सरे	मप	|	निसं	निध	|	पम	गरे	सरे
	|	२		|	३		|	(×)		

(३)	|	म	मरे	|	रेमपध	मप				
	|	ए	रीऽ	|	एऽऽऽ	मैंऽ	|	सरे	मरे	मप
	|	निसं	रेंगं	|	रेंसं	निध	|	पम	गरे	सरे
	|	२		|	३		|	(×)		

(४)	म	मरे	रेमपध	मप			
	ए	रीऽ	एऽऽऽ	मैंऽ	सरे	मरे	मप
	धनि	धप	मग	रेस	सरे	मप	निसं
	रेंसं	निध	पम	गरे	स-	सरे	मप
	निसं	रेंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	सरे
	१		२		×		

(५)	सरे	मप	धरे	मप	निसं	रेंनि	संरें
	मंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	सरे	मप

नोट—आरोही स रे म प ध नि सं अवरोही सं नि ध प म ग रे स। ग वादी और ध समवादी। इसमें ग रे म प की तान बार-बार आती है। यही बात इसको काफ़ी वग़ैरह से बचाती है। गाने का वक़्त सावन की फ़सल है।

स्थायी

कजरी—ताल कहरवा

स्थायी—आई कजरी की बहार साँवरिया।

अंतरा—ऐसे गोरिया चलों गुदना गुदा के कजरी नचावें जादुमार साँवर गोरिया।

	— ध ध धध	मप धनि नि —	— धर ध म
	ऽ आ ई कज	रीऽ ऽऽ की ऽ	ऽ बहा र सां
	०	×	०
मप धनि ध प	— ध ध धध		
वंऽ ऽऽ री या	ऽ आ ई कज		
×	०		

अंतरा

	म म ध नि	संसं सां सां सां	ध ध नि सां
	ऐ से ऐ से	गोरि या च लों	गु द ना गु
	०	×	०
ध सां नि ध	ग म ध ध	नि नि नि निनि	धप ध ग म
दा ऽ के ऽ	क ज री न	चा वें ज दुऽ	माऽ र सां वर
×	०	×	०

रेग मप धनी धप	ग ध ध धध		
गोऽ ऽऽ रीऽ याऽ	ऽ आ ई कज		
×	०		

तानें

(१)

गम पध पम गम	पध निसं निध पम
	ध ध धध
पध निसं निध पम	गम आ ई कज
×	०

(२)

निध पम गम पध	निध पम गरे स-
०	×
गम पध निसं रेंगं	रेंसं निध पम गम
०	×

(३)

गमग मपम पधप धनिध	निसंनि संरेंसं रेंगंरें संरेंसं
रेंगंरें संरेंसं निसांनि धनिध	धनिध पधप मपम गमग
०	×

(४)

मग	पम	धप	निध	संनि	रेंसं	गंरें	मंगं
०				×			
गंमं	रेंगं	संरें	निसं	धनि	पध	मप	गम
०				×			

(५)

रेग मप

वंऽ	ऽऽ	गमपध	निसंरेंगं	रेंसंनिध	पमगरे	सनिसग	मपधनि
×				०			

नोट—यह कजरी खमाज राग में है। पंचम इसमें बार-बार आता है। मध्यम का भाव है। इसमें मध्यम को स मानकर गाना चाहिए। ऐसी छोटी-छोटी चीज़ों को ऐसे ही गाने का रेवाज है। इस तरह गाने से दूर के बैठनेवाले लोग अच्छी तरह सुन सकते हैं। संनिधप कहने से देश के पमगरे का भाव पैदा होता है और यह बहुत अच्छा मालूम होता है। इसे गाने का वक़्त यों तो कजरी का मौसम है मगर इसको आप मौक़ा-महल देखकर जब चाहें गा सकते हैं। संधीप्रकाश रागों के वक़्त इसको गाना ठीक नहीं। इसमें बाक़ी सब खमाच और काफ़ी की ऐसी बातें हैं।

धुन होली गारा—ताल चाचर

स्थायी—अब कैसे अँगना में जाओगी गोरी, फागुन मास महिनवा की होरी।

अन्तरा—गोरी गोरी बाँहयन में सोने के कँगनवा, रेशम की अँगिया खिचे दोनों डोरी ॥

स्थायी

नि ध प	म ग — म	प म॑ —	प — — म
अ ब ऽ	कै ऽ ऽ से	अं ग ऽ	ना ऽ ऽ में
०	३	×	२
ग म —	ध — — नि	प ध निसं	नि ध नि —
जा ऽ ऽ	वो ऽ ऽ गी	गो ऽ ऽऽ	री ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
प — —	नि — — नि	सं — —	सं — — सं
फा ऽ ऽ	गु ऽ ऽ न	मा ऽ ऽ	स ऽ ऽ म
०	३	×	२
नि — नि	सं — — सं	(सं) — —	निध नि ध नि
ही ऽ न	वा ऽ ऽ की	(हो) ऽ ऽ	रीऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

ग म —	नि — धनि	सं सं —	निसं — सं
गो री ऽ	गो ऽ ऽ री	ब हि ऽ	यों ऽ ऽ में
०	३	×	२
नि नि —	सं — — सं	नि सं —	नि ध — —
सो ने ऽ	के ऽ ऽ कं	ग न ऽ	वा ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२
नि — —	संसंसं —	सं सं सं	नि — — सं
रे ऽ ऽ	श म की ऽ	अं गि ऽ	या ऽ ऽ खीं
०	३	×	२
ग म —	निधनि —	धनि सं सं	नि ध नि ध
घे ऽ ऽ	दो ऽ नों ऽ	डोऽ ऽ ऽ	री ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

ताने

(१)

		गम पध निसं	निसं धनि धप धप
निध पम गम	पध पनि धप मग		
०	३	×	२

(२)

		गम पध निसं	रेंगं मंगं रेंसं निसं
रेंगं रेंसं निध	पम गम पध धनि		
०	३	×	२

(३)

		मप धनि संनि	धनि धप मप ऽऽ
मप धनि संरें	गंमं मंगं रेंगं रेंसं	निध निध पम	प- मप धनि सरें
गंमं पंधं पंमं	गंरें संनि धप मग		
०	३	×	२

(४)

		मग पम धप	निध संनि रेंसं गंरें
मंगं रेंसं निसं	रसं निध पम गम		
०	३	×	२

(५)

			निध गम पध निसं
रेंगं मंगं रेंसं	निध पम गम पध		
०	३	×	२

नोट—गारा खमाच थाट का सम्पूर्ण राग है। इसमें दोनो गन्धारें दोनो निखादें लगायी जाती है। यह मुसलमानों की ईजाद है। आरोही म़ प़ ध़ ऩि स रे ग रे ग म प प म प ध न सं अवरोही सं नि ध नि ध प ध प म ग रे स ऩि स यह चीज पंचम के भाव से बँधी है याने मामूली तौर पर तम्बूरे को सुर पंचम के मेल से मिलाइए और पंचम को स मानकर इसको गाइए। यह चीज़ होली की फ़सल में बड़ा मज़ा देती है। भैरवी और संधिप्रकाश रागों के वक़्त को छोड़कर आप इसको हर वक़्त गा सकते हैं।

राग देस—दादरा

स्थायी—आवो गले लग जावो मैं वारी सैयाँ रे।

अन्तरा—फुलवन सेज बिछायों सो मोरे सैयाँ, तुम बिन जियरा मोरा तरसे, अब मोहे काहे सतावो रे।

स्थायी

	रे	म	म	प	प	प	ध	सां	—
	आ	वो	ग	ले	ऽ	ऽ	ल	ग	ऽ
×	०			×			०		

सांनि	सांनि	धप	प	प	पध	मप	ध	म	ग	रे	—
जाऽ	ऽऽ	ऽऽ	वो	ऽऽ	मैंऽ	वा	ऽ	री	सै	याँ	ऽ
×			०			×			०		

म	रेग	स									
रे	ऽऽ	ऽ									
×			०								

अंतरा

—	—	म	प	नि	नि	सां	—	—	सां	—	रें
—	—	फु	ल	व	न	से	ऽ	ऽ	ज	ऽ	वि
×			०			×			०		

नि	ध	नि	प	ध	म	पध	नि	प	ध	प	—
छा	ऽ	ऽ	यों	ऽ	सो	मोऽ	ऽ	रे	सै	याँ	ऽ
×			०			×			०		

प	प	रे	म	प	नि	सां	नि	सां	नि̱	ध	प
ऽ	ऽ	तु	म	बि	न	जि	या	ऽ	रा	ऽ	ऽ
×			०						०		

ध	—	नि̱	प	ध	म	ध	नि̱	ध	प	—	—
मो	ऽ	ऽ	र	ऽ	ऽ	त	ऽ	र	से	—	—
×			०			×			०		

प	प	रे	म	प	नि	सां	रें	गं̱	रें	सां	सां
ऽ	ऽ	अ	ब	मो	हे	का	ऽ	ऽ	है	ऽ	स
×			०			×			०		

नि	सां	रें	नि̱	ध	प	धप	धम	गरे	रे	म	म
ता	ऽ	ऽ	व	ऽ	ऽ	रेऽ	ऽऽ	ऽऽ	आ	वो	ग
×			०			×			०		

तानें ।

(१)

निध	पम	गरे	सनि	सरे	मप
			रे	म	म
निध	पम	गरे	आ	वो	ग
×			०		

(२)

निध	पम	गरे	मप	निसं	रेंसं
			रे	म	म
निध	पम	गरे	आ	वो	ग
×			०		

(३)

प	प	प			
ले	ऽ	ऽ	निध	पम	गरे
सनि	सारे	मप	निध	पम	गरे
निध	पम	गरे	मप	निसं	रेंसं
			रे	म	म
निध	पम	गरे	आ	वो	ग
×			०		

(४)

प ले	प ऽ	प ऽ	सरें	मप	निसं
रेंमं	गंरें	संनि	संरें	संनि	धप
मग	रेस	निस	रे आ	म वो	म ग
×			०		

(५)

प ले	प ऽ	प ऽ	मंगं	रेंसं	निसं
गंरें	संनि	धप	मप	निध	पम
गरे	सरे	धप	मग	रेस	निस
×			०		

सरे	मप	निसं	रेंमं	गंरें	संनि
धप	मग	रेस	रे आ	म वो	म ग
×			०		

नोट—इसमें तमाम देस राग की बातें हैं। ख़ाली बजाय प नि सं चढ़ने के ध सं चढ़ते हैं।

भैरवी—ताल दादरा

स्थायी—आज मैं लड़ूँगी गुइयाँ, अपने पिया को जाने न
दूँगी गुइयाँ।

अंतरा—मोरा कहा पिया मानत नाहीं, मैं भी उनका कहा अब
न करूँगी गुइयाँ।

स्थायी

म	म	म	रे	ग	म	गरे	ग	रे	सा	सा	रे
आ	ऽ	ज	मैं	ऽ	ल	ड़ूँऽ	ऽ	गी	गुइ	याँ	ऽ
×			०			×			०		

प	प	—	प	ध	म	प	—	—	म	प	नि
अ	प	ऽ	ने	ऽ	पि	या	ऽ	ऽ	को	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	प	म	ग	—	म	गरे	ग	रे	सा	सा	रे
जा	ऽ	ऽ	ने	ऽ	न	दूँऽ	ऽ	गी	गुइ	याँ	ऽ
×			०			×			०		

अन्तरा

ध	—	म	ध	—	नि	सां	—	—	रें	सां	—
मो	ऽ	ऽ	रा	ऽ	क	हा	ऽ	ऽ	पि	या	ऽ
×			०			×			०		

नि	—	—	सां	—	सां	रें	नि	सं	ध	प	प
मा	ऽ	ऽ	न	ऽ	त	ना	ऽ	ऽ	हीं	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	—	—	प	प	प	ध	प	ध	प	म	म
मैं	ऽ	ऽ	भी	उ	न	का	ऽ	ऽ	क	हा	ऽ
×			०			×			०		

ग	ग	—	ग	प	म	गरे	ग	रे	सा	सा	रे
अ	ब	ऽ	न	ऽ	क	लूँऽ	ऽ	गी	गुइ	याँ	ऽ
×			०			×			०		

तानें

(१)

प	म	ग	रे	स	ग
×			०		
म	प	म	ग	रे	स
×			०		

(२)

पम	ग रे	स ग	मप	मग	रेस
×			०		

म	म	म			
आ	ऽ	ज	निसं	धनि	पध
मप	गम	गम	गरे	सऽ	ऽऽ
ऽऽ	निसं	निध	पम	गरे	सऽ
×			०		

(४)

पध	निसं	पऽ	मप	धनि	मऽ
गम	पध	गऽ	सरे	गम	सऽ
सरे	गम	पध	निसं	रेंगं	मंगं
रेंसं	निध	पम	गरे	सऽ	निस
×			०		

(५)	म	म	म			
	आ	ऽ	ज	पप	पध	मऽ
	पध	नि ऽ	निसं	निधि	निध	पध
	पम	पम	गम	गरे	गरे	सऽ
	×			०		

नोट—किसी भैरवी के गाने के नोट को इस गाने को गाने के वास्ते देख लीजिये।

ठुमरी धुन काफ़ी सेंदुरा तीन ताल।

स्थायी—ऐसो जोबन फबन मेरे मनको भावे लहक महक गुल की थम थम के आवे।

अन्तरा—चोवा चंदन अतर अरगजा लाल चुनरिया पहिरत आवे।

स्थायी

रे ग रे म	ग रे नि सा	सा रे म प	ध ग — म
ऐ सो जो ब	न फ ब न	मे रे म न	को भा ऽ वे
२	०	३	×

प नि सां रें	नि सां नि ध	प प प प-	ध ग — म
ल ह क म	ह क गु ल	की थ म थम	के आ ऽ वे
२	०	३	×

अन्तरा

म प नि नि	सां – सां सां	सां सां सां सां	रें नि सां सां
चो ऽ वा ऽ	चं ऽ द न	अ त र अ	र ग जा ऽ
२	०	३	×

म प नि सां	रें नि सां सां	सां नि ध प	ध ग — म
ला ऽ ल चु	न रि या ऽ	पे ह र त	ऽ आ ऽ वे
२	०	३	×

रे ग रे म	ग रे नि स
ऐ सो जो ब	न फ ब न
२	०

तानें

(१)	प़ध़	सारे	मप	धसां	रेंसां	निध	पम	गम
	३				×			
(२)	नि़सा	रेम	पध	पम	रेम	पध	सानि	धप
	२				०			
	मप	धसां	रेंमं	गंरें	सांनि	धप	मग	रेस
	३				×			
(३)	सानि़	रेसा	गरे	मरे	पम	धप	निध	सांध
	२				०			
	रेंसां	गंरें	मंगं	रेंसां	निध	पम	गरे	साऽ
	३				×			
(४)	पध	पनि	धप	मग	रेग	रेम	गरे	सनि़
	२				०			
	रेंगं	रेंमं	गरें	सांनि	धप	मग	रेसा	नि़स
	३				×			

(५)	रे	ग	रे	म	ग	रे	नि	म
	ऐ	सो	जो	ब	न	फ	ब	न
	निसारेगम		पध निसांरें		गंरें	सांनिध	पम ग	रेभा
	३				×			

नोट—नोट बाबत गाना 'चलो मदन मोहन' देखिये।

धुन सावन—ताल चाचर

स्थायी—आई सावन की बहार रे अँबवा तले डोला रख दे मुसाफ़िर।

अंतरा—ताला में चमके तलई मछरिया रन चमके तलवार रे, सभा में चमके मोरे मैंयाँ की पगरिया सिजिया पे सिंदुरा हमार रे।

स्थायी

ग	रे	ग	रे	सा	रे	नि	सा	—	सा	ग	रे	ग	रे
आ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ	सा	व	न	ऽ	की	ऽ	ऽ	ब
×			२				०			३			

प — —	गम पऽ धऽ पऽ	म ग रे	म ग रे सा
हा ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ रेऽ	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

ग ग —	म ग म ग	म ग म	ग रे ग रेग
अं ब ऽ	वा ऽ ऽ त	ले ऽ ऽ	डो ऽ ऽ लाऽ
×	२	०	३

सा रे —	सा रे गम म	ग रे ग	सा — — सा
र ख ऽ	दे ऽ ऽऽ मु	सा ऽ ऽ	फि ऽ ऽ र
×	२	०	३

अन्तरा

रे रे रे	म म म म	प प —	प — — —
ता ऽ ऽ	ला ऽ ऽ में	च म ऽ	के ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

प प —	ध ध ध म	प ध ध	सां — — —
त ल ऽ	ई ऽ ऽ म	छ रि ऽ	या ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

नि — नि	ध — — ध	प — —	प ध ध म
र न ऽ	च ऽ ऽ म	के ऽ ऽ	त ऽ ऽ ल
×	२	०	३

प — —	प प ध प	म ग रे	ग — रे सा
वा ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ र	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

ग ग —	म — — ग	गऽ म ग	रे ग रे सा
स ब ऽ	हा ऽ ऽ में	चम के ऽ	मो ऽ ऽ रे
×	२	०	३

सा रे —	ग म म ग	गरे गरे गरे	सा – – –
सै याँ ऽ	की ऽ ऽ प	गऽ रीऽ ऽऽ	या ऽ ऽ ऽ
×	२	०	३

ग रें ग	रे सा रे नि़	सा — —	ग रे ग रे
सि जि ऽ	या ऽ ऽ पे	बिं दि ऽ	या ऽ ऽ ह
×	२	०	३

प — —	गम पऽ धऽ पऽ	म ग रे	म ग रे साऽ
मा ऽ ऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ रीऽ	रे ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽऽ
×	२	०	३

तानें

(१)

रेग रेग सरे	सग रेस नि़स ऽऽ
×	२
रेग मप धप	मग रेग रेस नि़स
०	३

(२)	सरे	गम	पध	निध	पम	गरे	सऽ
	×			२			
	पध	निसं	रेंसं	निध	पम	गरे	सऽ
	०			३			
(३)	रेग	रेग	सरे	सग	रेस	नि़स	ऽऽ
	रेग	मप	धप	मग	रेग	रेस	नि़स
	सरे	गम	पध	निध	पम	गरे	सऽ
	×			२			
	पध	निसं	रेंसं	निध	पम	गरे	सऽ
	०			३			
(४)				पध	निध	पम	गरे
	सऽ	पध	निसं	रेंगं	संनि	धनि	धप
	×			२			
	मग	रेस	गंरें	संनि	धप	मग	रेस
	०			३			

(५)

गम	गम	रेग॒	रेम	गरे	सनि़	सऽ
सरे	गम	पध	गऽ	गम	पध	निसं
×			२			
रेंसं	निध	पम	गरे	सनि़	सरे	रेग॒
०			३			

नोट—यह गाना सावन के महीने में झूले पर गाया जाता है। आरोही स रे ग म प ध नि सं अवरोही सं नि॒ ध प म ग रे स रे ग॒ रे स। प वादी और रे समवादी है।

दादरा—राग गारा

स्थायी—आओ आओ पिया मैं वारी—तोरि चितवन जिया में
बसी प्रान रसी।

अन्तरा—बाट तकत हूँ कब कि ठाड़ी काहे मुरारी मोहे
बिसारी, अच्छे पिया तोरि चितवन प्यारी॥

स्थायी

सं											
ध	—	ध	पध	निसां	निध	म	प	प	निध	पम	गम
आ	ऽ	वो	आऽ	ऽऽ	वोऽ	पि	या	मैं	वाऽ	ऽऽ	रीऽ
×			०			×			०		

—	—	नि	सा	ग	म	प	प	प	प	प	प
ऽ	ऽ	तो	रि	चि	त	व	न	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	ध	प	म	ग	म	गम	पध	निध	पम	गम	गम
जि	या	में	ब	सी	ऽ	प्राऽ	ऽऽ	नऽ	रऽ	सीऽ	ऽऽ
×			०			×			०		

अन्तरा

सा	ग	म	प	प	प	धनि	धनि	पध	ग	म	ग
बा	ट	त	क	त	हुँ	कुऽ	बऽ	कीऽ	ठा	ऽ	ढ़ी
×			०			×			०		

नि	सां	सां	निध	निध	पध	म	प	ध	ग	म	ग
का	हे	मु	राऽ	ऽऽ	रीऽ	मो	हे	बि	सा	ऽ	री
×			०			×			०		

प	रें	सं	रें	नि	सं	ध	नि	ध	प	ग	म
अ	च्छे	पि	या	तो	रि	चि	त	व	न	प्या	री
×			०			×			०		

तानें

(१)

म प ग	म प ध	नि ध प	म ग म
×	०	×	२

(२)

मप गम पध	निध पम गम	संनि संनि धनि	धप मग म-
×	०	×	०

(३)

सरे गम पध	मप मप धनि	संरें गरें संनि	धनि धप मग
	०	×	०

(४)

		सरे गम गऽ	गम पध प-
मप धनि संरें	गंमं गरें संरें	गंमं गरें संनि	धनि धप मग
×	०	×	०

(५)

रेंस	गरे	मग	पम	धप	निध	पम	धप	निध	संनि	रेंसं	गंरें
गंमं	रेंगं	संरें	निसं	धनि	पध	मप	गम	रेग	पम	गरे	स–
×			०			×			०		

नोट—इस गाने के नोट बाबत 'आन बान' वाले दादरे को देख लीजिए।

दादरा—राग जयजयवंती

स्थायी—अति ही सुंदर पालना गढ़ लाओ रे बढ़ैया।

अन्तरा—शित चंदन जड़ाऊँ धरी खरादि रंग लगाऊँ विविध
चौकी बनाऊँ रंग रेशम लगाऊँ हीरा मोती लाल रे
मढ़ैया।

स्थायी

रे	प	म	प	ग	म	रे	ग	रे	सा	नि	सा
अ	त	ही	सुं	द	र	पा	ऽ	ल	ना	ग	ढ़
×			०			×			०		
सारे	गरे	रे–	नि	ध	नि	रे	—	—	सारे	गम	गम
लाऽ	ऽऽ	वोऽ	रे	ऽ	ब	ढ़ै	ऽ	ऽ	याऽ	ऽऽ	ऽऽ
×			०			×			०		

अंतरा

म	म	प	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां
शि	त	चं	द	न	ज	ड़ा	ऽ	ऊँ	ध	री	ऽ
×			०			×			०		

नि	नि	नि	सां	सां	सां	निसां	रें	नि	ध	प	प
ख	रा	दि	रं	ग	ल	गाऽ	ऽ	ऊँ	वि	वि	ध
×			०			×			०		

ध	ध	ध	पध	–नि	ध–	मा	ग	ग	ग	म	प
चौ	की	ब	नाऽ	ऽऽ	ऊँऽ	रं	ग	रे	श	म	ल
×			०			×			०		

ग	म	ग	रे	स	स	सरे	–ग	रे–	नि	ध	नि
गा	ऊँ	ही	रा	मो	ती	लाऽ	ऽऽ	लऽ	ऽ	रे	म
×			०			×			०		

रे	—	—	सरे	गम	गम						
ह्वै	ऽ	ऽ	याऽ	ऽऽ	ऽऽ						
×			०								

तानें

(१)

रे	स	नि	ध	प	प	रे	—	रे	ग	रे	स
×			०			×			०		

(२)

निस	रेम	पनि	संरें	गंरें	संनि	धप	मग	मग	रेग	रेस	निस
×			०			×			०		

(३)

						सरे	मप	धप	रेम	पध	निध
मप	निसं	रेंगं	रेंसं	निसं	रेंसं	निध	पम	गम	गम	रेग	रेस
×			०			×			०		

(४)

सरे	मप	निसं	रेंसं	निसं	——	सं	नि	ध	प	म	गम
मग	रेग	रेस	निसं	रेंसं	निध	पम	गम	रेग	रेस	निस	निस
×			०			×			०		

रेस	गरे	मग	पम	धप	निध	धप	सनि	रेंसं	निसं	रेंगं	रेंसं
निध	पप	मप	रें-	रेगं	रेसं	सं-	संनि	धप	नि-	निध	पम
			नि	ध	नि						
गम	रेग	रेस	रे	ऽ	ब						
×			०			×			०		

नोट—यह झूले का गाना है और इसमें तमाम बातें ज़य-जयवंती राग की हैं।

दादरा—ज़िला खमाच

स्थायी—अँधेरिया है रात सजन जइहो कि रइहो।

अन्तरा—चुन-चुन कलियाँ मैं सेज बिछाऊँ, पलँग लचकदार सजन जइहो कि रइहो।

स्थायी

—	म	ग	ग	म	ध	—	ध	नि
ऽ	अं	ऽ	धे	रि	या	ऽ	है	ऽ
०			×			०		

मप	धनि	सां—	नि	ध	प	ध	नि	प	ध	ग	म
राऽ	ऽऽ	तऽ	स	ज	न	जै	ऽ	हो	ऽ	कि	ऽ
×			०			×			०		

प	प	प	ध	म	ग						
रै	ऽ	हो	ऽ	अं	ऽ						
×			३								

अन्तरा

ग	म	नि	—	ध	नि	सां	नि	सां	नि	सां	सां
चु	न	चु	ऽ	न	ऽ	क	लि	ऽ	यां	मैं	ऽ
×			०			×			०		

नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां	सां	नि	ध
से	ऽ	ऽ	ज	ऽ	बि	छा	ऽ	ऽ	ऽ	ऊँ	ऽ
×			०			×			०		

म	ग	म	ध	ध	नि	मप	धनि	सं–	नि	ध	प
प	लं	ग	ल	च	क	द्राऽ	ऽऽ	ऽर	स	ज	न
×			०			×			०		

ध	नि	प	ध	ग	म	प	प	प	ध	म	ग
जै	ऽ	हो	ऽ	कि	ऽ	रै	ऽ	हो	ऽ	अं	ऽ
×			०								

तानें

(१)

ग	म	प	ध	नी	सं	नि	ध	प	म	म अं	ग ऽ
×			०			×			०		

(२)

गं	रें	सं	निं	सं	रें	सं	नि	ध	प	म अं	ग ऽ
×			०			×			०		

(३)

ध प म	ग म ग	ध नि सां	रें गं रें
			म ग
ध नि सां	रें सां नि	सां नि̱ ध	प अ ऽ
×	०	×	०

(४)

ग म ग	म प म	प ध प	ध नि̱ ध
नि सां नि	सां रें सां	रें गं रें	सां रें सां
नि सां नि̱	ध नि̱ ध	प ध प	म प म
			म ग
ग म ग	म प म	प ध प	म अ ऽ
×	०	×	०

(५)

नि̱ध पम गम	पध निसं रेंगं	नि̱सां रेंगं रेंसां	नि̱ध पम ग–
×	०	×	०

नोट—इस दादरे में वह तमाम सुर लगेंगे, जो खम्माच थाट में लगते हैं। यह दादरा गानेवाले का यह मतलब है कि वह खम्माच तो गा रहा है, मगर बजाय ग ध वादी समवादी करने के वह ध ग वादी समवादी कर रहा है। इसकी तानें यों जायँगी—स ग म प ध, ग म प ध, म प ध, नि̱ ध, सं नि̱ ध,

ध नि सं नि ध, वग़ैरह इसको भी अलावा भैरवी के वक़्त के और ऐसे रागों के वक़्त के जो दोनों वक़्त मिलते हुए के गाये जाते हैं, आप हर वक़्त शौक़ से गा सकते हैं। यह गाना मध्यम को स मानकर गाया जायगा।

कजरी—ताल कहरवा

स्थायी—आया सावन का महिनवा सब मिल खेलें कजरी।

अन्तरा—कजरी खेलें झुलवा झूलें नैहर की नगरी।

स्थायी

सा रे ऩि सा	रे — रे रे	— रे ग रे	ग म प प
आ ऽ या ऽ	स ऽ व न	ऽ का ऽ म	ही न वा ऽ
०	×	०	×

ग म ग रे	गरे गरे — ग —	ग ऩि — ऩि	सा — — —
स ब मि ल	खेऽ ऽऽ लें ऽऽ	ऽ क ऽ ज	री ऽ ऽ ऽ
०	×	०	×

अंतरा

रे ग म	ग – ग –	म म म म	म म ग ग
ज री ऽ	खे ऽ लें ऽ	झु ल वा ऽ	झू ऽ लें ऽ
	०	×	०

— प प	प — प ध	म — ग म	रे ग नि़ स
ऽ ह र	की ऽ न ग	री ऽ ऽ ऽ	आ ऽ या ऽ
	०	×	०

तानें

)	नि़सा रेग मप धनि	सांनि धप मग रेसा
	०	×

)	पध निप मग रे–	पध निसां रेंनि सांनि
	०	×

(३)	निसा	रेग	मग	रे-	निसा	रेग	मप	धप
	०				×			
(४)	पध	निंध	रेग	मप	धनि	संरें	गंरें	संनि
	०				×			
	धप	मग	रेग	मप	धनि	धप	मग	रेस
(५)	सनि	धप	मग	रेस	निध	पम	मंगं	रेंसं
	०				×			
	निस	रेस	निध	पम	गनि	धप	मग	रेस
	०				×			

नोट—इस गाने में स रे नि स रे की तान बड़ा मजा देती है। सावन के महीने में गाया जाता है, और बाज़ लोग इसको यों भी जब जी चाहता है, गाते हैं। इसके गाने का वक़्त भैरवी और संधिप्रकाश रागों का वक़्त छोड़कर क़रीब-क़रीब हर वक़्त हो सकता है। आरोही अवरोही स रे ग म प ध नि सं — सं नि ध प म ग रे स—स वादी और म समवादी है। तिलक कामोद की तरह इसमें ग नि स की मीड आती है।

दादरा—राग गारा

(फ़िशर-विमेन्स सांग)

स्थायी—बिंदिया ले गई मोर रे मछरिया ।

अंतरा—जाय कहो मोरे छोटे देवर से जमुना में जाल डलावें रे ।

स्थायी

—	—	रे	रे	ग	रे	सा	सा	नि	सा	रे	रे
ऽ	ऽ	बिं	दि	या	ऽ	ले	ऽ	ऽ	ग	ई	ऽ
×			०			×			०		

सा	सा	नि	ध	ध	नि	सा	—	नि	सा	—	—
मो	ऽ	रि	रे	ऽ	म	छ	ऽ	री	या	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि	ध	ग	ग	ग	म	रे	रेग	रेग	म	प	प
(हाँ)	ऽ	बिं	दि	या	ऽ	ले	ऽऽ	ऽऽ	ग	ई	ऽ
×			०			×			०		

ग	म	ग	रे	ग॒	रे	स	रे	नि़	सा	—	—
मो	ऽ	रि	रे	ऽ	म	छ	ऽ	री	या	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि़॒	ध़	रे
(हाँ)	ऽ	विं
×		

अन्तरा

—	—	नि़॒	ध़	नि़	नि़	नि़	सा	रे	नि़	सा	—
ऽ	ऽ	जा	ऽ	ए	क	हो	ऽ	ऽ	मो	रे	ऽ
×			०			०			०		

सा	—	ग	ग	म	ग	रे	ग॒	रे	सा	सा	सा
ऽ	ऽ	छो	टे	दे	ऽ	व	ऽ	र	से	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

स	—	ग	ग	ग	म	रे	ग	ग	म	प	प
ऽ	ऽ	ज	मु	ना	में	जा	ऽ	ऽ	ल	ब	ऽ
×						×			०		

ग	म	ग	रे	ग	रे	सा	रे	नि	सा	—	—
ला	ऽ	वें	रे	ऽ	म	छ	ऽ	री	या	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि	ध	रे									
(हाँ)	ऽ	बिं									
×											

तानें

(१)

			सरे	गम	पध	निध	पम	गरे	स-	रेरे	गरे
										बिंदि	याँऽ
×			०			×			०		

(२)

धनि	सरे	निस	गम	पध	निध×	पम	गरे	गरे	सरे	निस	निध
×			०			×			●		

(३)

धनि़ सरे गम	पध निसं रेंगं	रेंसं निध पम	गरे सनि़ स–
धनि़ सरे गम	गरे सनि़ स–	सरे गम पध	निध पम गम
पध निसं रेंगं	मंगं रेंसं निध	पध निध पम	गरे सनि़ स–
×	०		

(४)

सरे सरे गरे	गम गम पम	पध पध निध	निसं निसं रेंसं
संरें संनि संनि	धनि धप धप	मप मग मग	रेग सरे रेस
×	×		

(५)

स —											
ले	ऽ	ध	ऽ	ध	नि	सं	रें	सं	नि	सं	नि
ध	नि	ध	प	ध	प	म	प	म	ग	म	ग
								रे	रे	ग	रे
रे	ग	रे	स	रे	नि़	स	ऽ	बिं	दि	या	ऽ
×			०								

नोट—यह गारे राग का गाना हमने स को स मानकर नोटेशन किया है यानें स प का भाव है। अगर आप अच्छा समझें, तो पंचम को सुर बना लें। आरोही अवरोही मपधनि़ सरे गरे गम पध निसं, संनिध नि धपरे सनि़स वादी ग है और संवादी नि। संधिप्रकाश रागों के वक्त को छोड़कर इसे आप हर वक्त गा सकते हैं।

ठुमरी भैरवी—तीन ताल

स्थायी—बिन पिया कछु न सुहाये गोपी मैंका।
अंतरा—निसदिन चैन नहीं मेरि आहों में कोई जाये सैयाँ को ले आये।

स्थायी

			सि रे
			बि न
प म गरे ग	रे सा रे नि	सा – – –	सा – सा रे
पि य कऽ ऽ	छु ना ऽ सु	हा ऽ ऽ ऽ	ये ऽ गो ऽ
०	३	×	२

म म म म	— — म ग	गम पध निसां निध	पम गरे सा रे
पी ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ मै ऽ	काऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ बि न
०	३	×	२

अन्तरा

प प प प	प – ध म	प – – –	ध – प –
नि स दि न	चै ऽ न न	हीं ऽ ऽ ऽ	मे ऽ रि ऽ
०	३	×	२

म — — —	प — — —	गम पध निसां रेंसां	निध पम गरे सा-
आ ऽ ऽ ऽ	हों ऽ ऽ ऽ	मेंऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ऽऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	३	×	२

प प प प	प प ध म	साग सगम पमग	रे सा सा रे
को ई जा ये	सै यों ऽ को	ले ऽ ऽऽऽ ऽऽऽ	आ ये बि न
०	३	×	२

तानें

(१)

गम पध पम गम	पध पम सवि रेन
प म गरे ग	रे स रे नि
पि या कऽ ऽ	छु न ऽ सु
०	३

(२)

						स	रे
गम	पध	निसं	निध	पम	गरे	वि	न
प	म	गरे	ग	रे	रे	स	नि
पि	या	कऽ	ऽ	छु	न	ऽ	सु
०				३			

(३)

गम	पध	पम	गम	पध	पम	गरे	गरे
०				३			
						स	रे
गम	पध	निसं	निध	पम	गरे	बि	न
०				×			

(४)

रेस	गरे	मग	पम	धप	निध	संनि	रेंसं
०				३			
							सरे
संरें	निसं	धनि	पध	मप	गम	रेग	बिन
×				२			

(५)	पध	पध	मम	मम	गम	गम	मग	रेस
	०				२			
								सरे
	निसं	रेंसं	निध	पम	गरे	सनि	स-	बिन
	×				२			

नोट—आरोही स रे ग म प ध निसं, अवरोही सं नि ध प म ग रे स भैरवी में आजकल कड़ी मध्यम बड़ी खूबसूरती के साथ दी जाती है। एक तो इस तरह पर जैसे देश राग में नि सं रें नि ध प वैसे ही म प ध म ग रे और दूसरी तरह जैसे कि इस चीज में दिया हुआ है। भैरवी के बावत हम किसी दूसरी चीज में और बातें बताएँगे। इसमें स वादी और प समवादी है। गाने का वक्त सुबह का है।

धुन भैरवी—ताल कहरवा

स्थायी—बहुतेरा समझाया री लाखन बार ।

अन्तरा—कृष्ण मुरारी मानत नाहीं रे, समझ-समझ पछताया री लाखन बार ।

स्थायी

— — प प	प ध प म	प ग रे ग	म — म प
ऽ ऽ ब हु	ते ऽ रा ऽ	ऽ स ऽ म	झा ऽ या ऽ
०	×	०	×
ग म प ध	प म ग रे	ग सा रे नि	सा — — —
री ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ला ऽ	ऽ ख ऽ न	बा ऽ ऽ ऽ
०	×	०	×
— स प प			
ऽ र ब हु			
०			

अन्तरा

	ध म ध नि	सां रें सां सां	— नि नि सां
	कृ ष न मु	रा ऽ री ऽ	ऽ मा न त
०	×	०	×
रें नि सां ध प	प प प ध	प म रे ग	म — म प
नाऽ ऽ हीं रे	स म झ स	म झ प छ	ता ऽ या ऽ
०	×	०	×
ग म प ध	प म ग रे	ग स रे नि	सा सा सा सा
री ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ला	ऽ ख ऽ न	बा ऽ ऽ ऽ
०	×	०	×
— सा म प			
ऽ र ब हु			
०			

तानें

(१)

			पप	
निध	पम	गरे	बहु	
०				×

—	—	—	—	सरे	गम	पध	निसं	
०				×				

(२)

पध	मप	——	——	मप	धनि	पध	मप
		प	प				
निस	स-	ब	हु				
०				×			

——	——	——	——	पध	निम	मग	रेस
०				×			

(३)

सरे	गम	–म	पप	धप	नि–	धप	गम
गरे	स–	सरे	गम	पध	निसं	संनि	धप
मग	रेस	गम	गरे	स–	पध	निम	–म
गरे	स–	प ब	प हु				
०				×			

(४)

मप	धनि	सं–	सं–	गम	पध	नि–	नि–
निध	पम	गरे	स–	निस	गम	प ब	प हु
०				×			

(५)

पप	धप	पनि	संनि	धप	धम	गरे	स–
०				×			

		प	प
रेस	निस	ब	हु
०			

नोट—इसमें भैरवी का भाव बड़ा ही अच्छा आता है। मध्यस्थान के धैवत पर ख़ूब ज़ोर देते हैं। 'बहुतेरा समझाया री' की तकरार बड़ा मज़ा देती है।

दादरा धुन भैरवी—ताल दादरा

स्थायी—बनाओ बतियाँ चलो काहे को झूठी, वहीं जाओ जहाँ रहे रतियाँ; चलो काहे को झूठी।

अन्तरा—रात सौतनियाँ के संग रहे हो, मोसे करत हो घतियाँ; चलो काहे को झूठी।

स्थायी

	–	–	स
	ऽ	ऽ	ब
०	×		

प	प	प	प	प	प	ध	प	ध	प	म	म
ना	ऽ	ऽ	ओ	ब	ति	याँ	ऽ	ऽ	च	लो	ऽ
×			०			×			०		

सा	ग	साग	मप	म	म	रे	सा	सा	सा	सा	सा
का	ऽ	हेऽ	ऽऽ	को	ऽ	भू	ऽ	ऽ	टी	ऽ	ब
×			०			×			०		

प	प	प	प	प	प	सां	—	—	सां	—	रें
ना	ऽ	ऽ	ओ	ब	हीं	जा	ऽ	ऽ	वो	ऽ	ज
×			०			×			०		

सां	नि	सां	ध	प	—	प	प	प	प	प	प
हाँ	ऽ	ऽ	र	हे	ऽ	र	ति	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	प	ध	प	म	म	स	ग	साग	मप	म	म
याँ	ऽ	ऽ	च	लो	ऽ	का	ऽ	हेऽ	ऽऽ	को	ऽ
×			०			×			०		

रे	सा	—	सा	—	सा
झू	ऽ	ऽ	टी	ऽ	ब
०			०		

अन्तरा

ध	—	म	ध	—	नि	सां	सां	—	सां	सां	—
रा	ऽ	ऽ	त	ऽ	सौ	त	नि	ऽ	याँ	के	ऽ
×			०			×			०		

ध	ध	नि	सां	सां	सां	रें	सां	सां	नि	ध	प
ऽ	ऽ	सं	ग	ऽ	र	हे	ऽ	ऽ	हो	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	—	—	प	—	प	प	प	—	प	प	प
मो	ऽ	ऽ	से	ऽ	क	र	त	ऽ	हो	घ	ति
×			०			×			०		

ध प ध	प म म	स ग सग	मप म म
याँ ऽ ऽ	च लो ऽ	का ऽ हेऽ	ऽऽ को ऽ
×	०	×	०

रे सं —	स — स
झु ऽ ऽ	टी ऽ ब
×	०

तानें

(१)

पध मप गम	गप मग रेस	गम पध पम	गरे स– स ब
×	०	×	०

(२)

		सग मप ——	गम पध ——
मप धनि ——	पध निसं ——	संनि धप ——	निध पम ——
धप मग ——	मग रेस ——	धप मग रेस	नि– स– स ——
×	०	×	०

(३)

गम पध मम	गरे सनि सग	मप धनि संरें	संनि धप मम
×	०	×	० स—
संनि संध निप	धम पग मरे	गस रेस निस	सनि निस ब—
×	०	×	०

(४)

निस गम पध	निसं पध निसं	निध पम गरे	सनि स ब स ऽ
×	०	×	०

(५)

सनि स— मग	पम धम निध	संनि रेंसं निध	पम गरे स ब
×	०	×	०

नोट—किताब के किसी भैरवी के गाने का नोट इसके बाबत देख लीजिये।

धुन राग ग़ारा—ताल कहरवा

स्थायी—वारी उमिर लरकइयाँ न छेड़ो सैयाँ।

अंतरा—सेज चढ़त मोरि पायल बाजे, जागत सास जिठनिया न छेड़ो सैयाँ।

स्थायी

— सा ग म	प ध नि सां	नि– ध प म	प धप म ग
ऽ वा री उ	मि र ल र	कइ ऽ याँ न	छे ड़ोऽ सै याँ
×	०	×	०

अन्तरा

– नि नि नि	सां सां सां सां	– नि नि सां	पध निसां निध पध
ऽ से ज च	ढ़ त मो रि	ऽ पा य ल	बाऽ ऽऽ ऽऽ जे-
×	०	×	०
– ग ग म	प ध नि सां	नि ध प म	प धप म ग
ऽ जा ग त	सा ऽ स जि	ठ नि याँ न	छे ड़ोऽ सै याँ
×	०	×	०

ताने

(१)	मप धनि धप मप	धनि धप मग रेसा
	निसा	
	×	०
(२)	पध पनि धप मप	धनि धप मग रेस
	निसा	
	×	०
(३)	गमग मपम पधप धनिध	निसांनि धनिध पधप मपम
	गमग	
	×	०
(४)	निसारे गमप मपध निसंरें	गंमंगं रेंसांनि धनिध मपम
	पमग	
	×	०

(५)	– गमपध ग – – – मपधनि	म – – – पधनिसा प – – – धनिसांरें
	म – – – निसांरेंगं नि – – – सांरेंगंमं	सां – – – सांरेंगंमं गंरें सांनि धपमग
	रेसानि़सा	
	×	०

नोट—इस गाने के लिये किसी ग़ारे के गाने का नोट देख लीजिये।

खयाल राग जयजयवन्ती—त्रिताल

स्थायी—बाजे झनन मोरि पायल बाजे सास ननँद मोरि कहूँ न जागे।

अन्तरा—सास ननँद मोरि जनम की बैरिन सौतनिया के अवाजे तवाजे।

स्थायी

– रे रे ग॒	रे सा रे नि़	(सा) – सा सा	(सा) – नि़॒ ध़
ऽ बा जे झ	न न मो रि	पा ऽ य ल	बा ऽ जे ऽ
०	३	×	२

नि ग ग म	रे ग म प	– ग म रे	ग सा रे नि़
ऽ स स नं	न द मो रि	ऽ क हूँ ना	जा ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

सा – – –
गे ऽ ऽ ऽ
०

अन्तरा

–गम निध नि	सां सां सां रें	नि ध प म	ग रे स सा
ऽ साऽ साऽ न	न द मो रि	ज न म की	बै ऽ रि न
०	३	×	२
– ग ग ग	रे ग म प	म ग म रे	ग सा रे नि़
ऽ सौ त न	या ऽ के अ	वा ऽ जे त	वा ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

सा - - -
जे ऽ ऽ ऽ
०

तानें

(१)

रेग	मप	धनि	धप	मग	रेग	रेस	निध
×				२			

नि—

(२)

निसां	रेंगं	रेंसां	निध	पम	गरे	गरे	सानि
×				२			

ध—

(३)

गंमं	गंमं	रेंगं	रेंगं	सांरें	सांगं	रेंसां	निध
०				३			

| पध पनि धप मग | मग रेग रेस रेनि
| × | २
| सा—

(४) | मग मग रेग रेसा | रेग मप धनि धप
| ० | ३
| मग रेग रेसा रेंगं | रेंसां निध पम गरे
| × | २
| गरे स— गंमं पंमं | गंरें गंरें संनि रेंसां
| ० | ३
| निध पम गरे गरे | सा— निस रेनि धप
| × | २
| ——

(५)								
	रेंसं	रेंसं	निध	निरें	गं—	मं—	रेंगं	रेंसं
	×				२			
	सं—	नि—	ध—	प—	म—	म—	रेग	रेस
	०				३			
	—							

नोट—यह खमाज थाट का संपूर्ण राग है। इसमें रे वादी और प समवादी है। इसकी आरोही स, रेग रेस, नि ध़ प़, रे ग म प, नी सं, और अवरोही सं नि ध प, धम मग, रे ग रे स। गाने का समय रात है। इसमें दोनों गांधार और दोनो निषाद देते हैं। आरोही में तीव्र ग और नी, अवरोही में कोमल ग नी देने का रिवाज है। रे स नि ध़ नी रे। गम प गम रे ग रे स यह टुकड़े इसमें बहुत अच्छे मालूम होते हैं और यही इसकी जान हैं।

ठुमरी भैरवी—त्रिताल

स्थायी—बाबुल मोरा नैहर छूटो जाय।

अन्तरा—चार कहार मिल डुलिया मँगावो अपना बिगाना छूटो जाय।

स्थायी

– प – धनि	धप मप ग रेसा	सारे (ग)—सरनि	सा — – –
ऽ बा ऽ बुल	मोऽ ऽऽ रा नैऽ	हर (छु) ऽटोऽऽ	जा ऽ ऽ ऽ
२	०	३	×
सा — — –			
य ऽ ऽ ऽ			
२			

अन्तरा

म प ध नि	सं सं रें सं	नि नि नि सं	रेंसं निसं ध– प–
चा – रे क	ह रे मि ल	डु लि या मँ	गाऽ ऽऽ वोऽ ऽऽ
२	०	३	×

प प प प	प – धप धम	– म प धनि	नि ध प ग
अ प ना वि	गा – नाऽ ऽऽ	ऽ छू ऽ टोऽ	जा ऽ य ऽ
२	०	३	×

तानें

(१)

धप धम पम धप	ग– म– गरे स–
३	×
सं– निध प– ––	गम गरे स– नैऽ
२	०

हर (छु) ऽ टोऽऽ	
३	×

(२)

धप धप मम म–	पध निसं धप मम
म– पध निसं रेंगं	मंगं रेंसं निध पम

। म-	म-	गम	पध	निसं	रेंसं	निध	पम
३				×			

-	प	-	धनि
ऽ	बा	ऽ	बुल
२			
०			

(३)

गम	धनि	सं-	--	रेंसं	--	संनि	धप

गम	पध	प-	--	पम	गरे	रेम	गरे
३				×			

	-	प	धनि
स-	ऽ	बा	बुल
२			
×			

(४)

				गम	परे	--	स-

	गम	पध	निसं	निधि	पग	मप	रे–	स–
	धनि	संरें	गम	पध	निसं	रेंसं	निध	पम
	२				०			
			स	नि				
	गरे	स–	छु	टो				
	३				×			
(५)	संनि	धप	मप	धनि	निध	पम	गम	पध
	३				×			
	धप	मग	रेग	मप	पम	गरे	सरे	गम
	२				×			
	मग	रेस	निस	रेग	गरे	सनि	धनि	सरे
	३				×			

		प	धनि
मग	रेस	बा	बुल
२			

नोट—इसकी बाबत इस किताब की भैरवी में दी हुई किसी चीज़ का नोट देख लीजिये। यह शादी के मौक़े पर दूल्हन की बिदाई के वक़्त गाया जाता है।

राग भैरवी—ताल दादरा

स्थायी—बालम नैया डगमग डोले

अन्तरा—झाँझर नइया खेवत मतवाले बुलाये नहीं बोले
बुलाये नहीं बोले।

स्थायी

—	—	म	—	म	प	गरे	म	म	ग	रे	नि
ऽ	ऽ	बा	ऽ	ल	म	नैऽ	ऽ	ऽ	या	ऽ	ड
×			०			×			०		
सा	—	रे	ग	म	—	रे	—	सा	सा	—	—
ग	ऽ	ऽ	म	ग	ऽ	डो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

सा	रे	म	—	म	प						
ऽ	ऽ	बा	ऽ	ल	म						
×			०								

अंतरा

ध	ध	म	ध	—	नि	सां	सां	—	सां	—	—
झां	ऽ	ऽ	झ	ऽ	र	न	इ	ऽ	या	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि	—	नि	नि	सां	सां	रें	नि	सां	नि	ध	प
खे	ऽ	व	त	म	त	वा	ऽ	ऽ	ले	ऽ	बु
×			०			×			०		

प	—	प	ध	नि	नि	ध	प	ध	प	म	ग
ला	ऽ	ये	न	हीं	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	बु
×			०			×			०		

रे	सा	रे	स	म	म	रे	—	सा	स	—	—
ला	ऽ	ये	न	हीं	ऽ	बो	ऽ	ऽ	ले	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

—	—	म									
ऽ	ऽ	बा									
×											

तानें

(१)

											नि
सरे	गम	पध	पम	गरे	सरे	गम	मम	गरे	स—	——	ऽ
×			०			×			०		

(२)

											नि
निसं	धनि	पध	मप	गम	गम	पध	पम	गरे	स—	——	ऽ
×			०			×			०		

(३)	सनि धप धनि	सरे स– ––	सरे गम पध
	०	×	०
			नि
निध पम गरे	सरे गम पध	निसं रेंसं निध	पम गरे सढ
×	०	×	०
(४)			सरे गम मम
			०
गम पध निध	धनी संरें गरें	संरें संनि धप	सम गरे स–
×	०	×	०
			नि
(५) धम गम धनि	संरें निसं धनि	सरें धप मग	रेंस –– ढ
×	०	×	०

नोट—इसके गाने के वास्ते इस किताब के किसी भैरवी के गाने का नोट देख लीजिये।

ठुमरी मांड तीन ताल

स्थायी – बीत गई सारी रात सखि मोहे पिया बिन गिनती तारे ।

अन्तरा—अखियाँ मोरी दरवजवा लगी हैं कब घर आवें प्रेमी हमारे ।

स्थायी

— रे म रे	म — प ध	सां - सं सं	सं रेंसं नि ध
ऽ बी त ग	ई ऽ सा री	रा ऽ त स	खि ऽऽ मो हे
०	३	×	२

— ध ध —	प ध म म	म म प ग	- सरे गग रेस
ऽ पि या ऽ	ऽ ऽ बि न	गि न ती ऽ	ऽ ताऽ ऽऽ रेऽ
०	३	×	२

— रे म रे	धम प ध ध		
ऽ बी त ग	ईऽ ऽ सा री		
०	३		

अंतरा

म म प ध	सं — सं —	संसं संसं संरें संनि	ध— — ध —
अ खि याँ ऽ	मो ऽ रि ऽ	दर वज वाऽ लऽ	गीऽ ऽ हैं ऽ
०	३	×	२

म म प ध	सं — सं —	निध प म म	रे — स —
क ब घ र	आ ऽ वें ऽ	प्रेऽ ऽ मी ह	मा ऽ रे ऽ
०	३	×	२

— रे म रे	म — प ध		
ऽ बी त ग	ई ऽ सा री		
०	३	×	२

तानें

(१)	सरे मप धसं निध	—नि धप मग रेस
	×	२

(२)	पध	निसं	रेंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	स–
	×				२			
(३)	सरे	मप	धसं	निध	–नि	धप	मग	रेस
	०				३			
	पध	निसं	रेंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	स–
	×				२			
(४)	संनि	धप	म–	पग	–म	गरे	स–	सरे
	×				२			
	म–	मप	ध–	पध	नि–	धनि	सं–	धनि
	०				३			
	संरें	गंरें	संनि	धप	मग	रेस	सरे	गस
	×				२			

(५)	सरे	मप	धप	म–	पध	संनि	ध–	धनि
	०				३			

संरें	संनि	धप	निध	पम	ग–	रेग	स–
×				२			

नोट—मांड की आरोही स रे म प ध सं, अवरोही सं नि ध, प, म ग, स रे ग स। सं वादी और प समवादी, इसमें गाते-गाते नि के ऊपर ज़ोर दे देते हैं, तो बड़ा अच्छा मालूम होता है और अवरोही में कभी-कभी कोमल नि भी देते हैं। इस चीज़ में सम्पूर्ण तान भी लगा सकते हैं। इसके गाने का वक़्त रात का पिछला पहर है।

खयाल रीतुवाई तीन ताल

अस्थायी—भली बनी श्याम मुरत ताको बिधना आप बनायो।

अन्तरा—गोरे मुख पे अलखें नागन सी चंद्र शीश जस बादर छायो।

स्थायी

– स स स	गरे ग स स	मरे म म म	रे म प प
ऽ भ ली ब	निऽ ऽ श्या म	मुऽ ऽ र त	ऽ ता ऽ को
०	३	×	२

प प प –	प म ध प	ध ग म ग	रे ग रे स
बि ध ना ऽ	आ ऽ प ब	ना ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ यो ऽ
०	३	×	२

— स स स	गरे ग स स		
ऽ भ ली ब	नीऽ ऽ श्या म		
०	३		

अन्तरा

म — म प	नि नि नि नि	सं – सं –	सं सं सं –
गो ऽ रे मु	ख पे अ ल	खें ऽ ना ऽ	ग न सी ऽ
०	३	×	२

सं सं सं नि	नि ध प म	ग ग म ग	रे ग रे स
चं अं द्र सी	ऽ स ज स	बा ऽ द र	छा ऽ यो ऽ
०	३	×	२

–स स स	गरे ग स स		
ऽभ ली ब	नीऽ ऽ श्या म		
०	३	×	२

तानें

(१)

मग	रेस	सरे	गम	पध	निध	पम	गरे
–	स	स	स	गरे	ग	स	स
गरे	भ	ली	ब	निऽ	ऽ	श्या	म
०				३			

(२)

गम	गम	रेग	रेग	सरे	सग	रेस	निस
गम	पनि	संरें	संनि	धप	मग	रेंग	रेस
—	स	स	स	गरे	ग	स	स
निस	भ	ली	ब	नीऽ	ऽ	श्या	म
२				३			

(३)	सरे	गम	पध	पम	पध़	निध	पम	गम
	०				३			
	पनि	संरें	संनि	धप	मग	रेग	रेस	निसं
	×				२			

(४)	सरे	गम	पनि	संरें	गंमं	रेंमं	संरें	निसं
	०				३			
	रेंसं	निध	पम	गम	रेग	रेस	सरे	गम
	×				२			

(५)					सरे	गम	नि-	सरे
	गम	पनी	संरे	गम	पनि	संरें	गंमं	पंमं
	०				३			
	गंरें	गंरें	संनि	धप	मग	रेग	रेस	सरे
	×				२			
	—	स	स	स	गरे	ग	स	स
	गम	भ	ली	ब	नीऽ	ऽ	श्या	म
	०				३			

नोट—यह जयजयवंती का एक रूप है और रे गम की तान इसमें बार बार आती है। और बाक़ी सब बातें जयजयवंती राग की ऐसी हैं।

ठुमरी देश तीन ताल

स्थायी—पनिया जो भरन गई बीच डगर मोहे घेरे ऐसो
चंचल छयल निपट निडर नटखट हमरी कछु
नहीं सुने रे।

अन्तरा—लपट झपट पनघट पर गागर छीन लियो मोसे हाय
गौहर प्यारी मैंने बांसुरी की धुन आज कैसी सुने रे।

स्थायी

– – म प	निसं रें सां नि	पध पध म गरे	रे ग स स
ऽ ऽ प नि	याऽ ऽ जो भ	रऽ नऽ ग ईऽ	बी ऽ च ड
३	×	२	०

रे रे म प	निध निध प ध	प ध म गरे	रे ग रे प
ग र मो हे	घेऽ ऽऽ ऽ ऽ	रे ऽ ऐ सोऽ	चं च ल छ
३	×	२	०

म ग नि़ स	रे ग रे ग	स रे नि़ स	रे रे म प
य ल नि प	ट नि ड र	न ट ख ट	ह म री क
३	×	२	०

नि नि सां सां	निसां रें – –	नि धापा म प	निसां रें सां नि
छु न हीं सु	नेऽ ऽ ऽ ऽ	रे ऽऽ प नि	याऽ ऽ जो भ
३	×	२	०

प ध म प
र न प नि
३

अन्तरा

म म म प
ल प ट झ
०

नि नि नि नि	सां सां सां सां	सां सां सां सां	नि – नि नि
प ट प न	घ ट प र	गा ऽ ग र	छी ऽ न ली
३	×	२	०

सां - सां सां	निसां रें - -	नि - धा प	प ध प निऽ
नो ऽ मो से	हाऽ ऽ ऽ ऽ	ए ऽ ऽ ऽ	गाँ ह र प्या
३	×	२	०

धप ध म गरे	रे ग रे म	गरे ग नि स	- रे म प
ऽऽ री मैं नेऽ	बाँ ऽ स री	कीऽ ऽ धु न	ऽ आ ऽ ज
३	×	२	०

नि - नि सां	निसां रें - -	नि धप म प	निसां रें सां नि
कै ऽ सी सु	नेंऽ ऽ ऽ ऽ	रे ऽऽ प नि	याऽ ऽ जो भ
३	×	२	०

प ध म प
र न प नि
३

तानें

(१)

	सरे मप निस रेंसं
२	०
मप निध पम गरे, पनि	
३	×

(२)

	मप ध— मग रे—
	×
रेम पध निध प—	पनि संरें मंगं रेंसं
२	०
मप निध पम गरे, पनि	
३	×

(३)

	निध निप धम पम
	०

धप	निध	पम	गरे	निस	रेम	पनि	संरें
३				×			
संनि	धप	मग	रेम	गंरें	संनि	संरें	संनि
२				०			

			मप
धप	मग	रे—,	पनि
३			

(४)

निस	रेम	पध	रे—	निस	रेम	पनि	संरें
३				×			
रे—	निस	रेम	पनि	संरें	मंगं	रेंसं	निध
२				०			

			मप	
पम	गरे	सरे,	पनि	
३				×

(५)

				सनि़	रेस	गरे	मरे
				×			
पम	धप	निध	निप	संनि	रेंसं	गंरें	मंगं
२				०			

रेंसं	निध	पम	गरे
३			

नोट—इसको गाने के लिये देस के किसी गाने का नोट देख लीजिये। इसका सम 'विषय' है यह घूम फिर कर सम पर आती है।

ठुमरी पहाड़ी झिंझोंटी—तीन ताल मध्य लय

स्थायी—पिया बिन नाहिं आवत चैन कासे कहुँ जी के बैन।
अन्तरा-याद परत है हैदर निस दिन बाँकी सुरतियां तीखे नैन।

स्थायी

प	प	-	पध	ग	-	प	म	रेग	स	रे	गम	ग	—	—	सा
पि	या	ऽ	बिन	ना	ऽ	ऽ	हीं	आऽ	ऽ	व	तऽ	चै	ऽ	ऽ	न
२				०				३				×			

रेग सरे म म	प - प -	— ध सां —	नि– धप ध– प–
कऽ ऽऽ से का	हुँ ऽ में ऽ	ऽ जी के ऽ	बेऽ ऽऽ ऽऽ नऽ
२	०	३	×

धसां धसं -नि धप	मप ध — म	रेग स रे गम	ग — — सा
पिऽ याऽ ऽऽ बिन	नाऽ ऽ ऽ हिं	आऽ ऽ व तऽ	चै ऽ ऽ न
२	०	३	×

अन्तरा

रे — म म	प प प —	प — प धप	— प ध सं
या ऽ द प	र त है ऽ	है ऽ द रऽ	ऽ निस दि न
२	३	३	×

नि — नि नि	सां सं सं —	- नि नि सं	निनि धप ध- प-
बाँ ऽ की सु	र ति यां ऽ	ऽ ती ऽ खे	नेऽ ऽऽ ऽऽ नऽ
२	०	३	×

धसं धसं -ने धप	मप ध — म	रेग स रे गम	ग — — स
पिऽ याऽ ऽऽ बिन	नऽ ऽ ऽ हीं	आऽ ऽ व तऽ	चै ऽ ऽ न
२	०	३	×

तानें

(१)

	रेस निध पध स-

सरे गम रेग सनि	धप धस सरे मप
२	०

धप मग रेग वत (गम)	
३	×

(२)

संनि धप पध सं-	संरें गंसं निध प-

पध	सं-	सरे	मप	धसं	रेंगं	रेंसं	निध
२				०			

			गम	
पम	गरे	स-	वत	
३				×

(३)

रेस	निध	पध	स-	सरे	गम	रेग	सनि
३				×			
धप	धस	सरे	मप	धप	मग	रेग	गम
२				०			
संनि	धप	पध	सं-	संरें	गंसं	निध	प-
३				×			
पध	सं-	सरे	मप	धसं	रेंगं	रेंसं	निध
२				०			

			गम					
पम	गरे	स-	वत					
३					×			

(४)						सरे	गम	गरे	रेम
						×			
	पध	पम	गरे	मप		धसं	रेंगं	रेंसं	निध
	२					०			

			गम					
पम	गरे	स-	वत					
३					×			

(५)						पम	पग	सरे	गस
						०			

सरे	मप	धप	मग	रेंसं	रेंग	स–	सरे
३				×			

मप	धसं	रेंगं	मंगं	रेंसं	निध	पम	गरे
२				०			

			गम	
स–	रेग	मग	बत	
३				×

नोट—आरोही स रे ग म प ध नि ध प, ध सं अवरोही सं नि ध प म ग, स रे ग स इसमें पहाड़ी झिंझोंटी की सूरत तो बहुत ज्यादा दिखाई देती है, मगर कभी-कभी सं नि ध प की तान आती है। इसमें स रे ग स जब तिलक-कामोद की तरह मींड़ में लगाया जाता है, तो अच्छा मालूम होता है। इसके गाने का वक़्त भी यमन के बाद है। कुछ लोग इसको खमाज अंग से भी गाते हैं और ऐसा मालूम होता है कि पहाड़ी झिंझोंटी खमाच, मांड और तिलक कामोद मिले-जुले हुए गाये जा रहे हैं।

धुन राग गारा—ताल कहरवा

स्थायी—तुम से लागे मोरे नैन अनारी सैयाँ।

अन्तरा—जब लगत तब लगत न जाने अब लागे दुख देने
अनारी सैयाँ।

स्थायी

	– सा नि़ सा	सा रे सा नि़	ध़ – ध़ नि़
	ऽ तु म से	ला गे मो रे	नै ऽ न अ
	०	×	०
×			

सा रे नि़ सा	—		
ना री सै याँ	ऽ		
×	०		

अन्तरा

	– ध़ ध़ नि	सा रे नि़ सा	रे ग म ग
	ऽ ज ब ल	ग त त ब	ल ग त न
×	०	×	०

रे ग रे सा	– सा नि़ सा	सा रे सा नि़	ध़ – ध़ नि़
जा ऽ ने ऽ	– श्र ऽ ब	ला गे दु ख	दे ऽ ने श्र
×	०	×	०

सा रें नि़ सा	—		
ना री सै याँ	ऽ		

तानें

(१)	ध़नि़ सनि़ सरे नि़स	रेग मग रेग रेस
	२	३
	नि़स रेस नि़ध़ नि़स	— स नि़ स
		तु म से
	×	०

(२)	ध़नि़ सरे गम पम	गरे सनि़ ध़नि़ स–
	२	३
	पध पनि धप मग	मरे सरे नि़स रेस
	×	०

(३)

				निसु	रेग	मप	धनि
संरें	गंमं	गंरें	गंरें	संनि	धप	मग	रेस
निध	निस	रेग	रेस	—	स	नि	स
					तु	म	से

(४)

धनि	संरें	निसं	रेंसं	मंगं	रेंगं	रेंसं	निसं
रेंसं	निध	पम	गरे	गरे	सनि	स-	रेस
×				०			

(५)

सनि	धग	रेस	मग	पम	धप	मग	धनि
संरें	गंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	गरे	स-
×				०			

नोट—इसके वास्ते राग ग़ारे की किसी चीज़ का नोट देखिए।

दादरा—ज़िला खमाज

स्थायी—ठाढ़े रहियो मोरे श्याम गागरिया मैं घर धर आऊँ।
अन्तरा—सास ननँद को देके दिलासा चली चलूँगी तोरे धाम।

स्थायी

–	नि़	सा	रे	रे	ग	रेग	म	प	म	ग	म
ऽ	ठा	ढ़े	रहि	यो	ऽ	ऽऽ	मो	रे	श्या	ऽ	ऽ
०			×			०			×		

रेग	नि़	स	ग	गग	ग	ग	गग	गग	म	ग	म
मऽ	ठा	डे	गा	गरि	या	मैं	घर	धर	आ	ऽ	ऽ
०			×			०			×		

रेग	नि़	स
ऊँऽ	ठा	डे
०		

अन्तरा

म	प	—	नि	—	नि	सं	—	सं	सं	—	प
सा	ऽ	ऽ	सा	ऽ	न	नं	ऽ	द्	को	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि	—	—	सं	सं	सं	नि	ध	नि	प	—	—
दे	ऽ	ऽ	के	ऽ	दि	ला	ऽ	ऽ	सा	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि	सं	नि	ध	नि	ध	प	ध	प	म	प	ग
च	ऽ	ली	च	ऽ	लुं	गी	ऽ	मैं	तो	ऽ	रे
×			०			×			०		

म	ग	म	रेग	नि़	स	रे	रे	ग	रेग	म	प
धा	ऽ	ऽ	मऽ	ठा	ढ़े	रहि	यो	ऽ	ऽऽ	मो	रे
×			०			×			०		

तानें

(१)

सरे गम गरे	गम पध पम	सरे गरे सरे	निस मो रे (म प)
×	०	×	०

(२)

		निस रेग मप	धनि संरें गरें
		×	०
संनि धप मग	रेस मो रे (म प –)		
×	०		

(३)

		रेस निध पध	निस रेग मप
धनि संरें गरें	संनि धप मग	संनि धप मग	रेस निस रेग
×	०	×	०

(४)

		मग रे– गम	पम गरे –ग
मप धनि धप	मग रे– गम	पध निसं निध	पम गरे –ग
मप धनि संरें	संनि धप मग	रे– गम पध	निसं रेंगं रेंसं
निध पम गरे	सरे निस रेस		
×	०	×	०

(५)

सरे गम पध	निसं रेंगं मंगं	गंरें संनि निध
पम मग गरे	स– नि– स–	

नोट—यह दादरा बड़े मज़े का है। नि स रे की तान बार-बार आती है, आरोही स रे ग म प ध नि, ध प नि सं, अवरोही सां नि ध प म ग रे स। रे वादी और प समवादी है। इसमें देश की तरह म ग रे की मींड आती है। इसमें उपजयित अंग स्वभाव का सा हिसाब है, यानें जैसी उसकी बढ़त वैसी ही उसकी तानें। इस चीज़ को आप सुबह के अलावा जब चाहें, शौक़ से गा सकते हैं।

ठुमरी काफ़ी सेंदुरा—ताल त्रिताला

स्थायी—चलो मदन मोहन मेरो मन रिझाये अधर मधुर
मुरलीकर धर बजाये।

अन्तरा—बिंद्राबन की कुंज गलिन में बंसिया बजाये मोरा
मनवा लुभाये।

स्थायी

रे ग रे म	ग रे नि़ स	रे ग म प	ध ग — म
च लो म द	न मो ह न	मे रो म न	रि झा ऽ ये
२	०	३	×

प नि सां रें	नि सां नि ध	प ध प सां	नि ध ग म
अ ध र म	धु र मु र	ली क र ध	र ब जा ये
२	०	३	×

अन्तरा

म प नि –	सां सां सां सां	सां सां रें नि	सां सां सां सां
बिं ऽ द्रा ऽ	ब न की ऽ	कुं ऽ ज ग	लि न में ऽ
२	०	३	×

प नि सां रें	नि सां नि ध	प प म प	ध ग – म
बं सी या ब	जा ये मो रा	म न वा ऽ	लु भा ऽ ये
२	०	३	×

तानें

(१)

सा रे म प	ध नि सां रें	सां नि ध प	म ग रे सा
२	०	३	×

(२)

			सा रे म प
			मे रो म न
			×

ध – स रे	म प ध –	सा रे म प	ध ग – म
री – मे रो	म न री –	मे रो म न	रि भा ऽ ये
२	०	३	×

(३)	मग	रेनि	स-	रेग		मप	धनि	सांनि	धनि
	२					०			
	पम	गरे	मग	रेसा		निध	पम	गरे	सा-
	३					×			
(४)	गंमं	गंरें	गंरें	सांनि		धनि	पम	गरे	गम
	३					×			
	पध	निसां	रेंगं	मंपं		मग	रे-	पध	निप
	२					०			
	मग	रे-	सारे	निसा		पम	निप	गरे	सा-
	३					×			
(५)	निसा	रेग	मप	रेग-		रेग	गरे	सारे	निसा
	३					×			

रेग	मप	धनि	सांरें	गंमं	गंरें	सांनि	धप
२				०			

मप	धनि	सरें	गंमं	पंमं	गंरें	संनि	धप
३				×			

म	प	नि	—
बिं	ऽ	द्रा	ऽ
२			

(६)

पृधृ	निृसा	रेग	मप	ध	ग	ग	म
मे—	रो—	म—	न—	रि	झा	ऽ	ये
३				×			

पृधृ	निृसा	रेग	मप	ध	ग	—	म
मे—	रो—	म—	न—	रि	झा	ऽ	ये
२				०			

पध	निसा	रेग	मप	ध	ग	—	म
मे	रो	म	न–	रि	झा	ऽ	ये
३				×			

(७)

रेंगं	रेंगं	पध	पनि	रेग	रेम	मप	धनि
गरें	सां–	धप	म–	गरे	सा–	सांरें	गरें
०		३		×		२	

(८)

सानि.	रेसा	पम	धप	रेंसं	गंरें	निध	पम
गरे	मग	निध	सांनि	मंगं	रेंसं	गरे	सानि
०		३		×		२	

नोट—इस राग में काफ़ी और सिंधुरा को अच्छी तरह मिलाया है। आरोही स रे म प नि सं अवरोही स नि ध प म ग म ग रे स। इसमें ध ग म रे ग रे तान वारंवार आना चाहिये। रे वादी और प समवादी है। यह सुबह के अलावा हर वक़्त गाया जा सकता है।

राग भैरवी—ताल दादरा

स्थायी—छाँड़ दे गले बाईं श्याम भोर भई आंगना ।

अन्तरा—दीपक की जोत गई तारन को चाँदना पनघट पन-
हारी चली हमहू चली जमुना ।

स्थायी

प	प	प	प	प	प	धप	ध	म	पम	प	ग
छां	ऽ	ड़	दे	ग	ले	बाऽ	ऽ	ईं	श्याऽ	ऽ	म
×			०			×			०		

सा	—	रे	ग	म	म	गरे	ग	रे	सा	—	—
भो	—	र	भ	ई	ऽ	आंऽ	ऽ	ग	ना	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

अन्तरा

ध	--	म	ध	—	नि	सां	—	सां	रें	सां	—
दी	ऽ	प	क	ऽ	की	जो	ऽ	त	ग	ई	ऽ
×			०			×			०		

नि	—	नि	नि	सां	सां	सां	रें	सां	नि	ध	प
ता	ऽ	र	न	को	ऽ	चां	ऽ	द	ना	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

प	प	प	प	प	प	धप	ध	म	प	ग	—
प	न	घ	ट	प	न	हाऽ	ऽ	री	च	ली	ऽ
×			०			×			×		

सा	सा	रे	ग	म	—	गरे	ग	रे	सा	–	–
ह	म	हू	च	ली	ऽ	जऽ	ऽ	मु	ना	ऽ	ऽ
×			०			×			×		

तानें

(१)

धप	मग	मप	धप	मग	मप	धप	मग	मप	धप	मग	रेस
×			०			×			०		

(२)

गम	पध	निसं	निध	पम	पध	निसं	निध	पम	गरे	सनि	स–
×			०			×			०		

(३)

धप मग मप	धप मग मप	धप मग मप	धप मग रेस
गम पध निसं	निध पम पध	निसं निध पम	गरे सनि स–
×	०	×	०

(४)

			धनि सरे गम
पध निसं रेंसं	निध निसं रेंसं	निध पम गरे	सरे निस गम
×	०	×	०

(५)

धनि संरें गंरें	संरें संनि धनि	रेग मम मग	रेग मग रेस
×	०	×	०

नोट—इस गाने में तानें भैरवी का रंग देखकर कुछ थोड़े-से तीव्र सुरों से काम लिया है। बाक़ी सब बातें भैरवी की हैं।

ठुमरी भैरवी—तीन ताल

स्थायी—छोड़ो छोड़ो मोरि बहियाँ पिया मोरि मुरकी कलाई, छोड़ो छोड़ो नाहीं नाहीं अब देती हुँ दुहाई मैं रे हाये।

अन्तरा—मोहे छतियों से अपनी लगा, मोहे सारी बतियाँ बता, मैंने जान लिया प्यारी मोरे यार तु कटीली तोबा तोबा जिसने तेरा नाम भी लिया हो।

स्थायी

			- - सा नि
			ऽ ऽ छो ड़ो
०	३	×	२
सा रे ग म	ग रे सा नि	सा - - -	- - नि सा
छो ड़ो मो रि	ब हि याँ पि	या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ मो रि
०	३	×	२
सा ध प ध	प प म प	ध नि ध प	म म म म
मु र की क	ला ई छो ड़ो	छो ड़ो ना हीं	ना हीं अ ब
०	३	×	२

सां सां सां सां	सां सां सां नि	सां – – –	– सा सा नि
दे ती हुँ दु	हा ई मैं रे	ह ऽ ऽ ऽ	ऽ ये छो ड़ो
०	३	×	२

अन्तरा

			– – स नि
			ऽ ऽ मो हे
			२

स रे ग म	ग रे स नि	स – – –	– – स नि
छ ति यों से	अ प नी ल	गा ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ मो हे
०	३	×	२

स रे ग म	ग रे स नि	स – – –	– – स नि
सा री ब ति	यां ऽ ब त	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ मैं ने
०	३	×	२

सा ध प ध	प प म प	ध नि ध प	म म – –
जा न लि या	प्या री मे रि	या र तु क	टी ली ऽ ऽ
०	३	×	२

म म म म	म म म म	म म ग रे	सा सा सा नि
तो बा तो बा	जिस ने ते रा	ना म भी लि	या हो छो ड़ो
०	३	×	२

तानें

(१)	सरे गम पध निसं	निध पम गम पध
	०	३

	स नि
निसं रेंसं निध पम	गरे स– छोड़ो
×	२

(२)	संरें	संरें	निसं	निसं	धनि	धनि	पध	पध
	०				३			
							स	नि
	मप	मप	गम	गम	रेग	रेग	छो	ड़ो
	×				३			
(३)	संनि	रेस	गरे	मग	पम	धप	निध	सं–
	०				३			
								सनि
	निसं	धनि	पध	मप	गम	रेग	सरे	छोड़ो
	×				२			
(४)	पध	निसं	संरें	सं–	संरें	गंमं	गंरें	सं–
	०				३			

							सनि
गम	पध	निसं	रेंसं	निध	पम	गरे	छोड़ो
×				२			

(५)

धनि	सरे	स–	धनि	सरे	गम	गरे	स–
×				२			
गम	पध	पम	गरे	स	गम	पध	निसं
०				३			

							सनि
रेंगं	मंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	स–	छोड़ो
×				२			

नोट—इसके वास्ते किसी भैरवी का नोट देख लीजिये। इसमें तार सप्तक के स से मध्य सप्तक के सा तक बड़े मज़े की मींड है। और मध्यमों की लड़न्त मज़ेदार है।

ठुमरी छायानट—तीन ताल

स्थायी—डोले रे जोबन मदमाती गुजरिया सांवरी सुरत पर पतर नजरिया।

अन्तरा—लट पट चाल चलत कुञ्जन में ओढ़े कुसम रंग लाल चुनरिया।

स्थायी

रे ग रे प	म गरे नि़ सा	रे ग रे ग	म प म गम
डो ले रे जो	ब नऽ म द्	मा ऽ ती गु	ज रि या ऽऽ
०	३	×	२
प नि सां रें	नि सं ध प	ग ग ग रे रे रे ग	म प ग गम
सां व री सु	र त प र	प र त न	ज रि या ऽऽ
०	३	×	२

अन्तरा

प प प प	पध नि– नि नि	सां सां सां सां	सां रें सां सां
ल ट प ट	चाऽ ऽऽ ल च	ल त कुं ऽ	ज न में ऽ
०	३	×	२

प नि सां रें	नि सां ध प	ग ग ग रे रे रे ग	म प म गम
ओ ऽ ढ़े कु	स म रं ग	ला ऽ ल चु	न रि या ऽऽ
०	३	×	२

तानें

(१)

गम निध प— रे—	गम पम गम रेसा
×	२

(२)

सा ध़ नि़ प	सा — रे सा
०	३
रे रे गम प—	मग म रे— सा—
×	२

(३)

साध़ निप पप़ सा—	रे— ग— म— प—
०	३

	रेग	मप	धध	निप	रेग	मप	मग	रेसा
	×				२			
(४)	सारे	गम	पध	निसां	रेंनि	सांध	नि-	प-
	०				३			
	रेग	मप	रें-	ध-	रेग	मप	मग	रेसा
	×				२			
(५)	रेगमपध		निसांरेंगंमं		पंधंपंमंगं		रेंसांनिधप	
	×				२			

नोट—छाया राग की आरोही स, रे ग म प, नि ध सं। अवरोही सं ध नि प, रे ग म प, म ग म रे स। इसमें प रे स की मींड बड़ी भली मालूम होती है। म प ध म प की तान भी आती है और पुरानी चीजों में रे ग रे म ग रे कभी-कभी आता है। इसमें सरे, रेग, गम, मप की तान बड़ा मजा देती है। और ग म नि ध प की तान भी अच्छी मालूम होती है। रे वादी और प समवादी है। गाने का वक़्त आम तौर पर यमन के बाद है।

होली—ताल चाचर (मध्यलय)

स्थायी – राधा नन्दकुँवर समझाय रही होली खेलो बसन्त
ऋतु आय रही।

अन्तरा—अंबुवा बौरीला टेसुवा फूले सगरी चमेली बन छाई
ऊँची डाल पै मुरलारे बोलै कोयल कूक सुनाय रही।

स्थायी

ग	म	प	ध	म	ग	म	ग	रे	ग	स	रे	ग	रे
रा	ऽ	धा	ऽ	नं	ऽ	ऽ	द	ऽ	ऽ	कुँ	व	ऽ	र
३				×			२				०		

ग	म	प	म	प	—	—	प		–	प	म	ग	—
स	ऽ	ऽ	म	झा	ऽ	ऽ	य	ऽ	ऽ	र	ही	ऽ	ऽ
३				×			२				०		

ग	म	प	ध	नी	—	—	सां	–	–	सं	सां	—	सं
हो	ऽ	ऽ	ली	खे	ऽ	ऽ	लो	ऽ	ऽ	ब	सं	ऽ	त
३				×			२				०		

नी ध प ध	नी ध नी	ध प ध प	म ग —
ऋ ऽ ऽ तु	आ ऽ ऽ	ये ऽ ऽ र	ही ऽ ऽ
३	×	२	०

ग म प ध	म ग म	ग रे ग स	रे ग रे
रा ऽ धा ऽ	नं ऽ ऽ	द ऽ ऽ कुँ	व ऽ र
३	×	२	०

ग म प म
स ऽ ऽ म
३

अन्तरा

म प —	रें — — रें	रें — —
अं बु ऽ	वा ऽ ऽ बौ	री ऽ ऽ
×	२	०

गं	रें	गं	रें	सां	रें	—	नी	—	—	—	सां	—	—
ला	ऽ	ऽ	ऽ	टे	सु	ऽ	वा	ऽ	ऽ	ऽ	फू	ऽ	ऽ
३				×			२				०		

सां	—	—	—	नी	नी	—	धा	—	—	प	प	ध	म
ले	ऽ	ऽ	ऽ	स	ग	ऽ	री	ऽ	ऽ	च	मे	ऽ	ली
३				×			२				०		

प	—	—	ध	नी	—	—	—	—	—	—	सां	—	—
ब	ऽ	ऽ	न	छा	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ई	ऽ	ऽ
३				×			२				०		

—	—	—	—	ग	—	—	ग	—	—	ग	—	—	ग
ऽ	ऽ	ऽ	ऽ	ऊँ	ऽ	ऽ	ची	ऽ	ऽ	डा	ऽ	ऽ	ल
३				×			२				०		

ग म प ध	नी सां –	नी ध नी ध	प — ध
प ऽ ऽ र	मो रा ऽ	ला ऽ ऽ रे	बो ऽ ऽ
३	×	२	०

प – – –	नी – –	नी – – नी	सां – –
ले ऽ ऽ ऽ	को ऽ ऽ	य ऽ ऽ ल	कू ऽ ऽ
३	×	२	०

नी ध प ध	नी ध नी	प – ध प	म ग –
क ऽ ऽ सु	न ऽ ऽ	ए ऽ ऽ रा	ही ऽ ऽ
३	×	२	०

ग म प ध			
रा ऽ धा ऽ			
३			

तानें

(१)		गम पध नीसं
		×
	नीसं संनी धप मग	पध मग नीध
	२	०
(२)	गम पध नीसं रेंसं	गरें संमं गरें
	३	×
	सांरें सांनी धप मग	पम गरे म-
	२	०
(३)		गम पध नीसं
		३
	रेंगं रेंसं नीसं रेंनी	रेंसं नीध पम
	×	२

गरे	स-	रेंनी	धप
०			

(४)

मप	नीसं	रेंगं
३		

रें-	धप	-ग	रेंसं	रेंनी	सांसं	नीध
×				२		

पम	गम	गरे	स-
०			

(५)

मप	धनी	संगं	मंगं	रेंसं	नीसं	रेंगं
३				×		

रेंसां	रेंग	मप	धनी	सांरें	सांनी	धप
२				०		

नोट—इस होली में भी खमाज की ऐसी तानें लगेंगी और उतरी तथा चढ़ी 'गधार' (दोनो 'ग') लगाई जाती है। जरा देर ऊपर के 'सं' पर ठहर जाने के बाद फिर 'ग' से (मध्य सप्तक के 'ग' से) तान शुरू करना अच्छा मालूम होता है। जैसे कि " ग म प ध नी सां ऽ ऽ ग म प ध नी ध प म ग।"

खमाज की तरह इसकी आरोही में 'सा' से 'ग' पर नहीं जाते बल्कि 'सारे गम प' जाते हैं और सब बातें खमाज की सी हैं।

चैती—ताल कहरवा

स्थायी—राज गयेले कौन देश कोयलिया कूकत बन में।

अन्तरा—एक तो देवरनियाँ दूजे सवतिया तीजे पिया परदेश।

स्थायी

— रे म प	ध ध मप धनि	ध — मप रे	रे म प —
ऽ रा ज ग	य ले ऽऽ कौन	दे ऽ शाऽ को	य लि या ऽ
×	०	×	०
रे रेग सरे मप	धनि पध म ग	रे रे म प	ध ध मप धनि
ऽ कूऽ ऽऽ कत	वऽ नऽ में ऽ	ऽ रा ज ग	ये ले ऽऽ कौन
×	०	×	०

अन्तरा

– गम प ध–	सं सं सं —	— सं नि सं	नि सं नि ध
ऽ एक तो देव	र नि याँ ऽ	ऽ दू जे स	व ति या ऽ
×	०	×	०

— ध ध नि	ध प ध नि	ध प म म	म म प —
ऽ ती जे पि	या ऽ प र	दे ऽ स को	य लि या ऽ
×	०	×	०

रे रे म प–	धनि पध म ग	रे रे म प	ध ध मप धनि
ऽ कू ऽ कत	बऽ नऽ में ऽ	ऽ रा ज ग	ये ले ऽऽ कौन
×	०	×	०

तानें

(१)	मप धनि धप मप	धनि धप मग रेस
	×	०

—	रे	म	प	ध	ध	मप	धनि
ऽ	रा	ज	ग	ये	ले	ऽऽ	कौन
×				०			

(२)

सरे	मप	धसं	रेंगं	रेंसं	निध	पम	गरे
×				०			

स-	रे	म	प	ध	ध	मप	धनि
ऽऽ	रा	ज	ग	ये	ले	ऽऽ	कौन
×				०			

(३)

मप	धनि	धप	मप	धनि	धप	मग	रेस
×				०			

सरे	मप	धसं	रेंगं	रेंसं	निध	पम	गरे
×				०			

—	रे	म	प	ध	ध	मप	धनि
ऽ	रा	ज	ग	ये	ले	ऽऽ	कौन
×				०			

(४)

सरे	मप	रेम	पध	मप	धनि	मप	धसं

पध	संरें	गंरें	संनि	धप	निध	पम	गरे
×				०			
स-	रे	म	प	ध	ध	मप	धनि

ऽऽ	रा	ज	ग	ये	ले	ऽऽ	कौन
×				०			

(५)

संनि	संनि	धनि	धप	धनि	धप	मग	रेस

सरे	मप	धसं	रेंगं	रेंसं	निध	पम	गरे
×				०			

स-	रे	म	प	ध	ध	मप	धनि
ऽऽ	रा	ज	ग	ये	ले	ऽऽ	कौन
×				०			

नोट—आरोही सरे मप ध, नि धसं, अवरोही संनि धप मग रेस। इस गाने में चढ़ी धैत बहुत लगती है। जिसमें मांड राग की झलक मालुम होती है। म वादी और स समवादी है। मौसमी गाना है और चैत के महीने में अच्छा मालूम होता है।

ठुमरी भैरवी तीन ताल

स्थायी—साँवरिया ने जादु डाला बाजू बंद खुल खुल जाय।

अन्तरा—जादु की पुड़िया भर-भर मारी री क्या करे वैद बिचारा बाजु बंद खुल खुल जाय।

स्थायी

प	-	प	ध	म	प	ग	ग	ग	ग-	प	म	गरे	स	स	-
सां	ऽ	व	रि	या	ऽ	ने	ऽ	ऽ	जा-	ऽ	दु	डाऽ	ऽ	ला	ऽ
२				०				३				×			

ग	ग	ग	प	म	रे	स	नि	स	प	-	ध	प	—	—	प
ऽ	ऽ	बा	ऽ	जु	बं	द	खु	ल	खु	ऽ	ल	जा	ऽ	ऽ	यं
२				०				३				×			

अन्तरा

				-	नि	नि	नि	सं	सं	सं	-	नि	नि	सं	सं
				ऽ	जा	दु	की	पु	ड़ि	या	ऽ	भ	र	भ	र
२				०				३				×			

रेंनि	सं	ध	प	प	-	प	प	प	ध	म	म	ग	रे	स	—
माऽ	री	री	ऽ	क्या	ऽ	क	रे	वै	ऽ	द	बि	चा	ऽ	रा	ऽ
२				०				३				×			

-	ग	प	म	गरे	-	सा	नि	स	प	—	ध	प	—	—	
ऽ	बा	ऽ	जू	बं	ऽ	द	खु	ल	खु	ऽ	ल	जा	ऽ	ऽ	यं
२				०				३				×			

तानें

(१)

गम	पध	निसं	रेंसं	निध	पम	गरे	सनि	सरे	निस	बा	ऽ
३				×				२			

(२)

पम	गरे	गम	पध	पम	गरे	सनि	सग
२				०			

मप	धनि	संरें	संनि	धप	मग	रेस	सग	रेस	निस	बा	ऽ
३				×				२			

(३)

सं–	सं–	संनि	धप	मग	पम	नीध	सं–
२				०			

मसं	निध	पम	गम	पध	गम	गरे	स–	रेस	निस	बा	ऽ
३				×				२			

(४)

पध	पध	मप	गम	गम	पम	गरे	स–

निसं	निसं	धनि	पध	निध	पम	गरे	स-
२				०			

गम	पध	निसं	रेंसं	निध	पम	गरे	स-	धनि	स-	बा	ऽ
३				×				२			

(५)

निस	गम	पध	पम	गम	पध	निसं	निध
२				०			

पध	निसं	रेंसं	निध	पम	गरे	सनि	स-	मग	रेस	बा	ऽ
३				×				२			

नोट—म वादी और स समवादी है। ऐसा भैरवी की बाबत लिखा है मगर इस चीज़ में प वादी और रे समवादी है। और आजकल रिवाज में भी ऐसा ही है। आरोही स रे ग म प ध निसं अवरोही सं नि ध प म ग रे स, गाने का वक़्त सुबह का है।

धुन राग ग़ारा—ताल कहरवा

स्थायी—श्याम घुँघट पट खोली बरजोरी ।

अन्तरा—हाहा करत रही पैयाँ परत रही एक न मानी मोरी बरजोरी ।

स्थायी

— सा ग म	प धनि पध निसां	नि ध प प	मप धप म ग
ऽ श्या म धुँ	घ टऽ ऽऽ पट	खो ऽ ली ऽ	बऽ रऽ जो री
×	०	×	०

अन्तरा

— नि नि नि	सां सां सां सां	— नि नि निसां	ध नि धप मप
ऽ हा हा क	र त र ही	ऽ पैं याँ पऽ	र त रऽ हीऽ
×	०	×	०
ग ग म	प — धनि सां	नि ध प प	मप धप म ग
ऽ ए क न	मा ऽ नीऽ ऽ	मो ऽ री ऽ	बऽ रऽ जो री
×	०	×	०

तानें

१)

ध	—नि	—प	ध	—प	—म	—प	—म
—ग	स	ग	म	प	धनि	पध	निसं
ऽऽ,	श्या	म	घुँ	घ	टऽ	ऽऽ	पट
×				०			

२)

सरेग	रेगरे	गमग	मपम	पधप	धनिध	पधप	मपम
गमग	स	ग	म	प	धनि	पध	निसं
ऽऽऽ,	श्या	म	घुँ	घ	टऽ	ऽऽ	पट
×				०			

३)

रेस	गरे	मग	पम	धप	निध	सांनि	रेंसां
गंरें	मंगं	रेंस	निध	निध	पम	पध	पम
ग—	स	ग	म	प	धनि	पध	निसं
ऽऽ,	श्या	म	घुँ	घ	टऽ	ऽऽ	पट
×				०			

(४)	निसग	मपध	नि--	निसग	मपध	नि--	निसाग	मपध	
	×				०				
(५)	नी--	सा	ग	म	प	धनि	पध		
	ऽऽऽ	श्या	म	घुं	घ	टऽ	ऽऽ	गमग	
	×				०				
	मपम	पधप	धनिध	नि--	नि--	गमग	मपम	पधप	
	धनिध	नी--	नी--	गमग	मपम	पधप	धनिध	नि--	
	×				०				
	नि--	स	ग	म	प	धनि	पध	निसं	
	ऽऽऽ	श्या	म	घुं	घ	टऽ	ऽऽ	पट	
	×				०				

नोट—इसके लिये किसी गारे का बयान इस किताब के गाने में देख लीजिये यह गाना भी पंचम के मेल से है।

होली ज़िला देश—तीन ताल

स्थायी—काना नन्द को खिलाड़ी होली खेलहू न जाने।

अन्तरा—अबीर गुलाल मुख पर मारो रंग मोरा झक झोरी।

स्थायी

			सं प
			का ऽ
पनि सांरें गंसा रेंसां	नि धप ध म	म – म गरे	– – सा रे
नाऽ ऽऽ ऽऽ नंऽ	द कोऽ ऽ खि	ला ऽ ड़ी ऽऽ	ऽ ऽ हो ऽ
०	३	×	२

नि स– रे	म प – प	मप ध म गरे	– – सां प
ली ऽऽ खे	ल हू ऽ न	जाऽ ऽ ने ऽऽ	ऽ ऽ का ऽ
०	३	×	२

अन्तरा

म	प नि – नि	सां – – –	नि नि सां –
अ	बी र ऽ गु	ला ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ
०	३	×	२

सां – – म	प नि – नि	निसां रें – –	नि सां निसां रें
ल ऽ ऽ मु	ख प ऽ र	मऽ ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽऽ ऽ
०	३	×	२

नि ध प म	प नि – नि	सां – सां –	नि ध प सांप
रो ऽ ऽ रं	ग मो ऽ रा	झ ऽ क ऽ	झो ऽ री काऽ
०	३	×	२

तानें

(१)	पनि, सरे गस रेस	नि धप ध म
	०	३

							सं	प
	म	प	ध	म	ग	रे	का	ऽ
	×				२			

	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	नं	द	कोऽ	ऽ	खि
	०				३			

								संप
(२)	सरे	मप	धनि	धप	मग	रेंस	निस	काऽ

	पनि	संरें	गंसं	रेंसं	नि	धप	ध	म
	नाऽ	ऽऽ	ऽऽ	नं	द	कोऽ	ऽ	खि
	०				३			

(३)	निस	रेम	पनि	संप	निसं	रेंसं	निध	पम
	०				३			

							सं	प
	गरे	निम	रेम	पनि	संनि	रेंसं	का	ऽ
	×				२			
(४)	मग	रेस	निस	रेम	पध	पम	गरे	सनि
	०				३			
							सं	प
	सरे	मप	निसं	रेंगं	रेंसं	निसं	का	ऽ
	×				२			
(५)	सनि	रेस	गरे	मरे	पम	धप	निप	निसं
	०				३			
	रेंसं	गंरें	मंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	सनि
	×				२			

नोट—यह देश की तरह गाया जायेगा। इसमें सं प ध म ग रे की तान कभी कभी आती है।

ठुमरी खमाच—त्रिताल

स्थायी—कान्हाँ मुरलीवाले नन्द के लाल बँसिया बजाये मन हर लिये जाय।

अन्तरा—फिर बजा जा मोहन मुरली सनदे पिया की अरज ले मान।

स्थायी

धनि सांरें सां नि	ध प म ग	सा ग म प	– ग म प
काऽ ऽऽ ना मु	र ली वा ऽ	ले न न्द के	ऽ ला ऽ ल
×	२	०	३
म नि ध नि	ध नि प ध	नि सां नि सां	– नि ध पध
ब सि या ब	जा ये म न	ह र लि ये	ऽ जा ऽ यऽ
×	२	०	३

अन्तरा

म नि ध नि	सां – सां –	नि – सां सां	सां सां नि ध
फि र ऽ ब	जा ऽ जा ऽ	मो ऽ ह न	मु र ली ऽ
×	२	०	३

सां गं रें मं	गं रें सां –	नि नि सां सां	(सां) नि ध पध
स न दे पि	या ऽ की ऽ	अ र ज ले	ऽ मा ऽ नुऽ
×	२	०	३

तानें

(१)	निस गम पध निसं	निध पम गरे स–
	०	३
(२)	निस गम पध निसं	–नि धप मग रेस
	×	२
	गम पध निसं रेंसं	निध पम गरे स–
	०	३
(३)		निस गम सग मप
		३

गम	पध	मप	धनि	पध	निसं	धनि	संगं
×				२			

मंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	स–	निस	गम
०				३			

(४)

निस	गम	पनि	संप	धप	निध	पम	ग–
×				२			

गम	पनि	संरें	गंरें	संनि	धप	मग	मप
०				३			

(५)

रेंसं	गंरें	संनि	धप	निध	संनि	धप	मग
०				३			

पम	धप	मग	रेस	निस	गम	पध	निसं
×				२			

गंमं	गंरें	संनि	धप	मग	रेस	निस	गम
०				३			

नोट—इसके लिये किताब के किसी खमाज के गाने का नोट देख लीजिये।

ठुमरी राग—काफ़ी तीन ताल

स्थायी—कैसो कैसो मोसे रहो न जाये साँवरिया से प्रीत
कर पछतानी कैसी करूँ कैसी करूँ मोरि सजनी
वाकी सुरत सुहानी।

अन्तरा—देखे बिन कल नहीं ढूँढ़े बिन चैन नहीं छिप रहे
बनवारी मोरि सखि मोरि सखि देहो बताये तोरा
भरूँ पनिया, कैसो।

स्थायी

														सा	नि
														कै	सो
स	रे	रे	ग	–	म	प	म	प	–	प	म	प	ध	नि	सां
कै	सो	मो	से	–	र	हो	न	जा	ऽ	ये	साँ	व	रि	या	से
०				३				×				२			

नि ध प म	ग ग रे रे	रे नि ध नि	प ध म प
प्री त क र	प छ ता नी	कै सी क रूँ	कै सी क रूँ
०	३	×	२

म ग म प	म – सा नि	सा ग रे म	ग रे सा नि
मो रि स ज	नी ऽ वा की	सू र त सु	हा नी कै सो
०	३	×	२

अन्तरा

म म प प	नि नि नि नि	सां सां रें नि	सां सां सां सां
दे खे बि न	क ल न हीं	ढूँ ढे बि न	चै न न हीं
०	३	×	२

सां रें सां नि	ध प म ग	म ग म प	म ग रे सा
छि प र हे	ब न वा री	मो रि स खि	मो रि स खि
०	३	×	२

ग म ग प	म - नि सा	ग रे - म	ग रे सा नि
दे ऽ हो ब	ता ये तो रा	भ रूँ ऽ प	नि या, कै सो
०	३	×	२

तानें

(१)

		सनि
	पध निसं रेंसं निध	पम गरे सनि कैसो
	×	२

(२)

	निध पम गम पध	निध पम गम पध
	०	३

		सनि
	संरें गंरें सांनि धप	पध पम गरे कैसो
	०	२

(३)

रेस	गरे	मग	पम	धप	निध	संनि	रेंसं
०				३			

							सनि
धनि	संरें	गंरें	संनि	धप	मग	रेस	कैसो
×				२			

(४)

संनि	धप	धनि	सं-	संनि	धप	धनि	सं-
०				३			

							सनि
संरें	-सं	निध	प-	मप	धप	मग	कैसो
×				२			

(५)

सरे	ग-	रेग	म-	गम	प-	मप	ध-
×				२			

पध	नि-	धनि	सं-	निसं	रें-	संरें	गं-
०				३			

						स	नि
रेंसं	निध	पम	पध	निध	पम	कैं	सो
×				२			

नोट—इस किताब के किसी काफ़ी के गाने का नोट इसको गाने के वास्ते पढ़ लीजिये। इसके आधार पर बहुत सी चीज़ें बनाई गईं हैं।

ठुमरी खमाच एक ताल

स्थायी—काहे रोकत डगर प्यारे नन्दलाल मेरे।

अन्तरा—नितही करत झगड़ा मोसे पनघट नहीं जाने देत देखत सब नारी मोरि बहियाँ क्यों गहे रे।

दूसरा अन्तरा—विनती करत नहीं वह मानत सुनत नाहीं मोरि छीन लियो है गले को हार माँगत नाहीं देरे।

तीसरा अन्तरा—बिन्दा देखो ढीठ लंगर परबस मोरि लाज लेत दूँगी दोहाई अबहीं जाय नन्दजी के डेरे।

स्थायी

प	ध	प	सं	नि	ध	प	ध	प	म	ग	म
का	ऽ	हे	रो	क	त	ड	ग	र	प्या	ऽ	रे
×		०		२		०		३		४	

ग —	रे स	— स	ग —	ग म	ग म
नं ऽ	द ला	ऽ ल	मे ऽ	रे ऽ	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

अंतरा

म म	म म	म म	प प	प प	— प
नि त	ही क	र त	भ ग	ड़ा मो	ऽ से
×	०	२	०	३	४

ध ध	ध ध	ध ध	धनि संनि	ध प	— प
प न	घ ट	ना हीं	जाऽ ऽऽ	ने दे	ऽ त
×	०	२	०	३	४

नि —	नि –	नि नि	सं –	सं सं	– सं
दे ऽ	ख त	स ब	ना ऽ	रि मो	ऽ रि
×	०	२	०	३	४

नि नि	नि सं	– सं	(सं) –	निध नि	ध नि
ब हि	याँ क्यों	ऽ ग	हे ऽ	रेऽ ऽ	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

दूसरा अन्तरा

म म	म म	म म	प प	प– प	प प
बि न	ती क	र त	ना हीं	वह मा	न त
×	०	२	०	३	४

ध ध	ध ध	– ध	धनि संनि	ध प	– प
सु न	त ना	ऽ हीं	मेऽ ऽऽ	ऽ रि	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

नि नि	नि नि	नि नि	सं सं	सं सं	– सं
छि न	लि यो	ऽ है	ग ले	को हा	ऽ र
×	०	२	०	३	४

नि नि	नि सं	सं सं	(सं)–	निध नि	ध नि
माँ ऽ	ग त	ना हीं	दे ऽ	ऽऽ रे	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

तीसरा अन्तरा

म म	म म	म म	प –	प प	प प
बिं ऽ	दा दे	ऽ खो	ली ऽ	ट लं	ग र
×	०	२	०	३	४

ध ध	ध ध	ध ध	धनि संनि	ध प	– प
प र	ब स	मो रि	लाऽ ऽऽ	ज ले	ऽ त
×	०	२	०	३	४

नि नि	नि नि	नि नि	सं सं	सं सं	– सं
दूँ गी	दो हा	ऽ ई	अ ब	हीं जा	ऽ य
×	०	२	०	३	४

नि नि	नि सं	– सं	(सं) –	निध नि	ध नि
नं ऽ	द् जी	ऽ के	डे ऽ	ऽऽ रे	ऽ ऽ
×	०	२	०	३	४

तानें

(१)

निस गम	पध मप	धप निध	पम गम	मग रेस	निस गम
×	०	२	०	३	४

(२)

निस गम	पध निसं	रेंसं निध	पम गरे	सनि धप	निस गम
×	०	२	०	३	४

(३)

निस गम	पध निसं	सग मप	धनि संरें	संनि धप	मग रेस
×	०	२	०	३	४

(४)

निस गम	पध पम	मप धनि	संगं रेंसं	रेंसं निध	पम गम
×	०	२	०	३	४

(५)

नि़स गम	पध निसं	गंमं पंमं	गंरें संनि	धप मग	रेस गम
×	०	२	०	३	४

नोट—आरोही नि़ स ग म प ध नि सं, अवरोही—सं नि ध प म ग रे सा समाज राग में थोड़ा थोड़ा उतरी गन्धार लगाने का भी रेवाज है और ध सं की तान आरोही में अच्छी मालूम होती है गो कि इससे कुछ कुछ पहाड़ी झिझोंटी की शकल दिखाई देती है। नि ध म ग इसमें बड़ा मज़ा देता है। ग से लेकर गं तक घुमने से भैरवी का भाव धैवत पर ज़ोर देकर पैदा करना चाहिये। स लगाने से यह राग फिर अपनी असली सुरत पर आ जाता है। यह गाना दादरे में अच्छी तरह गाया जा सकता है।

दादरा भैरवी

स्थायी—गुल लालों में राधा पियारी बसें जाही जुही में कन्हैया बसें।

अन्तरा—बेलां में बेला बासा में बासा गुलें नरगिस में राधा पियारी बसें जाही जुही में कन्हैया बसें।

स्थायी

ध़	—	नि़	सा	—	सा	-	सा	-	सा	—	सा
गु	ऽ	ल	ला	ऽ	लों	ऽ	में	ऽ	रा	ऽ	धा
०			×			०			×		

रे	नि	–	सा	—	सा	–	सा	रे	ग	–	–
ऽ	पि	ऽ	या	ऽ	री	ऽ	ब	ऽ	सें	ऽ	ऽ
०			×			०			×		

–	–	–	रे	सा	सा	सा	सा	–	रे	सा	सा
ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ही	ऽ	जु	ऽ	ही	ऽ	में.
०			×			०			×		

–	सा	रे	ग	रे	ग	रे	सा	सा	सा	–	–
ऽ	कं	ऽ	है	ऽ	ऽ	या	ऽ	ब	सें	ऽ	ऽ.
०			×			०			×		

ध	—	नि
गु	ऽ	ल
०		

अंतरा

			सा	रे	ग	-	ग	—	म	—	—
			बे	ऽ	लों	ऽ	में	ऽ	बे	ऽ	ऽ
			×			०			×		
म	—	—	ग	—	म	प	म	—	ग	म	म
ला	ऽ	ऽ	बा	ऽ	सा	ऽ	में	ऽ	बा	ऽ	ऽ
०			×			०			×		
रेसा	प	प	प	प	प	प	प	प	प	म	प
साऽ	गु	ल	न	र	गि	स	में	ऽ	रा	ऽ	ऽ
०			×			०			×		
म	म	ग	रे	सा	-	स	-	रे	ग	—	—
धा	ऽ	पि	या	ऽ	ऽ	री	ऽ	ब	सें	ऽ	ऽ
०			×			०			×		

	—	—	रे	सा	सा	—	सा	—	रे	सा	सा
ऽ	ऽ	ऽ	जा	ऽ	ही	ऽ	जु	ऽ	ही	ऽ	में
०			×			०			×		

—	सा	रे	ग	रे	ग	रे	सा	सा	सा	—	—
ऽ	कं	ऽ	न्हे	ऽ	ऽ	या	ऽ	ब	सं	ऽ	ऽ
०			×			०			×		

ध	—	नि
गु	ऽ	ल
०		

तानें

(१)

ऽ	ध	नि	म	प	म	ग	म	ग	रे	ग	रे
स	गु	ल									
०			×			०			×		

(२)

स	ध	नि	म	प	ध	नि	ध	प	म	ग	रे
ऽ	गु	ल									
०			×			०			×		

(३)

——	ध	नि	निस	रेग	मप	धनि	संरें	संनि	धप	मग	रेस
ऽऽ	गु	ल									
०			×			०			×		

(४)

						सं–	संनि	धप	नि–	निध	पम
ध–	धप	मग	प–	पम	गरे	म–	मग	रेस	गम	पध	पम
गरे	स–	गुल									
०			×			०			×		

(५)

						सं–	संनि	धप	नि–	निध	पम
ध–	धप	मग	प–	पम	गरे	म–	मग	रेस	गम	पध	पम
										ध	नि
गरे	स–	——	सग	मप	धनि	संरें	संनि	धप	मग	रेस	गुल

नोट – यह दादरा ज्यादातर छोटे बच्चों के गाने के वास्ते भैरवी में है।

ख़याल राग विहाग—त्रिताल

स्थायी—लट उलझी सुलझाये जा रे बालम हाथन मोरे मेंहेदी लगी है।

अन्तरा—माथे की बिंदिया बिसर गईं रे अपना हाथ लगा जा रे बालम।

स्थायी

नि़ सा ग म	प मप नि धनि	सां नि प मग	म ग – सा–
ल ट उ ल	झी ऽऽ सु लऽ	झा ये जा ऽऽ	रे बा ऽ लम
०	३	×	२
ग म प नि	प म गम ग	ग म प म	ग – सा –
हा ऽ थ न	मो ऽ ऽऽ रे	में हे दी ल	गी ऽ है ऽ
३	३	×	२

अन्तरा

प मप नि नि	सां सां सां –	नि प नि सां	नि – प –
मा ऽऽ थे की	बिं दि या ऽ	बि स र ग	ईं ऽ रे ऽ
०	३	×	२

नि़ स ग म	प मप नि धनि	सां नि प मग	म ग – सा–
अ प ना ऽ	हा ऽऽ थ लऽ	गा ऽ जा ऽऽ	रे बा ऽ लम
०	×	×	२

तानें

(१)	नि़सा गम पनि सांनि	धप मग मग रेस
	×	२

(२)	पम पम गम ग–	गम पम गम ग–
	०	३
	गम पनि संगं रेंसं	निध पम गरे सऽ
	×	२

(३)

नि़	स	ग	म	प	मप		
ल	ट	उ	ल	भी	--	नि़म	गम
०				३			
ग-	स-	नि़म	गम	पम	गम	ग-	स-
×				२			
नि़स	गम	पनि	धप	मग	मग	-स	नि़स
०				३			
गम	पनि	सं़गं	रेंसं	निध	पम	गम	ग-
×				२			
स-	नि़स	गम	पनि	सं़गं	मंगं	रेंसं	निध
०				३			
				म	ग	-	स-
पम	गरे	स-	नि़स	रे	बा	ऽ	लम
×				२			

(४)

				म	ग		
				रे	बा	गरे	सस
पप	मग	निध	पप	मग	रेस	निस	गम
०				३			
पनि	संरें	संनि	धप	मग	रेस	निस	गम
×				२			

(५)

				गम	पनि	संगं	रेंसं
निध	पम	गरे	स-	गम	पनि	संगं	मंगं
रेंसं	निध	पम	गरे	स-	गम	पनि	संगं
०				०			

मंपं	पंमं	गंरें	संनि	धप	मग	रेस	नि़स
×				२			

नोट—आरोही नि़स ग म प नि सं, अवरोही संनि ध प म ग म ग, रे स। ग म नि प म ग म ग स की तान विहाग में बड़ा मज़ा देती है। दूसरी तान जो रेवाज में है वह यह है—

निधप धपम पमग म–ग। ग वादी है और नि समवादी है।

गाने का वक़्त ६।१२ बजे रात के अन्दर-अन्दर है।

दादरा—ज़िला देश

स्थायी—निपट निडर नटवर वारो डगर डगर घेरे खटपट
नित करत रहत सांझ हो सवेरे।

अन्तरा—नंद को लाल ब्रिज को छयल पाछे पड़ो मेरे रस के
दिनन को ताकत रहुं मन में तेरे।

स्थायी

प	ध	प	सं	नि	ध	प	ध	प	म	ग	म
नि	प	ट	नि	ड	र	न	ट	व	र	वा	रो
×			०			×			०		

रे	ग	रे	सं	नि़	स	रे	ग	रे	म	ग	म
ढ	ग	र	ड	ग	र	घे	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

रे	रे	रे	म	म	म	प	प	प	प	प	प
ख	ट	प	ट	नि	त	क	र	त	र	ह	त
×			०			×			०		

नी	—	नी	सं	—	सं	(सं)	–	–	नी	ध	नी
सां	ऽ	झ	हो	ऽ	स	वे	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

अन्तरा

रे	रे	रे	म	—	म	प	प	प	प	प	प
नं	द	को	ला	ऽ	ल	ब्रि	ज	को	छ	य	ल
×			०			×			०		

ध	—	ध	ध	ध	—	नी	ध	नी	ध	प	प
पा	ऽ	छे	प	ड़ो	ऽ	मो	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

निनी	नि	नि	नि	नि	नि	सं	—	सं	सं	—	—
रस	के	दि	न	न	को	ता	ऽ	क	त	ऽ	ऽ
×			०			×			×		

नि	नि	—	सं	सं	सं	(सं)	—	—	नि	ध	नि
र	हुँ	ऽ	म	न	में	ते	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

तानें

(१)

निस	रेम	पनी	संरें	संनि	धप
×			०		

(२)

निस रेम पनी	संरें संनि धप	निसं रेंगं रेंसं	निध पम गरे
×	०	×	०

(३)

निस रेम पध	सरे मप नीसं	रेम पनी संरें	गरें संनि धप
×	०	×	०

(४)

		निस	रेनि स- मंगं
रेंसं निध प-	रेम परें संनि	धप मग रेस	निस रेम पध

(५)

			निस रेम पनी
संरें मंगं रेंगं	रेंसं निसं रेंसं	निध पम गरे	सनि सरे मप

नोट—इसमें तमाम बातें देश राग की हैं।

ठुमरी राग खमाज—त्रिताल

स्थायी—नई नार नयो रंग ढंग छल बल से नई, वह देखो आई रंगीली छबीली छब से नई ।

अन्तरा—अननक सननक फिरत कुंजन में चाल निराली आली ललन पिया तोरे जाऊँ वारी ।

स्थायी

			प ध न ई
धनी संरें सं नि	ध प म ग	स ग म प	ग म प ध
नाऽ ऽऽ र न	यो रं ग ढं	ग छ ल ब	ल से, न ई
×	२	०	३

मप नि ध नि	ध नि प ध	नि सं नि सं	नि ध प ध
वह दे खो आ	ई रं गी ली	छ बी ली छ	ब से, न ई
×	२	०	३

अन्तरा

ग म	ध नि सं नि	सं सं प नि
अ न	न क स न	न क फि र
	०	३

नि सं सं सं	नि ध प –	प प प ध	म ग – ग
त कुं ज न	में ऽ चा ऽ	ल नि रा ऽ	ली आ ऽ ली
×	२	०	३

सं गं रें मं	गं रें सं सं	नि नि सं नि	ध नि ध प
ल ल न पि	या ऽ तो रे	जा ऽ ऊँ वा	ऽ री, न ई
×	२	०	३

तानें

(१)	गम पध नीसं रेंसं	निध पम गम, नई
	०	३
(२)	मप धनी सांनि धप	मग रेस निस गम
	×	२
	पध नीसें रेंगं रेंसं	निध पम गम, नई
	०	३

(३)	निस	गम	मग	मप	गम	पध	मप	धनी
	×				२			
	पध	निसं	गंमं	गंरें	संनि	धप	मग,	नई
	०				३			
(४)	धनी	धनी	पध	पनी	धप	मग	मप	नीसं
	०				३			
	रेंगं	रेंसं	रेंमं	निध	पम	गरे	स–	पध
	×				२			
	निसं	रेंगं	रेंसं	निध	पम	गम	पध,	नई
	०				३			
(५)	मंगं	रेंसं	निसं	गंरें	संनि	धप	मग	रेस
	×				२			

निसं	गम	पध	नीसं	नीध	पम	गम,	नई
०				३			

नोट—इसकी आरोही—नि स ग म प ध नी सं, और अवरोही सां नि ध प म ग रे स है। वादी गंधार, और समवादी निषाद है। पकड़ नी ध, म ग है। भैरवी तथा संधि प्रकाश रागों के वक्त को छोड़कर इसे हर वक्त गा सकते हैं। इसमें कभी कभी अवरोही में कोमल गंधार देने का भी रिवाज है।

दादरा—खमाच

स्थायी—लगावें मछली सैयाँ नदिया किनारे।

अन्तरा—जादू की कटिया प्रेम रस चारा रेशम की डोरि
डगन पतली।

स्थायी

											स ल
ग	—	ग	म	प	ध	पध	नि	सं	नि	ध	—
गा	ऽ	वें	म	छ	ऽ	लीऽ	ऽ	ऽ	सै	याँ	ऽ
×			०			×			०		

ग	ग	म	प	—	ध	ग	—	म	ग	—	स
न	दि	ऽ	या	ऽ	कि	ना	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ल
×			०			×			०		

अन्तरा

म	ग	म	नि॒	ध	नि	सं	सं	—	सं	—	—
जा	ऽ	ऽ	दू	ऽ	की	क	टि	ऽ	या	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

—	—	नि	नि	सं	सं	(सं)	–	–	नि॒	ध	—
ऽ	ऽ	प्रे	म	र	स	चा	ऽ	रा	र	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

—	—	नि	नि	नि	नि	सं	—	—	सं	—	म
ऽ	ऽ	रे	श	म	की	डो	ऽ	ऽ	रि	ऽ	ह
×			०			×			०		

ग	ग	म	प	प	ध	पध	नि	सं	नि	ध	—
ग	न	ऽ	प	त	ऽ	लीऽ	ऽ	ऽ	सै	याँ	ऽ
×			०			×			०		

ग	ग	म	प	—	ध	ग	—	म	ग	—	स
न	दि	ऽ	या	ऽ	कि	ना	ऽ	ऽ	रे	ऽ	ल
×			०			×			०		

तानें

(१)

											स
ग	म	प	ध	नि	सं	नि	ध	प	म	ग,	ल
×			०			×			०		

(२)

											स
गम	पध	निसं	निध	पम	गम	पध	निसं	रेंसं	निध	पम	ग,ल
×			०			×			०		

(३)

											स
गम	पध	निसं	पनि	धप	मग	गंमं	गंरें	संनि	धप	मग	रे,ल
×			०			×			०		

(४)

			सं
गम गम पम	पध पध निध	निसं निसं रेंसं	निध पम ग,ल
×	०	×	०

(५)

निस गम पध	पम गम पध	गम पध निसं	रेंसं निध पम
			स
गम पध निसं	गंमं गंरें सनि	धप मग रेस	निध पम ग,ल
×	०	×	०

नोट—इसके लिये इस किताब के किसी खमाच राग के गाने का नोट देख लीजिये।

लावनी—ताल त्रिताल

स्थायी—लाहे लागी हो रामा, सैंया भेले जोगिया हो।

अन्तरा—सोवत रहिली सैंया संग सिजया, सिजिया से सैंया गैले चोरिया।

स्थायी

स प़ स स	सस रेग स स	रेग सरे ग म	ग ग स नि़
ला हे ला गी	होऽ ऽऽ रा मा	सैंऽ याऽ भेले	जो गि या हो
२	०	३	×

अन्तरा

– स रे ग–	मग प प –	– मप म मप	म प म ग
ऽ सो ऽ वत	रऽ हि ली ऽ	ऽ सैंऽ या संग	से जि या ऽ
०	३	×	२

– गग –म –म	ग रे –ग गम	गरे ग स नि़	स प़ स स
ऽ सेजि –यों –से	सैं या ऽऽ गैले	चोऽ रि या हो	ला हे ला गी
०	३	×	२

सरे गम ग मनि़	रेग सरे ग म
होऽ ऽऽ रा माऽ	सैंऽ याऽ भै ले
०	३

तानें

(१)	मप मप गम गम	रेग रेम गरे सनि़
	२	०

	सैं	या	भै	ले				
	३							
(२)	गम	पध	नीसं	नीध	पम	गम	गरे	सनि
	२				०			
	सैं	या	भै	ले				
	३							
(३)	गम	पध	नीप	–म	गरे	गम	पध	नीसं
	०				३			
	निध	नीप	–म	गरे	मप	धनी	संरें	संनि
	×				२			
	धप	मम	गरे	सनि	सैं	या	भै	ले
	०				३			
(४)	पध	निसं	धनि	पध	पनि	धप	मग	रे–
	२				×			

पध	निसं	रेंगं	मंगं	रेंसां	निध	पम	गरे
३				×			

मप	धनि	संरें	गंरे	संनि	धप	मम	ग–
२				०			

(५)

गम	पध	मप	गम	पध	मप	धम	प–
२				०			

गम	पध	रेंसं	निसं	निध	प–	धम	प–
३				×			

गम	पध	निसं	रेसं	निध	पम	मग	रेस
२				०			

नोट—इसकी आरोही स रे ग म प ध नी सं और अवरोही सं नि ध प म ग रे स है। पकड़ गरे गम, गग, स, नि़ है। गाने का वक़्त संधि प्रकाश रागों और भैरवी के अलावा हर वक्त गा सकते हैं।

ठुमरी खमाज—ताल त्रिताल

स्थायी—मनहर ले गई मोरा एक चंचल चपल चतुर नार छल बल कर आई हम सन नैनवा मिलाय मोरा मन हर ले गई।

अन्तरा—झूठी बतियाँ करत सुल्ताने पिया से छीन लियो छिन में मन मोरा दुःख का से कहूँ सुन एरी दई।

स्थायी

— ग म रे	ग स रे ग	प — — -	प (प) म ग
ऽ म न ह	र ऽ ले ग	ई ऽ ऽ ऽ	रे ऽ मो रा
०	३	×	२
- ग म रे	ग स रे ग	नी नी सं सं	नीध पध प प
ऽ म न ह	र ऽ ले ग	ए क चं च	लऽ चऽ प ल
०	३	×	२
ध नि ध नि	संनि धनि प-प	ग म प प	प प ध रें
ए क च तु	रेऽ ऽऽ ना ऽरे	छ ल ब ल	क र ऽ आ
०	३	×	२

सं नि ध प	प ध म ग	ध ध ध ध	ध नी म प
ई ऽ ऽ ऽ	ह म स न	नै न वा मि	ला ये मो रा
०	३	×	२

अन्तरा

नी नी नी नी	सं नी ध प	म म प ध	ग म ग –
झू ठी ब ति	यां क र त	सु ल्ता ने पि	या ऽ से ऽ
०	३	×	२

स ग ग ग	मग म प ध	नीध नी ध प	म ग नी सं
ऽ छी न लि	योऽ ऽ छि न	मेंऽ ऽ मि न	मो रा दु ख
०	३	×	२

नी ध प म	ग – ग म	प ध नी सं	नी ध म प
का ऽ से क	हूँ ऽ सु न	ए ऽ री द	ई ऽ, मो रा
०	३	×	२

तानें

(१)

मग	रेम	मरे	गम	पध	पम	गरे	सनि
×				२			
धप,	म	न	ह	रा	ऽ	ले	ग
०				३			

(२)

मग	रेस	सरे	गम	पध	पम	गरे	सरे
गम	पध	नीसं	रेंगं	गंरें	संनि	धप	मग
×				२			
रेस,	म	न	ह	रा	ऽ	ले	ग
०				३			

(३)

पम	गरे	मग	प—	पम	गरे	मम	प—
पम	गरे	गप	पध	पनी	धप	मग	रेस
×				२			

	रेग	म	न	ह	रा	ऽ	ले	ग
	०				३			
(४)	सनि़	रेस	गरे	मग	पम	धप	नीध	संनि
	रेसं	गंरें	संनि	धप	मग	रेस	नि़स	रेग
	×				२			
	मग	म	न	ह	रा	ऽ	ले	ग
	०				३			
(५)					—	मग	रेस	निध
	पम	गरे	सनी़	सरे	गम	पध	नीसं	रेंगं
	मंगं	रेंसं	नीध	पम	गरे	सरे	गम	गरे
	×				२			
	सरे	म	न	ह	रा	ऽ	ले	ग
	०				३			

नोट—आरोही सरे गम पध नीसं अवरोही संनि ध प म ग रेस। म वादी स समवादी। इसमें मप ध नी धप म की तान भी आती है अक्सर लोग इसे मध्यम को स मान कर गाते है। उसमें खमाज काफी और मांड़ का रंग दिखाई देता है।

दादरा—राग गारा

स्थायी—नेना कटारी जिया में मारी कैसे के आवे चैन बिहारी।
अन्तरा—भौंवें कमान पलकें वान नैनन से मारे तान तान
कैसी करूँ कैसी करूँ मैं हारी।

स्थायी

ध	ध	ध	निध	निध	प–	म	प	सांनि	निनि	धम	गम
ने	ना	क	टाऽ	ऽऽ	रीऽ	जि	या	मेंऽ	माऽ	ऽऽ	रीऽ
×			०			×			०		

सा	ग	ग	गम	प	म	प	प	प	प	ग	म
कै	से	के	आऽ	ऽ	वे	चै	न	बि	हा	ऽ	री
×			०			×			०		

अन्तरा

प	प	प	नि	नि	नि	सां	सां	सां	सां	सां	सां
भो	वें	क	मा	ऽ	न	प	ल	कें	बा	ऽ	न
×			०			×			०		
नि	नि	नि	सां	सां	सां	निसां	रें	सां	नि	ध	प
नै	नन	से	मा	ऽ	रे	ताऽ	ऽ	न	ता	ऽ	न
×			०			×			०		
प	रें	सां	रें	नि	सां	ध	नि	ध	धप	मग	म-
कै	सी	क	रूँ	कैं	सी	क	रूँ	मैं	हाऽ	ऽऽ	रीऽ
×			०			×			०		

तानें

(१)

नि	-	सां	ध	-	नि
म	-	प	ग	-	म
×			०		

(२)	पध	पनि	धप	मग	मप	धनि
	सांरें	गंरें	सांनि	धप	मग	गम
	×			०		
(३)	पध	निसां	रेंगं	मंगं	रेंसां	निध
	निसां	रेंगं	रेंसां	निध	पम	गम
	×			०		
(४)	मंगं	रेंसां	निसां	गंरें	सांनि	धप
	रेंसां	निधा	पम	सांनि	धप	मग
	×			०		
(५)	गम	पध	निसां	रेंगं	मंपं	धंपं
	मंमं	गंगं	रेंसां	निनि	धप	मम
	×			०		

नोट—देखिये ग़ारे का बयान इस किताब के ग़ारे के बाबत किसी नोट में यह गाना भी पंचम के भाव से बँधा है।

ठुमरी खमाच—त्रिताल (मध्यलय)

स्थायी—नाहीं आवे रे चैन बिन देखे श्यामसुंदर की साँवरी सुरतिया जिया जाये रे ।

अन्तरा—नागन सी अलखें मोरा जिया डस गईं कारे करूँ कछू न सुहाये रे ।

स्थायी

			ग ना
म पध नीसं नी	सां ऽ नीसं सं	नीध पध ध सं	नीध पम गऽ ग
हीं आऽ ऽऽ वे	रे ऽ ऽऽ चै	ऽऽ नऽ बि न	देऽ ऽऽ खेऽ न
३	×	२	०

ग – ग म	ग रे स —	म ग म प	ग म ग ग
श्या ऽ म सुं	द र की ऽ	साँ व री सु	र ति या जि
३	×	२	०

म पध नीसं नी
या जाऽ ऽऽ वे
३

अन्तरा

		ग म नी ध	सं नी सां ऽ
		ना ग न सी	अ ल खं ऽ
		२	०

नी नी सां सं	नि सं नी ध	ग म प ध	ग म ग ग
मो रा जि या	ड स ग ई	का ऽ रे क	रूँ क छु ना
३	×	२	०

म पध नीसं नी	सां – नीसं सीं	नी मनी ध मं	नीध पम ग– ग
सो हृऽ ऽऽ वे	रे ऽ ऽऽ चे	ऽ नऽ बि न	देऽ ऽऽ खेऽ न
३	×	२	०

प पध नीसं नी
हीं आऽ ऽऽ वे
३

तानें

(१)	नि़स	गम	पध	नीसं	संनी	धप	मग	ऽचै	
	३				×				
(२)					गम	पध	ग-	गम	
					×				
	गम	परें	नीध	पम	गम	पगं	मंगं	रेंसं	
	२				०				
					सं	ऽ	नीसं	सं	
	रेंनी	धप	मग	रेस	रे	ऽ	ऽऽ	चै	
	३				×				
(३)					नी-	धप	गम	ग-	
					×				

गम	पध	नीसं	पनी	गम	पध	गम	ग-
२				०			

							सं
गंमं	गंरें	संनी	संरें	नी-	ध-	मग	चै
३				०			

(४)

				गम	ग-	मप	म-
				×			

पध	प	धनी	ध-	धनी	ध-	पध	प-
२				०			

							सं
मप	म-	गम	ग-	संनी	धप	मग	चै
३				×			

(५)		— नीस गम पध
		०

	सं
नीसं गंमं गंरें संनी	धप मग रेस चै
३	×

नोट—यह ठुमरी खमाच राग की है और इसमें वह तमाम बातें आती हैं, जो कि खमाच राग में होनी चाहिये। ठुमरी बड़े मज़े की है।

ग़ज़ल छायानट—कव्वाली

(१)—साज़ यह किना साज़ क्या जानें
नाज़वाले नियाज़ क्या जानें

(२)—जिनको अपनी ख़बर नहीं अब तक
वह मेरे दिल का राज़ क्या जानें

(३)—कब किसी दर पे जिबहा साई की
शेख़ साहब नमाज़ क्या जानें

(४)—पूछिये मैकशों से लुत्फ़े-शराब
यह मज़ा पाकबाज़ क्या जानें

(५)—शमा रू आप गो हुवे लेकिन
लुत्फ़े-सोज़ो गुदाज़ क्या जानें

स्थायी

स ग ग –	रेग मप मग मम	रे स नि़ स	रे– रे रे ग
सा ज़ य ऽ	किऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ	ना सा ऽ ज़	क्या ऽ ऽ ऽ
०	×	०	×

ग म प प	म म ग ग	स ग ग –	रेग मप मग मम
ऽ ऽ जा ऽ	नें ऽ ऽ ऽ	ना ज़ वा ऽ	लेऽ ऽऽ ऽऽ ऽऽ
०	×	०	×

रे स नि़ स	रे रे रे ग	ग म प –	म म ग ग
नि या ऽ ज़	क्या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ जा ऽ	नें ऽ ऽ ऽ
०	×	०	×

अन्तरा

प– नि नि नि	सं सं ध नि	प प रे रे	रे ग ग म
जिन को अ प	नि ऽ ऽ ऽ	ख़ ब अर न	हीं ऽ ऽ ऽ
०	×	×	×

म म प प	म म ग ग	स ग ग —	रेग मप मग मम
ऽ ऽ अ ब	ता ऽ ऽ क	वो मे रे ऽ	दिऽ ऽऽ ऽऽ ऽल
०	×	०	×

रें स नि़ स	रे – – ग	ग म प प	म म ग ग
का र ऽ ज़	क्या ऽ ऽ ऽ	ऽ ऽ ऽ ऽ	में ऽ ऽ ऽ
०	×	०	×

तानें

(१)	सरे नि़स ध़नि़ प़-	रेग मप मग मरे
	०	×

(२)

रेग	मप	धनि	संरें	सं	ध–	नि–	प–
रेग	मप	मग	मरे	रेग	मरे	मरे	स–
०				×			

(३)

गम	नि–	ध–	प–	रे	ग–	म–	प–
मग	मरे	गम	प–	मग	मरे	सरे	स–
रें–	ध–	रेग	मप	गग	मरे	सरे	स–
०				×			

(४)

रेग	मप	धनि	संरें	गंमं	रेंसं	धनि	प–
रें–	ध–	नि–	प–	रेग	मप	गम	रेस
०				×			

(५)

रेग	मप	गम	पसं	रेंगं	मंरें	संरें	सं–
संरें	ध–	धनि	प–	रेग	मप	गम	रेस
रें–	––	ध–	––	रे–	––	स–	––
संनि	धप	मग	रेस	रेग	मप	रे–	स–
०							

नोट—छाया राग की आरोही स, रेग मप, नीध सं। अवरोही सं ध नीप, रेग मप मग म रे स। इसमें प से रे की मींड़ भली मालूम होती है। मप ध मम की तान भी आती है। पुरानी चीज़ों में रे ग रे म ग रे भी कभी कभी आता है इसमें सरे, रेग, गम, मप की तान बड़ी अच्छी मालूम होती है। और गम नी धप की तान बहुत आती तथा अच्छी भी लगती है। रे वादी और प समवादी है गाने का वक़्त आम तौर पर यमन के बाद है।

ग़ज़ल खमाच दादरा

(१)—असीरे पंजये अह्दे शबाब करके मुझे
कहाँ गया मेरा बचपन ख़राब करके मुझे
(२)—वह पास आने न पाये कि आई मौत की नींद
नसीब सो गये मसरूफ़े ख़ाब करके मुझे
(३)—किसी के अह्दे-जवानी ने ज़िंदगी भर को
ख़ुदा से माँग लिया इन्तख़ाब करके मुझे
(४)—मेरे गुनाह ज्यादा हैं या तेरी रहमत
मेरे करीम बता दे हिसाब करके मुझे
(५)—मैं उसकी चश्मे फ़ुसुंगर को क्या कहूँ आलम
ग़ज़ब में डाल दिया ला-जवाब करके मुझे

स्थायी

ग	—	म	प	—	म अ ध	नि	सं	सं	निध	नि	ध
सी	ऽ	रे	पन	ऽ	जा	ग	अट	हे	हुऽ	ऽ	श
०			×			०			×		
प	—	—	प	प	ध	प	म	ग	—	—	स
बा	ऽ	ऽ	अब	कर	के	मु	झे	ऽ	ऽ	ऽ	क
०			×			०			×		
ग	—	म	प	—	ध	नि	सं	सं	निध	नि	ध
हाँ	ऽ	ग	या	ऽ	मे	र	ब	च	पऽ	अन्	खा
०			×			०			×		
प	—	—	प	प	ध	प	म	ग	—	—	स
रा	ऽ	ऽ	अब	कर	के	मु	झे	ऽ	ऽ	ऽ	आ
०			×			०			×		

ग	–	म
सी	ऽ	रे
०		

अन्तरा

					प						
					वह						
नि	–	नि	सं	–	सं	सं	सं	–	निध	नि	ध
पा	ऽ	स	आ	ऽ	ने	न	पा	ऽ	एऽ	ऽ	के
०			×			०			×		

प	म	प	नि	ध	प	ध	प	–	–	प	स
आ	ऽ	ई	मौ	ऽ	त	की	नि	ऽ	ऽ	ईद	न
०			×			०			×		

ग	–	म	प	–	ध	नि	सं	सं	निध	नि	ध
सी	ऽ	ब	सो	ऽ	ग	ए	म	सा	रूऽ	ऽ	फ़
०			×			०			×		

प	–	–	प	प	ध	प	म	ग	–	–	स
खा	ऽ	ऽ	अब	कर	के	मु	झे	ऽ	ऽ	ऽ	अ
०			×			०			×		

ग	–	म
सी	ऽ	रे
०		

तानें

(१)

गम	पध	निसं	निध	पध	निसं	निध	निध	पम	गम	गरे	स अ

(२)

निसं	गंमं	गंरें	संनि	धप	रेंसं	निध	पनि	धप	मग	रेस	स अ

(३)

गम	पध	निसं	निध	पध	निसं	निध	निध	पम	गम	गरे	निसं
गंमं	गंरें	संनि	धप	रेंसं	निध	पनि	धप	मग	रेस	निस	स अ

(४)

म	ग	प	म	ग	ध	प	म	ग	संनि	धप	मग
गम	पध	निसं	गंमं	गंरें	संनि	धप	मग	रेस	मग	रेस	स अ

(५)

निस	गम	पध	निसं	रेंसं	पनि	धप	मग	रेस	निस	गम	पध
निध	निसं	रेंसं	गंसं	मंगं	रेंसं	निध	पम	गरे	सनि	रेस	स अ

नोट—तीसरे शेर का पहला मिसरा ऐसे गाया जायगा जैसे दूसरे शेर का पहला मिसरा और तीसरे शेर का दूसरा मिमरा ऐसा गाया जायगा जैसे कि दूसरे शेर का दूसरा मिसरा और इसी तौर पर पूरी ग़ज़ल गायी जायगी। जो ग़ज़ल जिस राग में हो उस राग की क़वायद की पाबन्दी जरूरी है। और जो कोई ग़ज़ल किसी राग में न हो बल्कि धुन में हो तो उपजत अंग सभाव यानें जैसी चीज़ की बन्दिश वैसी ही उसकी तानें और बढ़न्त इसका ख़याल रहे।

ग़ज़ल—दादरा

(१)—शेरी शो इज्ञतेराव है हुस्ने-बहाना साज़ में
ख़ामोशी वसुकों मगर इश्क़े जुनों नवाज़ में
(२)—आखें झपक झपक गईं पाँव लरज़ लरज़ उठे
रुक न सके मेरे क़दम उनके हरीमे नाज़ में
(३)—उनका भी दिल तड़प उठे उनके भी अश्क बह चले
लाऊँ कहाँ से इतना सोज़ क़िस्सए-जाँ गुदाज़ में
(४)—हुस्न के सामने झुका इश्क़ का सर कुछ इस तरह
फ़र्क़ ही कुछ न रह गया ग़ज़नवी व अयाज़ में
(५)—हसरते दिल है अब यही बेकसे ख़स्ता हाल की
उम्र तमाम उसकी हो इश्क़े शहे-हिजाज़ में

स्थायी

ध	नि	ध	प	ध	प	म	ग	प	ध	—	—
शो	री	शो	इ	इज्ञ	ते	रा	ऽ	व	है	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	नि	ध	प	ध	प	ग	—	प	म	—	—
हुस्	ने	ब	हा	ऽ	ना	सा	ऽ	ज़	में	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	नि	ध	प	ध	प	म	ग	प	ध	—	—
ख़ा	मो	शी	व	ऽ	सु	कों	ऽ	म	ग	ऽ	र
×			०			×			०		

ध	नि	ध	प	ध	प	म	ग	प	म	—	—
इश्	क़े	जु	नो	ऽ	न	वा	ऽ	ज़	में	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

अन्तरा

म	म	म	नि	ध	ध	सं	—	नि	सं	—	—
आ	खें	झ	प	क	झ	प	क	ग	ई	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

नि	नि	नि	नि	सं	सं	सं	सं	नि	ध	—	—
पाँ	वों	ल	र	ज़	ल	र	ज़	उ	ठे	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	नि	ध	प	ध	प	म	ग	प	ध	ऽ	ऽ
रुक	न	स	के	ऽ	मे	रे	ऽ	क़	दम	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

ध	नि	ध	प	ध	प	म	ग	प	म	ऽ	ऽ
उन	के	ही	री	ऽ	मे	ना	ऽ	ज़	में	ऽ	ऽ
×			०			×			०		

तानें

(१)

ध — नि	प — ध	म — प	ग — म
×	०	×	०

(२)

गम पम गम	पध पम गम	पध निसं रेंसं	निध पम गम
×	०	×	०

(३)

गम पध निसं	रेंसं निध पम	गम गंरें रेंसं	निध पम मग
×	०	×	०

(४)

गम पम गम	पध पम गम	पध निसं रेंसं	निध पम गम
गम पध निसं	रेंसं निध पम	गम गंरें रेंसं	निध पम गम
×	०	×	०

(५)

निस गम पध	निसं गंरें संनि	धप मग रेस	निस गम निस
गम पध निसं	गंमं मंगं गंरें	संनि धप मग	रेस निस गम
×	०	×	०

नोट—इस ग़ज़ल को गाने के वास्ते पहले ग़ज़ल का नोट देख लीजिये।

ग़ज़ल डॉक्टर इक़बाल कहरवा

कुशादा दस्ते करम जब वो बेनियाज़ करे
नियाज़मन्द न क्यों आजज़ी पर नाज़ करे
बिठा के अर्श पे रखा है तूने ऐ वाएज़
ख़ुदा वह क्या है जो बन्दों से एहतराज़ करे
कोई यह पूँछे कि वाएज़ का क्या बिगड़ता है
जो बेअमल पे भी रहमत वो बेनियाज़ करे
ग़ुरूर जोहोद ने सिखला दिया है वाएज़ को
कि बन्दगाने ख़ुदा पर ज़बाँ दराज़ करे
हवा हो ऐसी कि हिन्दोस्ताँ से ऐ इक़बाल
उड़ाके मुझको ग़ुबारे रहे हिजाज़ करे

स्थायी

सं सं – सं
कु शा ऽ दा
०

सं नि ध प	ध नि॒ ध –	– – – सं	सं नि॒ ध ध
द ऽ ऽ स्	ते क रम ऽ	ऽ ऽ ऽ जब	वह बे ऽ नि
×	०	×	०

ध नि ध प	प – नि ध	सं – – सं	सं सं – सं
या ऽ ज़ क	रे ए ऽ ऽ	ए ऽ ऽ ऽ	नि या ऽ ज़
×	०	×	०
सं नि ध प	ध नि ध –	– – – सं	सं नि ध ध
मन ऽ ऽ ऽ	द न क्यों ऽ	ऽ ऽ ऽ आ	ज़ ज़ी ऽ पे
×	०	×	०
ध नि ध प	प – नि ध	सं – – सं	सं सं – सं
ना ऽ ज़ क	रे ऽ ए ऽ	ए ऽ ऽ ऽ	कु शा ऽ दा
×	०	×	०

अन्तरा

			म ध – नि
			बि ठा ऽ के
			०
सं – – सं	नि नि सं –	– – – नि	नि नि – नि
अ ऽ ऽ र	श पे र ऽ	ऽ ऽ ऽ खा	है तु ऽ ने
×	०	×	०
सं – – –	सं – सं –	सं सं नि ध	सं सं – सं
ऐ ऽ ऽ ऽ	ऐ ऽ वा ऽ	ए ऽ ऽ ज़	ख़ु दा ऽ वह
×	०	×	०

सं नि ध प	धं नि ध –	– – – सं	सं नि ध ध
क्या ऽ ऽ ऽ	है जो बन् ऽ	ऽ ऽ ऽ दों	से ए ह ति
×	०	×	०
ध नि ध प	प – नि ध	सं – – –	
रा – ज्ञ क	रे ऽ ए ऽ	ए ऽ ऽ ऽ	
×	०	×	०

तानें

(१)		धप मग मप धनि
		०
		सां सं ऽ सं
	धप मग रेस निस	कु शा – दा
	×	०
(२)		पध निसं रेंगं रेंसं
		०
		सं सं ऽ सं
	निध पम गरे सऽ	कु शा – दा
	×	०

(३)

				धप	मग	मप	धनि
				०			
धप	मग	रेस	निस	पध	निसं	रेंगं	रेंसं
×				०			
				सं	सं	ऽ	सं
निध	पम	गरे	स–	कु	शा	–	दा
×				०			

(४)

				संनि	धप	धनि	सं–
				०			
निध	पम	पध	नि–	धप	मग	मप	ध–
×				०			
पम	गरे	गरे	स–	गम	पध	निसं	रेंसं
×				०			

				सं	सं	ऽ	सं
निध	पम	गरे	स-	कु	शा	–	दा
×				०			

(५)

				रेंसं	निध	निसं	रेंगं
				०			

रें-	--	मंगं	रेंसं	रेंसं	निध	पम	प-
×				०			

				सं	सं	ऽ	सं
मरे	मप	गरे	स-	कु	शा	–	दा
×				०			

नोट—इस ग़ज़ल को गाने के वास्ते पहली ग़ज़ल का नोट देख लीजिये ।

गानों का अलाप

अँसुवन के हरवा

रेस धनि स, गस मग स रेस, गम प गम धनि म प, गम धनि सां प म गम धनि सां रें सां गंमं गंसां रें सां, गम धनि सां प म प गम गस रे स, धनि स गम धनि सां गंमं गंसं रें सां, धनि प मप गम प, गम ग प प ग म प, मग स रे स, मध म धनि सां प मधनि सां प मधनि प, गम ग स रे स।

आन बान जिया में

मपध मप मधप मग मग रेस, गमप मपधनी धप, मप धनी सांनि धनी धप, मप धनी सांरें सांनि धनी धप, मप धनी सांरेंगं रेंसां नि धनी धप, मप धनी सांरेंगं मंगंरेंसं निधनी धप, मप धनी सांरें गंमंपं मंगं रेंसं नि धनी धप; मप धप मग, गम ध, नी धनी घप मप गम ध, मप धप मग म ध।

एरी बंगरी मोही

नि़ रे ग रे नि़ रे स, नि़ रेग मप मग रे नि़ रे स, नि़ रे गम धनी धम धप मग रे नि़ रे सा म़ध़ नी़ रे स, नि रे ग नि़ रे गम रे ग, नि रे गम प मध पम ग रे ग, नि़ रे गम धनी धम धप मग रे ग, नि़ रे गम धनो रें सां नि धप धम धप म ग रे स नि़ रे स, गम प, धम प, गम गम धनी धम धम प, नि़रे गम धनी रें सं नि धम प, गम प रे स।

अब के गये कब

प़नी़ सरे ग स रे, गम गरे ग स, रे म प धप धप गरे गम गरे ग स, रेम प नीसंरे निसं, सं प धम गरे गम ग रेग स, प़नी़ स रे म प नोसं रेंगं सं गंमं गं रेंगं सं प ध प सां नि सां सां प ध म ग रे, गम ग रेग स, स रेग सरे म पध म प निसां पध पम ग रे ग स गम गरे ग स, नि़प़ नि़ स रे ग सरे, गम ग स।

अरज सुनो दस्तगीर

नि़ रे ग ग नि़ रे स, नि़ रे नि़ ध़ नी़ म़ ध़ नी़ रे स, ग रे नि़ रे गम धनी धम ग नि़ रे स, नि़ रे गम धनी रें गं रे सं, रें नि

धिनी मधगम ग नि़ रे स, म ध सां, नीध नो म ध सं, नि रें सं

नि रें गं नि रें सं, नि ध म ग नि़ रे स।

ऐसी चंचल चटकीली नार

गरे, मगरे, प मग रे, धप मग रे, नीधप मग रे, सं निध प मग रे, निस, मप गरे गम प, नीध प, सां निध प, रेंसं निधप, गंरे मंगं रेंसं निध प मगरे सनिस, रेंनी धनी पध मप, रेंरें संनि धनी पध मप गरे, मप धप गरे मगरे सनिस, मप नी सं, रेंमं गंरें संनि धप मग रेस निस।

आज मन ले गई

सरे गम, गमप गम गमप धनी धप म गम, गम पध नीसां निध पम गम, मगरे मगरे स नि़स, रेग रेग सरेग म, पम धप नीध प, मग रेगरे नि़स, रेग रे गम गरेस, निसं रेस निध पम गरे स, गम ग रेस निस।

•एरी ए मैं भीजत

मरे मप धप, नीध प, संनि धप, धप मग रेस, सरे मप धप नीध संप सांनि धप मग रेस, मप नीसं, रेंसं गंरें सं, मंगं रेंसं रें मंपं मं गंरेंसं, नीध पम रेम प ध पम गरेस, सनि धप मप नीस, रेम पध मप, नीधप रें निधप, रेम प धप गरेस, रेमरे मपम, रेमप धनी धपम, रेम पध पनी धप सं निध पम, रेम पधनी धप मग रेस।

आई कजरी की बहार

गम पध नीध, गमप धनी सं निध, नीध पध मपनीध प, पम गरेस, निस रेग मपध नीध, नीसां, संरें गंमं गंरें सं, सं निध, गम पध नीधप, निसंरें गंमं गंरें संनिं संरें संनिध, नीध गमप धनी धप, नीध सां निधरें संनिध, गंमं गंरें संनिंध रें संनिध, गम पध, नीधप, सरे गम पध नीसं रेंसं गंरेंसं मंगं रेंसं निधप।

अब कैसे अँगना में

इस गाने के लिये 'आन बान जिया में लागी' की अलाप देखिये ।

आओ गले लग जाओ

धसं निधप, मप धम गरे, नीधप, रेम प धनी धप, नीधप मगरे, सरे निस, निसरे निधप, नीस रेमप नीसां, रेंगं रेंसं निधप मगरे, धसां निधप, नीनींसं नीधप मप नीसां, रेंमं गरें संरें निसं, रेंस निध पम गरे मप, धसं निधप ।

ऐसो जोबन फबन

रेग रेम गरे निस, रेग मप ध ग म, मप नीसंरें सं निध नीध मप ध गम, मगरे स, सनि धप, मप निसं, रेग मप ध ग म, गम पध पम, गम प धनी पम, गम पनी सांरें संनि धप ध ग म, रेग रेस रे नि स, रेग मप ध ग म, सरे गम प धनी सं रेंमं गरें संनि धपम गरे स, ध प म ।

आई सावन की बहार

रेग रे सरे निस, स रे प, मप नी सां, गंगं रेंसं, सरें निसं,

संनि धपम गरे स, रेग सरे प, धप मगरे ग सरे प, निध प म ग रे ग स रेप, सं निध प मग रेग स रे प, ग रे स, रेग स निस, रे प, ।

अत ही सुंदर पालना

रे प मप गम रेग रेस, गम सम, नीधप म संनिध पम, निसंरें संनि धप म, गम रेग रेस, नुस रेम प नी संरें गंमं रेंगं रेंसं, रें निधप, मप गम रेग स, निस रेनि धप, रेरे गरे स, गम म रेग रेस, सं, नि, ध, प, म, गम रेग रेस,

आज मैं लड्ंगी गुड़यां

मप गम रे गम रे स, पधनी धप म गम गरे स, ध म ध नी सं, संरें गंमं गंरें सं, सां निध प मप गप गप म, गम म गम गरे स, धनि स, रे ग म प म, धप म, रे ग म, ग ग रे स निस, सनि सरे गम, ।

अंधेरिया है रात

गम पध नीध, धप नीध पम गम प, पम ग रे स, नि स

रेस म प, धनी धनी सां निध, नीध, प गम पध नीध प, गम पध नीसं निध प गम पध नीसां रेंमं मं रेंसं नि धप, धप मग मध, धप मम मप, पध प नीध प, गम प म गरे स, प।

आया सावन का महीनवा

सरे निस रे रे, गमप मग रे, गम मरे, गरे निसरे, निसरे स, गमप, धनि धप, सां नि धप, निसंरें संनि धप, धप मगरे मग गरे, सरे निस, निस रेग मप धनी संरें गंमं गंरें सनि धप मग रे, गम गरे, सरे निस, सरे निस रे, पम गरे, सरे निस, ।

बिंदिया ले गई मोरि

निस रे; निस निध नी स, ग ग रे गम प गम रेग रे निस निध नीस, निस निध, गमप, धनी सां, निध नीसां, धनी संरें गंमं गंरें सं निध नीसां संनि धप, म ग रे, सनि धनी स, नीध नी स रे ग, रेग रेस निध नीस।

बिन पिया कछु न सुहाय

सरे गम गरे सनि स, प प, धम प धप नीध प, नी सं निध

प संनि संरें गंमं गरें सं नि सं, सं निध प, पध पम गरे सनि स, पमम ग रेस निस, सरे गम प, सरे गम पध नी सं निध प म गरे स नि स।

बहुतेरा समझाया री

नोट—इसकी अलाप भी 'बिन पिया कछु न सुहाय' की तरह होगी।

बनाओ बतियाँ चलो

नोट—इसकी अलाप भी 'बिन पिया कछु न सुहाय' की तरह होगी।

बारी उमर लरिकइयाँ

इसकी अलाप के लिये 'आन बान जिया में लागी' देखिये।

बाजे झनन मोरि पायल

रेस निध् नी रे स, गमप गम रेग रेस निध् नी रे, गम प धनी धप, मप गम रेग रेस निध् नी रे स, मप नी सं रें सं नी धनी रें, गंमं पं गं मं रेंगं रेंसं निध नी रें रे ग रे स।

बाबुल मोरा नइहर छूटो

नोट—इसकी अलाप के लिये 'पिया बिन कछु न सुहाय' की अलाप देखिये।

बालम नइया डगामग

नोट—इसकी अलाप 'आज मैं लड़ूंगी गुइयां' की तरह होगी।

बीत गई भागी रात

रेम रेम मप ध मां, धनी सं निध, धपम मग मग रेस, सनि धनी स, रे मप ध नी सां, सं रें गं सं, सं रें गं गं मं स निसं निध, धप म, मग रेम, रेम रेम पध प मग रे स।

भली बनी श्याम मूरत

सरे गम रेग रे सरे मरे गम, गम पध नीध पम गरे गम, गम पनी सं, रेंगं म रें गं रें सं, रें नी धप, धप धम गर गरे म, स रे गम, नीध पध मप गम रे ग रे स, निधप, नीस रे गम, मग रे रेस रे गम।

पनियां जा भरन गई

मप धप गरे, रेग रेस, रेम प नीध प, मप नीसां रें संनि धप, निसं रें निध प, मंगं रें सं रें निसं, रेंनि धप, मप धम गरे, रेमप निधप, पनी सरे मप नीसां, रेमप नीध प नीसां, रें पंमं गं रें सं, नीध पम गरे मप नी धप।

पिया बिन नाहीं आवत चैन

सरे गस, गरे गम गस, मप धनि धप म गरे गम गस, मप

धसां संरें गंसं, सांनि धप, मग रे सरे गस, गमप, नीध पप गरे सरे गस सनि धप धस, सरे पम मगरे सरे गस, रेम पधसां नीध पम गरे सरे गस।

तुमसे लागे मोरे नैन

नोट—इसकी अलाप 'चिंदिया ले गई मोरी' की तरह होगी।

ठाढ़े रहियो मोरे श्याम

मग रेग, निस रेरे, गप पध पम गरे ग, पधनी धप मग रे रेग रे, गरे ग, सरे गम पध नीसां रें गं मं गंरें सं निध पम गरे ग, रेरे गरे ग, गमप मग रेग, गम गरे निस रेरे गप मग।

चलो मदन मोहन

नोट—इसकी अलाप 'ऐसो जोबन फबन' के गाने की तरह होगी।

डोले रे जोबन मदमाती

रेग रेम गरे निसरे, रेग मप धप सांरें सं धनीप रे, गम पम गम रेस, धनी परे, गम पम गम रेस, निसरे, सध नीप रे, गमप सां रेंगं मंपं मंगं मंरें सं, रें ध रे, गमरे स रे निस सरे, गमरे स।

राज गयल कौने देस

रेम पध धप, मप ध मगरे स, रे मप ध नीध सं निध संरें

गंमं गंरें सां निध, मप धम गरे, रे गम पध, नीसं, संनि संनि

ध, नी धप मग रे गमप ध, मप धनो धप म, मगरे ग रे स ।

श्याम घुंघट पट खोलो

नोट—इसकी अलाप 'बारी उमर लरकइयां' की तरह होगी ।

कान्हा नंद को खिलारी

नोट—इसकी अलाप 'पनिया जो भरन गई' की तरह होगी ।

कान्हा मुरली वाले

मपध मग, निध पमप धम ग, ग मप ध नीसं, गंमं गंरें सं

संनिध मप धम ग, मगरेस, सनि धप, पध नीसं, गंमंगं

नीधनी पध मप, मपध मग ।

कैसे कैसे मो रहो न जाय

इसकी अलाप 'ऐसी चंचल चटकी नार' की तरह होगी ।

गुललालों मे राधा प्यारी बसें

रेस धनी स, सरेग गम गरे स, ध नी स, मपम, पधनी

धपम, मग रेस रेग, धानी सरे ग रेस, पध नीसं निध पम

गरे सनि धनि सरे ग, रे सनिस, म, म म, प म प, गरे सरेग, रेस धनिस, धम धनी सं, रेंग गंरें सं निधप मग रेस निध नीस।

लट उलझी सुलझा जा

गमप म ग स, पम गम गस, गमप नीसं निप, नीधनी पध मप मग, गम प मग स, पनी सं, गंमंपं मंगं सं नि प, धप।
मप म ग मग, निस गम पनी सं गं रें सं निध पम गमग स।

मन हरा ले गई

धनी पध मप धसं, नीध धनी धप मग, मग रेस, ग म प धनी सं, गंमं गंरें सनि सरें सं निध पध मप धसं, संरें गंरें धप, धसं निध प, पध मप धसं, संनि धप मग रेस पध मप ध सं।

नैना कटारी जिय में मारी

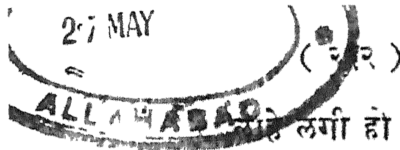
नोट—इसकी अलाप 'आनबान जिया में लोग' की तरह होगी।

निपट निडर नटवर

इसकी अलाप 'कान्ह मुरलीवाले' की तरह होगी।

नई नार नई नयो ढंग

इसकी अलाप 'कान्ह मुरलीवाले' की तरह होगी।



[illegible] लगी हो गमा

म स, म, म, मप धप धनी धप मग, धनी सं, निसं रें सनि ध, धनी सं रें गंमं गंरें सं, सं निध धप धनी धप म म मग रेस म, म, मप ध म म, धप धनी धध म, म, म स म ।

नहीं आये रे

इसकी अलाप 'कान्ह मुरलीवाले' की तरह होगी ।

साज़ये को न माज क्या जाने

गम प गम रे स निस रे, रेग, गम प मग, सं ग म प ध नी प, रे गम प मग, सरे निस रे, ग मप म ग, सरं रें धध नीप रे, गमप म ग, सध नीप स, निस रे, रेग, गमप म गमरे स, निसरे । गम निधप रे, गम प म गम रे निसरे ग ।

कुशादा दस्ते करम

संनि धप धनी ध, सं निध मप धनी धप मग रेस, सं निध धनी सं, रेंगं रेंस निध, सं निध, धनी धप पध नी सं, नीनी, नी नीसं, सं निध नीध सं, सं रेंगं रें सं निधप मग रेस ।

——:o:——